राष्ट्रीय दैनिक

प्रातःकिरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

11 दिल्ली का नॉकआउट शुरू तो सीएसके-हैदराबाद की भी गारंटी नहीं...

राधिका खेड़ा के भाजपा प्रवेश पर बोले भूपेश बघेल, आखिर कितने में 12

वर्ष : 15 | अंक : 29 | नई दिल्ली, गुरुवार, 09 मई, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम

अधिकतम तापमान 31°C

न्यूनतम तापमान 25.0°C

हां	30%
नहीं	50%
कह नहीं सकते	10%

बाजार

सोना	59,340
चांदी	55,350
सेंसेक्स	63,327
निफ्टी	18,816

संक्षिप्त खबरें

उड़ानों को रद्द करने पर एअर इंडिया एक्सप्रेस से रिपोर्ट मांगी

नई दिल्ली। नागर विमानन मंत्रालय ने एयरलाइन में कथित कुप्रबंधन के खिलाफ प्रदर्शन के तौर पर बड़ी संख्या में चालक दल के सदस्यों के बीमार होने के बीच उड़ानों को रद्द करने पर एअर इंडिया एक्सप्रेस से बुधवार को एक रिपोर्ट मांगी है। एअर इंडिया ने बड़ी संख्या में चालक दल के सदस्यों के बीमार होने की सूचना देने के बाद मंगलवार रात से करीब 90 उड़ानों को रद्द कर दिया। एक अधिकारी ने बुधवार को बताया कि मंत्रालय ने उड़ानों को रद्द करने के संबंध में एअर इंडिया एक्सप्रेस से एक रिपोर्ट मांगी है और उनसे मुद्दों को जल्द ही हल करने को कहा है। एयरलाइन को नागर विमानन महानिदेशालय के नियमों के अनुसार यात्रियों को सुविधाएं मुहैया कराने की भी सलाह दी गयी है।

हैदराबाद में बारिश से दीवार गिरी, दबकर सात मजदूरों की मौत

हैदराबाद। ग्रेटर हैदराबाद में भारी बारिश से लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ा। बारिश के कारण दीवार ढह गई, जिसके नीचे दबकर चार साल के बच्चे समेत सात प्रवासी मजदूरों की मौत हो गई। पुलिस ने बताया कि यह घटना मंगलवार रात मेडचल मल्काजगिरी जिले के बाचुपल्ली में रेणुका येलम्मा कॉलोनी में एक निमाणाधीन अपार्टमेंट में हुई। बुधवार सुबह तक चले अभियान में बचावकर्मियों ने मलबे से शव बरामद किए। मृतकों की पहचान तिरुपति राव, शंकर, राजू, राम यादव, गीता, हिमांशु और खुशी के रूप में हुई। मृतक ओडिशा और छत्तीसगढ़ के निर्माण श्रमिक थे। पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम के लिए उस्मानिया अस्पताल भेज दिया और जांच शुरू की।

सरकार अल्पमत में नहीं, कार्यकाल पूरा करेगी : सैनी

चंडीगढ़। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा है कि कांग्रेस जनता की इच्छाओं को पूरा करने की बजाय अपनी इच्छाओं को पूरा करने वाली पार्टी है। तीन निर्दलीय विधायकों का समर्थन लेने के बावजूद कांग्रेस की इच्छा पूरी नहीं होगी। बुधवार को सिरसा से पार्टी प्रत्याशी अशोक तंवर के आवास पर पत्रकारों से बातचीत में मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि कांग्रेस की इच्छा सरकार बनाने की रहती है। पहले भी दो बार विधानसभा में अविश्वास प्रस्ताव लेकर आए और दोनों बार हार का सामना करना पड़ा। एक बार तो कांग्रेस के नेता वोटिंग से ही भाग गए। सैनी ने कहा कि प्रदेश सरकार अल्पमत में नहीं है। सरकार बड़ी मजबूती के साथ काम कर रही है और अपना कार्यकाल पूरा करेगी। लोकसभा के तुरंत बाद प्रदेश में चल रही विकास योजनाओं को गति दी जाएगी।

आग से सुलग रहे उत्तराखंड के जंगल, वायु सेना ने संभाला मोर्चा

देहरादून। उत्तराखंड के जंगल इन दिनों भीषण आग से धधक रहे हैं। स्थिति यह है कि आग बुझाने के लिए वायुसेना का सहारा लिया जा रहा है। ऐसे में अब ऑपरेशन अग्निपथ वनाग्नि को नियंत्रित करेगा। बुधवार को पौड़ी के आसपास जंगलों में लगी आग को बुझाने के लिए भारतीय वायुसेना के एमआई-17 हेलीकॉप्टरों ने उड़ान भरना शुरू कर दिया है। वायुसेना ने उत्तराखंड नागरिक उड्डयन विकास प्राधिकरण श्रीनगर से पौड़ी के जंगलों में लगी आग बुझाने की जिम्मेदारी ले ली है। दरअसल, भारतीय वायुसेना के एमआई-17 हेलीकॉप्टरों को मंगलवार को ही उड़ान भरना था, लेकिन चारों तरफ फैला धुआं वायुसेना के लिए मुसीबत बन रहा था।

पीएम ने पित्रोदा की त्वचा के रंग वाली टिप्पणी को लेकर राहुल गांधी पर बोला हमला

देशवासी त्वचा के रंग के आधार पर अपमान नहीं करेंगे बर्दाश्त : मोदी

बोलें-देशवासियों का अपमान मेरा देश सहन नहीं करेगा और मोदी तो कतई नहीं

प्रात: किरण

वारंगल/एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बुधवार को कांग्रेस नेता सैम पित्रोदा की भारतीयों की त्वचा के रंग को लेकर की गई कथित नस्लीय टिप्पणी को लेकर विपक्षी पार्टी पर निशाना साधा और जोर देकर कहा कि देशवासी त्वचा के रंग के आधार पर अपमान बर्दाश्त नहीं करेंगे। कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर निशाना साधते हुए मोदी ने कहा कि उन्हें अब यह बात समझ में आई है कि देश की प्रमुख विपक्षी पार्टी ने राष्ट्रपति चुनाव में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को हराने की कोशिश इसलिए की थी क्योंकि उनकी त्वचा का रंग सांवला है।

पित्रोदा के कथित बयान से विवाद बढ़ने के बाद मोदी ने सवाल किया, कोई मुझे बताइए क्या मेरे देश में चमड़ी के रंग के आधार पर लोगों की योग्यता तय होगी? वारंगल में एक चुनावी जनसभा को संबोधित करते हुए मोदी ने पूछा, त्वचा के रंग के इस खेल के लिए शहजादे को किसने इजाजत दी? पित्रोदा की कथित टिप्पणियों के बाद देश की राजनीति में एक नया विवाद पैदा हो गया है। उन्होंने कथित तौर पर कहा था कि भारत के उत्तर पूर्व में लोग चीनियों जैसे दिखते हैं, जबकि दक्षिण के लोग अफ्रीकियों की तरह दिखते हैं। मोदी ने कहा, मैं बहुत गुस्से में हूं आज दोस्तों! मुझे कोई गाली दे, मुझे गुस्सा नहीं आता है।

मैं सहन कर लेता हूं। लेकिन आज शहजादे के फिलॉस्फर ने इतनी बड़ी गाली दी है, जिसने मुझमें गुस्सा भर दिया है। राहुल गांधी की चुनावी रैलियों में संविधान की प्रति का प्रदर्शन करने का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि संविधान सिर पे लेकर नाचने वाले लोग, चमड़ी के रंग के आधार पर देशवासियों का अपमान कर रहे हैं। मोदी ने कहा, शहजादे आपको जवाब देना पड़ेगा। चमड़ी के रंग के आधार पर मेरे देशवासियों का अपमान मेरा देश सहन नहीं करेगा और मोदी तो कतई नहीं करेगा। मोदी ने यह भी कहा कि उन्हें अब पता चला है कि मुर्मू की इतनी प्रतिष्ठा होने के बावजूद कांग्रेस ने राष्ट्रपति चुनाव में उन्हें हराने की कोशिश क्यों की थी। उन्होंने स्पष्ट तौर पर सैम पित्रोदा के संदर्भ में कहा, मुझे आज पता चला कि शहजादे के एक अंकल अमेरिका में रहते हैं। चाचा उनके दार्शनिक और मार्गदर्शक हैं। उन्होंने कहा, शहजादे के दार्शनिक और मार्गदर्शक चाचा ने एक बड़ा राज खोला है। उन्होंने कहा कि जिनकी त्वचा का रंग सांवला है, वे सभी अफ्रीका के हैं। मोदी ने आरोप लगाया कि इसका मतलब है कि उन्होंने (पित्रोदा) त्वचा के रंग के आधार पर देश के कई लोगों का अपमान किया है।

मोदी ने कहा कि त्वचा का रंग कोई भी हो, देशवासी भगवान श्री कृष्ण की पूजा करते हैं, जिनकी त्वचा का रंग भी हम सभी की तरह था।

तीसरे चरण के चुनाव के बाद इंडी गठबंधन का फ्यूज उड़ गया : प्रधानमंत्री मोदी ने विपक्षी गठबंधन इंडिया का मजाक उड़ाते हुए कहा, तीसरे चरण के चुनाव के बाद कांग्रेस और इंडी गठबंधन का तीसरा फ्यूज उड़ गया है। मोदी और भाजपा के कुछ नेता विपक्षी गठबंधन को इंडी गठबंधन कहते हैं। कांग्रेस और भारत राष्ट्र समिति पर निशाना साधते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि भाजपा राष्ट्र प्रथम के सिद्धांत में यकीन करती है जबकि कांग्रेस और बीआरएस के लिए परिवार प्रथम है। इससे पहले, करीमनगर के वेमुलावाड़ा में एक रैली को संबोधित करते हुए मोदी ने आरोप लगाया कि पिछले पांच सालों से सुबह उठते ही अंबानी और अडाणी के नाम की माला जपने वाले कांग्रेस के शहजादे ने उनसे कितना माल उठाया है जो लोकसभा चुनाव घोषित होते ही उन्होंने उन्हें गाली देना बंद कर दिया। उन्होंने पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष राहुल का नाम लिए बगैर दाल में कुछ काला होने की आशंका जताई कि कोई न कोई चोरी का माल टेम्पो भर-भर के आपने पाया है और उन्हें देश को इसका जवाब देना पड़ेगा।

पित्रोदा के विवादित बयान से मचा सियासी घमासान, कांग्रेस ने किया किनारा

नस्लीय टिप्पणी कर विवादों में घिरे सैम पित्रोदा ने दिया इस्तीफा

कांग्रेस अध्यक्ष ने इस्तीफा किया स्वीकार

प्रात: किरण

पटना/एजेंसी। सैम पित्रोदा ने इंडियन ओवरसीज कांग्रेस के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने उनका इस्तीफा मंजूर कर लिया है। । कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने एक्स पर इसकी जानकारी दी है। उन्होंने एक्स पर लिखा, सैम पित्रोदा ने अपनी मर्जी से इंडियन ओवरसीज कांग्रेस के अध्यक्ष पद से इस्तीफा देने का फैसला किया है। कांग्रेस अध्यक्ष ने उनका इस्तीफा स्वीकार कर लिया है। इससे पहले कांग्रेस नेता सैम पित्रोदा ने कुछ ऐसा कह दिया था, जिसे लेकर बुधवार को विवाद खड़ा हो गया। उन्होंने कहा था कि देश के पूर्वी हिस्से के लोग चीनी और दक्षिण भारतीय अफ्रीकी नागरिकों जैसे दिखते हैं। हम 75 साल से बहुत सुखद माहौल में रह रहे हैं, जहां कुछ लड़ाइयों को छोड़ दें तो लोग साथ रह सकते हैं। हम भारत जैसे विविधता से भरे देश को एकजुट रख सकते हैं। जहां पूर्व के लोग चीनी जैसे लगते हैं, पश्चिम के लोग अरब जैसे दिखते हैं, उत्तर के लोग गोरों और दक्षिण भारतीय अफ्रीकी जैसे लगते हैं।

कांग्रेस ने कर लिया था किनारा : पित्रोदा के बयान से खुद को अलग करते हुए कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने कहा था कि सैम पित्रोदा की ओर से भारत की विविधताओं को जो उपमाएं दी गई हैं, वह गलत और अस्वीकार्य हैं। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस इन उपमाओं से अपने आप को पूर्ण रूप से अलग करती है।

भाजपा और पीएम मोदी ने साधा था निशाना: भाजपा ने भी पित्रोदा की टिप्पणी को लेकर कांग्रेस पर निशाना साधा था। पार्टी ने कहा था कि जैसे-जैसे लोकसभा चुनाव आगे बढ़ रहा है, विपक्षी पार्टी का मुखौटा उतरता जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी पित्रोदा के विवादास्पद बयानों को कांग्रेस की विभाजनकारी मानसिकता करार दिया था। उन्होंने सवाल किया कि क्या तमिल संस्कृति और गौरव के लिए द्रविड़ मुनेत्र कषगम (द्रमुक) अपने सहयोगी इस प्रमुख विपक्षी पार्टी से नाता तोड़ेगी? पीएम मोदी ने कहा कि एक बड़े नेता ने कांग्रेस की विभाजनकारी मानसिकता प्रदर्शित की है। गांधी परिवार के करीबी और शहजादे के सबसे बड़े सलाहकार ने जो कहा वह बहुत शर्मनाक है।

भाजपा नेता राजीव चंद्रशेखर और सुधांशु त्रिवेदी ने दावा किया कि पित्रोदा ने भारत के उस विचार को उजागर किया है जिस पर सोनिया गांधी और राहुल गांधी जैसे कांग्रेस के बड़े नेता विश्वास करते हैं। चन्द्रशेखर ने कहा कि पित्रोदा राहुल गांधी के सलाहकार रहे हैं और गांधी ने अपनी विदेश यात्राओं के दौरान अक्सर भारतीय लोकतंत्र और देश की संस्थाओं की आलोचना की है।

त्रिवेदी ने कहा कि मौजूदा लोकसभा चुनाव अब विदेशी मानसिकता से ग्रस्त लोगों और आत्मनिर्भर तथा स्वाभिमान से भरे भारत के बीच की लड़ाई बन गया है। केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने एक्स पर कहा, हमारे लिए, सभी भारतीय भारतीयों की तरह दिखते हैं, कांग्रेस उन्हें चीनी, अरब, श्वेत और अफ्रीकी आधार पर वर्गीकृत करने पर जोर देती है। केवल कांग्रेस जैसी औपनिवेशिक मानसिकता वाली पार्टी ही इस तरह के निंदनीय नस्लवाद में शामिल हो सकती है।

संविधान बदलने की कोशिश को करेंगे नाकाम : तेजस्वी

प्रात: किरण

रांची। राष्ट्रीय जनता दल के नेता तेजस्वी यादव ने केंद्र में भारतीय जनता पार्टी की अगुवाई वाली राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार पर संविधान बदलने और एससी, एसटी तथा ओबीसी श्रेणियों का आरक्षण छीनने की कोशिश का आरोप लगाते हुए बुधवार कहा कि उनकी पार्टी ऐसे किसी भी प्रयास को नाकाम कर देगी। यादव ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर झारखंड के साथ सौतेला व्यवहार करने का भी आरोप लगाया। बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री ने विपक्षी दलों के गठबंधन ह्यइंडियाह्व की प्रत्याशी ममता भुइयां के पक्ष में पलामू के छतरपुर में एक रैली को संबोधित करते हुए कहा, ह्यप्रधानमंत्री मोदी और भाजपा के नेतृत्व वाला राजग भारत के संविधान को बदलना चाहता है लेकिन मैं वादा करता हूं कि कोई भी हमारे संविधान को नहीं बदल सकता और आपका आरक्षण नहीं छीन सकता। हम ऐसी किसी भी कोशिश को नाकाम कर देंगे। उन्होंने आरोप लगाया, ह्यमोदी पिछले 10 सालों में झूठ फैलाते रहे हैं और उन्होंने महंगाई रोकने, नौकरियां मुहैया कराने और काले धन को खत्म करने जैसे अपने किसी भी वादे को पूरा नहीं किया। राजद नेता ने आरोप लगाया, प्रधानमंत्री मोदी झूठ के निमार्ता, वितरक और थोक व्यापारी (होलसेलर) हैं। उन्होंने एलआईसी, बंदरगाह, हवाई अड्डे और देश की संपत्ति बेच दी है। यादव ने दावा किया, प्रधानमंत्री मोदी ने कोई भी वादा पूरा नहीं किया, जबकि भाजपा के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार ने विपक्षी दलों के ऐसे नेताओं के पीछे ईडी और सीबीआई जैसी एजेंसियों को लगा दिया, जो लोगों की आवाज उठा रहे हैं और उनके अधिकारों के लिए लड़ रहे हैं।

पीएम मोदी 12 को पटना में पहली बार करेंगे रोड शो

प्रात: किरण

पटना। प्रधानमन्त्री नरेंद्र मोदी 12 मई की शाम बिहार की राजधानी पटना में रोड शो करेंगे। यह पहला मौका होगा कि कोई प्रधानमंत्री पटना की सड़कों पर रोड शो करेंगे। इसकी घोषणा भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सह उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने बुधवार को एक प्रेस वार्ता में की। मीडिया सेंटर में आयोजित एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि 12 मई की शाम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पटना में रोड शो करेंगे। वे बेली रोड से आएंगे और डाक बंगला इलाके में जाएंगे। प्रधानमन्त्री प्रदेश को यह संदेश देने का काम करेंगे पिछले 10 वर्षो में भारत के विकास, समृद्धि, आर्थिक विकास के लिए काम किया है। इसके अलावा सभी वर्गो को आरक्षण की व्यवस्था सुदृढ करने तथा संविधान बचाने का काम किया है। उन्होंने कहा कि इस रोड शो में बिहार की झलक दिखेगी।

उन्होंने कहा कि इस रोड शो में पटना के अलावा बिहार की जनता भी भाग लेंगी। इधर, पूर्व केंद्रीय मंत्री और पटना साहिब के प्रत्याशी रविशंकर प्रसाद ने कहा कि चुनाव प्रचार में प्रधानमंत्री ने रोड शो में एक मानक स्थापित किया है। उन्होंने लोगों से अपील करते हुए कहा कि वे इस ऐतिहासिक घड़ी में घरों से बाहर निकलकर स्वागत करें। इस मौके पर पूर्व केंद्रीय मंत्री और पाटलिपुत्र से प्रत्याशी रामकृपाल यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री हमारे घर आ रहे हैं। यह मौका सुखद आश्चर्य देने वाला है। उन्होंने कहा कि पटना से लेकर पाटलिपुत्र का गाँव तक इस रोड शो को लेकर उत्साह है।

14 मई को वाराणसी से करेंगे नामांकन दाखिल : वाराणसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 14 मई को उत्तर प्रदेश की वाराणसी लोकसभा सीट के लिए तीसरी बार नामांकन पत्र दाखिल करेंगे। इससे पहले पीएम मोदी 13 मई को अपने संसदीय क्षेत्र में रोड शो करेंगे। जिला अधिकारियों के मुताबिक, रोड शो शुरू करने से पहले पीएम मोदी लंका स्थित बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के मेन गेट पर मदन मोहन मालवीय की प्रतिमा पर श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे।

रोड शो काशी विश्वनाथ कॉरिडोर पर समाप्त होगा। रोड शो में लाखों लोगों के शामिल होने की उम्मीद है। भाजपा नेता दिलीप पटेल ने बताया कि पीएम मोदी का पांच किमी लंबा रोड शो अस्सी, सोनारपुरा, जंगम बाड़ी, गोदौलिया और बांसफाटक होते हुए विश्वनाथ कॉरिडोर तक जाएगा। इस दौरान पीएम मोदी का भव्य स्वागत किया जाएगा।

पांचवा चरण : 695 उम्मीदवार चुनावी मैदान में

प्रात: किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। लोकसभा चुनाव के पांचवें चरण के लिए 20 मई को होने वाले मतदान में आठ राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों के 695 उम्मीदवार चुनाव मैदान में होंगे। निर्वाचन आयोग ने बुधवार को बताया कि पांचवें चरण में उत्तर प्रदेश की 14, महाराष्ट्र की 13, पश्चिम बंगाल की सात, बिहार और ओड़िशा की पांच-पांच, झारखंड की तीन और जम्मू कश्मीर तथा लद्दाख की एक-एक सीट पर चुनाव होगा। इस चरण के लिए 1586 नामांकन पत्र दायर किये गये थे। तीन मई को नामांकन पत्र दायर करने की अंतिम तिथि थी और नामांकन पत्रों की जांच के बाद 749 नामांकन सही पाये गये थे।

नाम वापस लेने के बाद अब कुल 695 उम्मीदवार चुनाव मैदान में हैं। निर्वाचन आयोग के अनुसार महाराष्ट्र की 13 सीटों के लिए सबसे अधिक 512 नामांकन पत्र दायर किये गये थे। इसके बाद उत्तर प्रदेश की 14 सीटों के लिए 466 नामांकन पत्र दाखिल किये गये। झारखंड की चतरा संसदीय सीट के लिए सबसे अधिक 69 नामांकन जमा कराये गये। उत्तर प्रदेश की लखनऊ सीट के लिए दूसरे सबसे अधिक 67 नामांकन पत्र दायर किये गये। पांचवें चरण में एक सीट के लिए औसतन 14 उम्मीदवार चुनाव मैदान में हैं।

रायबरेली परिवार एक बार फिर से नेतृत्व के लिए तैयार : प्रियंका

प्रात: किरण

रायबरेली/एजेंसी। रायबरेली में अपने भाई राहुल गांधी के पक्ष में चुनाव प्रचार की कमान सम्भाल रहीं कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा ने बुधवार को कहा कि सेवा के सौ साल का रिश्ता नये दौर में प्रवेश कर चुका है और रायबरेली परिवार एक बार फिर से नेतृत्व के लिए तैयार है। प्रियंका ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर कहा, रायबरेली के एक-एक कांग्रेस कार्यकर्ता और यहां की जनता का उत्साह देखने लायक है। सेवा के सौ साल का रिश्ता नये दौर में प्रवेश कर चुका है और रायबरेली परिवार एक बार फिर से नेतृत्व के लिए तैयार है। उन्होंने संदेश में यह भी कहा, आज बछरावां और रायबरेली के विभिन्न क्षेत्रों में नुक्कड़ सभाओं और जनसंपर्क के माध्यम से अपने परिवारजनों से मुलाकात करूंगी। प्रियंका का रायबरेली स्थित बछरावां विधानसभा क्षेत्र के थुलवासा, महराजगंज, हलोर, भवानीगढ़, गुढ़ा, तिलेंडा, इंचौली और सुदौली में बैठकों में भाग लेने का कार्यक्रम है। कांग्रेस का गढ़ मानी जाने वाली रायबरेली सीट वर्ष 2019 में हुए पिछले लोकसभा चुनाव में पूर्व पार्टी अध्यक्ष सोनिया गांधी ने जीती थी। इस बार उनके बेटे राहुल गांधी इस सीट से उम्मीदवार हैं।

अनंत सिंह की नियमित जमानत याचिका खारिज

पूर्व विधायक को पटना हाईकोर्ट से लगा झटका

प्रात: किरण

पटना। पूर्व विधायक और बाहुबली अनंत सिंह को बड़ा झटका लगा है। पटना हाईकोर्ट ने उनकी नियमित जमानत याचिका को खारिज कर दी। जस्टिस एनके पांडेय की अदालत ने इस नियमित जमानत याचिका को खारिज किया है। दरअसल, अनंत सिंह की ओर से 2022 में ही नियमित जमानत की अपील की गई थी। लेकिन, कोर्ट ने अनंत सिंह की अपराधिक इतिहास को देखते हुए बेल को खारिज कर दिया। फिलहाल वह 15 दिन के पैरोल पर बाहर निकले हैं। पैरोल खत्म होते ही अनंत सिंह को वापस जेल जाना पड़ेगा।

पटना हाईकोर्ट के वरीय अधिवक्ता के अनुसार, सचिवालय थाने में 2015 में एक केस (54/2015) दर्ज किया था। इसके बाद निचली अदालत ने आर्म्स एक्ट की धारा 25(1-अ), 26(2)/ 35 के तहत अनंत सिंह को 10 साल की जेल और 20 हजार रुपये जुमार्ने की सजा सुनाई थी।

इस मामले को लेकर ही अनंत सिंह ने नियमित जमानत याचिका दायर की थी। बुधवार को पूर्व विधायक अनंत सिंह की ओर से वरीय अधिवक्ता पीएन शाही ने उनका पक्ष रखा। वहीं राज्य सरकार का पक्ष अधिवक्ता अजय कुमार मिश्रा ने रखा। कोर्ट ने दोनों पक्षों की दलीलों को सुनने के बाद यह फैसला सुनाया। अब अगली सुनवाई चार जुलाई को होगी। बता दें कि विधायकी गंवाने वाले बाहुबली और मोकामा के पूर्व विधायक अनंत सिंह रविवार को ही बेऊर जेल से बाहर निकले हैं। गृह विभाग से हरी झंडी मिलने के बाद अनंत सिंह को जेल से 15 दिनों के लिए पैरोल मिला है। आनंद सिंह के जेल से बाहर निकलने की सूचना के साथ ही उनके समर्थकों में काफी उत्साह का माहौल है। अनंत सिंह लगभग पांच वर्षो से जेल में बंद है। अनंत सिंह पर एके 47 रखने का आरोप है, जिसके तहत कोर्ट ने उन्हें 10 वर्ष की सजा सुनाई थी। तब से मोकामा के पूर्व विधायक अनंत सिंह पटना के बेउर जेल में सजायाफ्ता बंदी के रूप में सजा काट रहे हैं।

मौसम | **जलवायु घटनाओं के प्रभाव से वैश्विक अर्थव्यवस्था को 2049 तक प्रति वर्ष लगभग 380 खरब अमेरिकी डॉलर का हो सकता है नुकसान**

दुनियाभर में इस साल अप्रैल का महीना अब तक का सबसे गर्म रहा

यूरोपीय जलवायु एजेंसी की जारी आंकड़ों में दी गई जानकारी

प्रात: किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। दुनियाभर में इस साल अप्रैल का महीना अब तक का सबसे गर्म अप्रैल रहा और रिकॉर्ड गर्मी, बारिश व बाढ़ के कारण कई देशों में सामान्य जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया। बुधवार को जारी नए आंकड़ों में यह जानकारी दी गई है। यूरोपीय संघ की जलवायु एजेंसी कॉपरनिकस क्लाइमेट चेंज सर्विस (सी3एस) ने कहा कि यह रिकॉर्ड-उच्च तापमान का लगातार 11वां महीना था, जो कमजोर हो रहे अल नीनो (मौसम प्रणाली) और मानव-जनित जलवायु परिवर्तन के संयुक्त प्रभाव का परिणाम है। अप्रैल में औसत तापमान 15.03 डिग्री सेल्सियस रहा, जो निर्दिष्ट पूर्व-औद्योगिक संदर्भ अवधि (1850 से 1900) में उल्लेखित अप्रैल के औसत तापमान से 1.58 डिग्री सेल्सियस अधिक था। यह अप्रैल के लिए 1991-2020 के औसत से 0.67 डिग्री सेल्सियस अधिक और अप्रैल 2016 में दर्ज किए गए पिछले सबसे उच्च तापमान से 0.14 डिग्री सेल्सियस अधिक था। सी3एस के निदेशक कार्लो बूनटेम्पो ने कहा, वर्ष की शुरूआत में अल नीनो चरम पर था, और पूर्वी उष्णकटिबंधीय प्रशांत क्षेत्र में समुद्र की सतह का तापमान अब न्यूट्रल स्थितियों की ओर वापस जा रहा है। हालांकि, एक ओर अल नीनो जैसी प्राकृतिक प्रणालियों से जुड़े तापमान में बदलाव आते-जाते रहते हैं, तो दूसरी ओर ग्रीनहाउस गैसों की बढ़ती सांद्रता के कारण समुद्र व वायुमंडल में मौजूद अतिरिक्त ऊर्जा वैश्विक तापमान को नए रिकॉर्ड की ओर धकेलती रहेगी। जलवायु एजेंसी ने कहा कि पिछले 12 महीनों (मई 2023-अप्रैल 2024) में वैश्विक औसत तापमान सबसे अधिक दर्ज किया गया है, जो 1991-2020 के औसत से 0.73 डिग्री सेल्सियस अधिक और 1850-1900 की अवधि के पूर्व-औद्योगिक काल के औसत से 1.61 डिग्री सेल्सियस अधिक है। सी3एस के अनुसार, वैश्विक औसत तापमान जनवरी में पहली बार पूरे वर्ष की 1.5 डिग्री सेल्सियस की सीमा को पार कर गया। वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों झ मुख्य रूप से कार्बन डाइऑक्साइड और मीथेन झ की तेजी से बढ़ती सांद्रता के कारण पृथ्वी की वैश्विक सतह का तापमान 1850-1900 के औसत की तुलना में पहले ही लगभग 1.15 डिग्री सेल्सियस बढ़ चुका है। माना जा रहा है कि इस तापमान वृद्धि के कारण दुनिया भर में रिकॉर्ड सूखा, जंगलों में आग और बाढ़ जैसी घटनाएं देखी जा रही हैं। जर्मनी के पॉट्सडैम इंस्टीट्यूट फॉर क्लाइमेट इम्पैक्ट रिसर्च के वैज्ञानिकों द्वारा हाल ही में किए गए एक अध्ययन के अनुसार, जलवायु घटनाओं के प्रभाव से वैश्विक अर्थव्यवस्था को 2049 तक प्रति वर्ष लगभग 380 खरब अमेरिकी डॉलर का नुकसान हो सकता है।

एस्ट्राजेनेका ने दुनिया भर से अपनी कोरोना वैक्सीन कोविशील्ड वापस मंगवाई

प्रात: किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। ब्रिटेन की प्रमुख औषधि निमार्ता कंपनी एस्ट्राजेनेका ने दुनियाभर से अपने कोविड-19 रोधी टीके वापस मंगाने शुरू कर दिए हैं। कंपनी ने कुछ दिन पहले यह स्वीकार किया था कि उसके टीकों के कारण खून के थक्के जमने और प्लेटलेट कम होने के मामले सामने आए हैं। एस्ट्राजेनेका ने सीरम इंस्टिट्यूट ऑफ इंडिया (एसआईआई) के साथ मिलकर भारत को कोविशील्ड टीकों की आपूर्ति की थी।

कंपनी ने एक बयान में कहा कि महामारी के बाद से उपलब्ध टीकों की अधिक संख्या को देखते हुए इन्हें वापस मंगाने की प्रक्रिया शुरू की गई है। एस्ट्राजेनेका ने कोविड-19 टीके विकसित करने के लिए ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के साथ साझेदारी की थी। इन टीकों को भारत में कोविशील्ड और यूरोप में वैक्सजेवरिया के नाम से बेचा गया था। बयान में कहा गया है, चूंकि कई प्रकार के कोविड -19 टीके विकसित हो चुके हैं, इसलिए उपलब्ध टीकों की संख्या अधिक है। इससे वैक्सजेवरिया की मांग में गिरावट आई है, जिसका उत्पादन या आपूर्ति अब नहीं की जा रही है। कंपनी ने कहा, अब हम इस अध्याय को समाप्त करने और कोविड-19 महामारी में महत्वपूर्ण योगदान के लिए एक स्पष्ट मार्ग पर आगे बढ़ने को लेकर नियामकों और हमारे भागीदारों के साथ काम करेंगे।

संक्षिप्त समाचार

हीट वेव को लेकर स्वास्थ्य विभाग अर्लट, मौत का डेथ ऑडिट करने के निर्देश

देहरादून, एजेंसी। स्वास्थ्य सचिव ने बताया, हीट वेव से संबंधित बीमारियों के लक्षणों की शीघ्र पहचान, निगरानी के लिए चिकित्सा अफसरों को नियमित प्रशिक्षण दिया जाएगा। उत्तराखंड में लगातार बढ़ रही गर्मी को देखते हुए स्वास्थ्य विभाग हीट वेव को लेकर अलर्ट हो गया है। हीट वेव से संबंधित बीमारियों से होने वाली मृत्यु का डेथ ऑडिट किया जाएगा। अस्पताल इसकी रिपोर्ट स्वास्थ्य निदेशालय को भेजेंगे। सोमवार को सचिव स्वास्थ्य डॉ. आर राजेश कुमार ने आने वाले दिनों में गर्मी बढ़ने पर हीट वेव का अलर्ट जारी कर सभी जिलाधिकारियों और मुख्य चिकित्सा अधिकारियों को दिशा निर्देश दिए। सभी अस्पतालों में पर्याप्त मात्रा में दवाइयों, आईवी फ्लूडस, आइस पैक, ओआरएस घोल उपलब्ध कराने के लिए कहा। स्वास्थ्य सचिव ने बताया, हीट वेव से संबंधित बीमारियों के लक्षणों की शीघ्र पहचान, निगरानी के लिए चिकित्सा अफसरों को नियमित प्रशिक्षण दिया जाएगा। उन्होंने सभी अस्पतालों में ठंडे पीने के पानी की उपलब्धता के निर्देश दिए। इसके अलावा अस्पतालों में रेन वाटर हार्वेस्टिंग और वाटर रिसाइक्लिंग की व्यवस्था करने को कहा।

जंगल की आग की चपेट में आया एक मकान और पांच गोशालाएं

देहरादून, एजेंसी। भूमि संरक्षण वन प्रभाग कालसी क्षेत्र के दातनु में जंगल में लगी आग को वनकर्मियों ने रविवार देर रात 11 बजे बुझा दी। इस दौरान वन क्षेत्र के आसपास खकड़हिता में एक दो मंजिला मकान और भंगोई में पांच गोशालाएं जलकर राख हो गईं। वहीं, दातनु और जोशी गांव में आम के करीब 300 पेड़ झुलस गए। फिलहाल कोई जनहानि की सूचना नहीं है। सोमवार को राजस्व विभाग की टीम ने मौके पर पहुंचकर नुकसान का जायजा लिया। वन प्रभाग में स्वाड़ा खेड़े के पास शनिवार दोपहर किसी अज्ञात व्यक्ति ने घास में आग लगा दी थी। धीरे-धीरे आग दातुन तक पहुंच गई। वन क्षेत्र में लगी आग की चपेट में आने से खकड़हिता खेड़े में भीम सिंह चौहान की देवदार की लकड़ी की दो मंजिला आवासीय छानी जल गई। वहीं, भंगोई खेडे में पूरण सिंह, अतर सिंह, रणवीर सिंह, उमादत्त जोशी की गोशालाएं भी जलकर राख हो गईं। जोशी गांव के दीवान चंद, उमादत्त, श्याम दत्त, विजय राम, सीता राम, प्रताप सिंह, इंदर सिंह आदि बागवानों के आम के करीब 300 पेड़ भी झुलस गए। एसडीएम कालसी योगेश मेहरा के निर्देश पर राजस्व उपनिरीक्षक बडनु सुगंधा बिष्ट मौके पर पहुंचीं। उन्होंने आग से हुए नुकसान का आंकलन किया। उन्होंने बताया कि नुकसान की रिपोर्ट एसडीएम को सौंपी जाएगी।

हर हाल में सुनिश्चित हो पेयजल आपूर्ति: डीएम

देहरादून, एजेंसी। जिलाधिकारी के जनसुनवाई कार्यक्रम में पेयजल का मुद्दा उठा। डीएम सोनिका ने जल संस्थान के अफसरों से कहा कि पेयजल एवं पेयजल लाइन लीकेज से संबंधित शिकायतों को गंभीरता से लें। शिकायतों पर त्वरित कार्यवाही करें। पीने के पानी की आपूर्ति किसी भी स्थिति में बाधित न हो। अगर किसी भी क्षेत्र में पेयजल के संकट की सूचना आई तो अफसरों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। जिलाधिकारी कार्यालय परिसर में डीएम सोनिका ने जिला स्तरीय अधिकारियों के साथ ऋषिपर्णा सभागार में जन समस्याएं सुनीं। 95 लोगों ने जिलाधिकारी कार्यालय पहुंचकर अपनी समस्याएं बताईं। जिलाधिकारी ने उप जिलाधिकारियों को निर्देशित किया कि राजस्व विभाग से संबंधित शिकायतों का मूल्यांकन कर समस्याओं का निराकरण करें। जिलाधिकारी के समक्ष भरण पोषण, भूमि विवाद, सीवर, पेयजल लाइन सहित विद्युत, शिक्षा पुलिस, एमडीडीए, वन आदि विभागों से जुड़ी शिकायतें प्राप्त हुईं। मुख्य विकास अधिकारी झरना कमठान, अपर मुख्य नगर आयुक्त नगर निगम बीर सिंह बुदियाल, अपर जिलाधिकारी वित्त व राजस्व रामजीशरण शर्मा, सिटी मजिस्ट्रेट प्रत्यूष सिंह, निदेशक ग्राम्य विकास अभिकरण विक्रम सिंह, उप जिलाधिकारी सदर हरगिरी, उप जिलाधिकारी मुख्यालय शालिनी नेगी उपस्थित रहे।

आबादी तक पहुंची जंगल में लगी आग, ग्रामीणों में मची अफरा-तफरी; ऐसे अपने घरों को बचाया

नैनीताल , एजेंसी। सोमवार की रात बेतालघाट ब्लॉक के धूरा के जंगल में लगी आग मंगलवार को छोटी जजुली गांव के आबादी क्षेत्र तक पहुंच गई। ऐसे में ग्रामीणों ने पानी और पिरूल की लाइन काटकर करीब 10 घरों के लोगों को आग से बचाया।

पर्वतीय क्षेत्रों में लगी आग अब आबादी क्षेत्रों में पहुंचने लगी है। इससे ग्रामीणों में दहशत का माहौल है। सोमवार की रात बेतालघाट ब्लॉक के धूरा के जंगल में लगी आग मंगलवार को छोटी जजुली गांव के आबादी क्षेत्र तक पहुंच गई। ऐसे में ग्रामीणों ने पानी और पिरूल की लाइन काटकर करीब 10 घरों के लोगों को आग से बचाया।

सोमवार की रात वनाग्नि की आग जजुली गांव तक पहुंच गई। लोगों ने आग धधकते देखा तो वे भयभीत हो गए। इस दौरान क्षेत्र के ग्रामीण सोबन सिंह करायत, महेंद्र सिंह, राजेंद्र सिंह, विमला देवी और लता देवी दूरदराज से पानी लाकर आग बुझाते रहे, लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिली।

इसबीच चीड़ के पेड़ों से गिरे पिरूल की लाइन को काटकर आग को आबादी क्षेत्र तक पहुंचने से रोक लिया गया। हालांकि,राजेंद सिंह के घास के दो लुटे और नाशपाती व नीबू के पेड़ झुलस गए। वहीं सोमवार की देर शाम सुयालबाड़ी के जंगल में लगी आग आबादी क्षेत्र तक पहुंच गई। फायर बिग्रेड, वन कर्मियों और ग्रामीणों ने कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। बेतालघाट के जंगलों में लगी आग से इस बार कई हेक्टेयर वन संपदा को भारी नुकसान पहुंचा है।

कॉर्बेट टाइगर रिजर्व (सीटीआर) के जंगलों में लगी आग की घटना पर काबू पाने वाले वन कर्मियों की चीफ वाइल्ड लाइफ वार्डन ने सराहना की। उन्होंने सीटीआर के विभिन्न क्षेत्रों का निरीक्षण किया। चीफ वाइल्ड लाइफ वार्डन डॉ. समीर सिन्हा ने कालागढ़ से सीटीआर पहुंचे। इसके बाद चीफ वाइल्ड लाइफ वार्डन रूरू स्टेशन पहुंचे, जहां कर्मचारियों से वार्ता की। इस दौरान सीटीआर निदेशक डॉ. धीरज पांडेय आदि मौजूद रहे।

कॉर्बेट टाइगर रिजर्व (सीटीआर) की सर्पदुली रेंज और रामनगर पुलिस ने फ्लैग मार्च निकाला। लाउडस्पीकर के माध्यम से वनाग्नि को लेकर लोगों को जागरूक किया। इस मौके पर रेंजर बिंदरपाल, कोतवाल अरुण कुमार सैनी, एसएसआई द्वितीय मनोज नयाल, वन दरोगा धर्मपाल नेगी, वन आरक्षी जगदीश, चंदन, स्वाति, विजयपाल, गोविंद व पंकज रावत मौजूद रहे।

नैनीताल जिले में वनाग्नि की घटनाओं को रोकने के लिए जिला प्रशासन ने एडवाइजरी जारी की है। साथ ही सभी प्रभागीय वनाधिकारी, जिला आपूर्ति अधिकारी, मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी, जिला पर्यटन अधिकारी, नगर आयुक्त, उप जिलाधिकारी, लोनिवि आदि विभाग को दायित्व दिया गया है।

अपर जिला अधिकारी पीआर चौहान ने बताया कि विभिन्न व्यक्तियों और प्रतिष्ठानों की ओर से वन भूमि में ठोस अवशिष्ट के निस्तारण, जलावन, ज्वलनशील सामग्री एवं अन्य ऐसी सामग्री जो की अव्यवस्थित रूप से फैकने पर प्रतिबंध लगाया गया है। कहा किसी व्यक्ति या प्रतिष्ठान की ओर से खुले में कूड़ा या जैविक ज्वलनशील सामाग्री फैकी जाती है, तो तत्काल प्रभाव से उसके विरूद्ध कार्यवाही की जाएगी। इसके अतिरिक्त ठोस अपशिष्ट प्रबंधन प्लान्ट, टैंचिग ग्राउंड व कूड़ा घरों में किसी भी प्रकार की सामग्री को जलाने पर पूर्णतः रोक लगाई गई है।

अपर जिला अधिकारी चौहान ने बताया ने पेट्रोल पंप, लीसा फैक्ट्री, भूसा गोदाम आदि के लिए परिसर के 100 मीटर की परिधि से ज्वलनशील अवशिष्ट जैसे प्लास्टिक कागज संबंधित कूड़ा, पीरूल, सूखे पत्ते टहनियां इत्यादि को तत्काल हटाने के निर्देश दिए।

उत्तराखंड के इस शहर में 11 फैक्ट्रियां करेंगी पौने आठ सौ करोड़ का निवेश, करीब दो हजार युवाओं को मिलेगा रोजगार

सितारगंज, एजेंसी। सिडकुल फेज टू में 11 फैक्ट्रियों ने प्लाट खरीदकर करीब 772 करोड़ के निवेश की नींव डाली है। इसी वर्ष समस्त फैक्ट्रियों में उत्पादन शुरू करने का लक्ष्य रखा गया है। जिस कदम से करीब 2 हजार युवाओं को सीधे रोजगार मिलेगा। जिससे क्षेत्र में आर्थिक विकास के साथ ही व्यापार के भी द्वार खुलेंगे।

एल्डिको में वर्ष 2006 से अब तक करीब यहां 130 फैक्ट्रियों में उत्पादन कार्य चल रहा है। एल्डिको के बगल में सिडकुल फेज टू के लिए पूर्व में भूमि हस्तानांतरित की गई थी। फेज टू में सर्वप्रथम इंडियन आयल प्राइवेट लिमिटेड कंपनी की ओर से निर्माण कार्य शुरू हुआ।

कोरोना काल के समय फेज टू में निवेश शून्य पहुंच गया था। वर्ष 2022 से सिडकुल फेज टू का कार्यभार संभाल रहे आरएम रविंद्र सिंह ने नई फैक्ट्रियों के लिए काफी प्रयास कर निवेशकों का आकर्षित किया। इसका नतीजा यह हुआ कि मात्र दो वर्ष में फेज टू में आटोमोबाइल, फार्मेसी, टिश्यू पेपर व इलेक्ट्रिकल उत्पाद जैसी 11 कंपनियों ने कुल करीब पौने आठ सौ करोड़ का निवेश किया है। इन तमाम कंपानियों की ओर से 77.83 एकड़ क्षेत्रफल में प्लाट खरीदे गए हैं। फैक्ट्रियों के संचालन से करीब 1882 लोगों के हाथों को सीधा रोजगार प्राप्त होगा। जिसमें सबसे अधिक रोजगार बालाजी एक्शन बिल्डबेल प्राइवेट लिमिटेड में 750 श्रमिकों के हिस्से में रहेगा।

डेकन ने हेमकुंड के लिए हेली सेवा से खींचे हाथ, पवन हंस आगे आया; इतना होगा किराया

गोपेश्वर, एजेंसी। हेमकुंड यात्रा मार्ग पर डेकन कंपनी ने इस साल हेली सेवाएं देने से हाथ खींच लिए हैं। हालांकि पवन हंस कंपनी इस बार हेमकुंड यात्रा मार्ग पर सेवाएं देने के लिए आगे आई है।

चमोली जिले में हेमकुंड साहिब यात्रा मार्ग पर गोविंदघाट से घांघरिया तक 14 किमी क्षेत्र में हेली सेवाएं उपलब्ध हैं। आपदा से पूर्व यहां दो कंपनियां हेली सेवाएं देती थी, लेकिन आपदा के दौरान एक कंपनी को हुए भारी नुकसान के बाद एक ही कंपनी प्रतिवर्ष हेली सेवा देती रही है।

इस बार हेमकुंड यात्रा मार्ग पर एक दशक से अधिक समय से हेली सेवा दे रही डेकन कंपनी ने सेवाओं से फिलहाल हाथ खींच लिए हैं। इस बार हेमकुंड के लिए पवन हंस कंपनी ने टेंडर डाला है। पवन हंस ने हेली सेवा देने के लिए हेलीपैड सहित सभी तैयारियां

भी पूर्ण कर ली हैं।

बताया गया कि इस बार हेली सेवा में पूर्व की दर पर ही किराया निर्धारित रहेगा। यहां टिकटों की बिक्री हेली कंपनी के काउंटर पर ही होती है। हेमकुंड साहिब यात्रा मार्ग पर अभी तक टिकटों की कालाबाजारी की घटनाएं सामने नहीं आई हैं। इसके बावजूद प्रशासन कालाबाजारी को लेकर सक्रिय है।

चारधाम यात्रा के दौरान हेलीकाप्टर सेवा को लेकर काफी मारामारी रहती है। आए दिन हेली सेवा के टिकटों की कालाबाजारी की शिकायतें मिलती हैं। इससे पुलिस के लिए भी इसे रोकना एक चुनौती से कम नहीं है। हालांकि पुलिस प्रशासन ऐसी वेबसाइटों पर नजर बनाए हुए है जो फर्जी रूप से हेली सेवाओं की टिकट के दावे करते हैं।

यात्रा सीजन के दौरान फर्जी वेबसाइट से नामी हेली कंपनियों के नाम से टिकट बुक कराने को लेकर तीर्थयात्रियों के साथ धोखाधड़ी के मामले भी सामने आते रहे हैं। इन वेबसाइट से हेली सेवा सहित होटलों की फर्जी बुकिंग के माध्यम से यात्रियों से ठगी होती रही है। इस बार चमोली पुलिस फर्जी वेबसाइट्स पर भी पैनी नजर बनाए हुए है।

गाडू घड़ा तेल यात्रा ने किया बदरीनाथ धाम के लिए प्रस्थान, 12 मई को खुलेंगे धाम के कपाट

कर्णप्रयाग (चमोली), एजेंसी। गाडू घड़ा तेल यात्रा ने बदरीनाथ धाम के लिए प्रस्थान किया। श्री लक्ष्मी-नारायण मंदिर डिम्मर से गाडूघड़ा तेल यात्रा आज निकली। 12 मई को धाम के कपाट खुलेंगे। श्रीबदरीनाथ धाम गाडू घड़ा तेल कलश यात्रा 25 अप्रैल की देर शाम नरेंद्र नगर राज दरबार से निकली थी।

11 मई की शाम कई पड़ावों से होते हुए यात्रा बदरीनाथ धाम पहुंचेगी और 12 मई को धाम के कपाट श्रद्धालुओं के दर्शनार्थ खोले जाएंगे। राजमहल नरेंद्र नगर में परंपरानुसार डिमरी धार्मिक केंद्रीय पंचायत पदाधिकारियों की उपस्थिति में महारानी माला राज्य लक्ष्मी शाह और सुहागिन महिलाएं भगवान बदरी विशाल के अभिषेक के लिए तिलों से तेल पिरोकर चांदी के कलश में रखाप था। भगवान बदरीनाथ के अभिषेक के उपयोग में लाया जाने वाला तिल का तेल नरेंद्रनगर राजदरबार में पिरोया जाता है। और यह तेल गाडू घड़ा में डाला जाता है।

सात मई को गाडूघड़ा तेल कलश लक्ष्मी नारायण मंदिर में स्थापित किया गया। 8 को यात्रा सिमली, कर्णप्रयाग होते हुए पाखी गांव पहुंची। 9 को नृसिंह मंदिर जोशीमठ और 10 को यात्रा आदि गुरु शंकराचार्य की गद्दी, बदरीनाथ के रावल (मुख्य पुजारी), धर्माधिकारी व वेदपाठियों के साथ रात्रि प्रवास के लिए योगध्यान मंदिर पांडुकेश्वर पहुंचेगी।

अल्मोड़ा में जंगल की आग से 30 गांवों की नींद उड़ी, सब बारी-बारी से कर रहे हैं पहरेदारी

अल्मोड़ा, एजेंसी। कड़ी मेहनत से विकसित किए गए 7.5 हेक्टेयर में फैले जिले के आदर्श जंगल के रूप में पहचाने जाने वाले स्याहीदेवी-शीतलाखेत जंगल के साथ ही अपने खेत-खलिहानों को बचाने के लिए गांव की महिलाएं, बुजुर्ग, युवा रात-दिन बारी-बारी से जंगल में पहरेदारी कर रहे हैं।

उत्तराखंड के अल्मोड़ा जिले में जंगल की आग ने 30 गांवों के ग्रामीणों की नींद उड़ा दी है।कड़ी मेहनत से विकसित किए गए 7.5 हेक्टेयर में फैले जिले के आदर्श जंगल के रूप में पहचाने जाने वाले स्याहीदेवी-शीतलाखेत जंगल के साथ ही अपने खेत-खलिहानों को बचाने के लिए गांव की महिलाएं, बुजुर्ग, युवा रात-दिन बारी-बारी से जंगल में पहरेदारी कर रहे हैं। यहां तक कि उनके लिए खाने-पीने की व्यवस्था भी जंगल में ही हो रही है।

वर्ष 2003 में विलुप्त हो गए स्याहीदेवी-शीतलाखेत जंगल को बगैर पौधरोपण के फिर से विकसित करने की पहल शुरू हुई थी। जंगल बचाओ... जीवन बचाओ अभियान चलाकर संयोजक के तौर पर स्वास्थ्य विभाग के फार्मासिस्ट गजेंद्र कुमार पाठक के नेतृत्व में धामस, नौला, भाकड़, गणस्यारी, स्याहीदेवी, रौन, डाल, डोबा, जूट, कसून, रैंगल, बलम, तल्ला रौतेला, देवलीखान सहित 30 गांवों के ग्रामीणों ने वन विभाग के सहयोग से बांज, बुरांश, फल्यांट सहित अन्य प्रजातियों का जंगल विकसित किया। पूरी रात नहीं सोए ग्रामीण, आग बुझाने में जुटे रहे...ताड़ीखेत के दूर के गांव तक जंगल की आग पहुंच गई। अपने घर, खेत, खलिहान की चिंता से ग्रामीण पूरी रात नहीं सो सके।

निजी हाथों में फिटनेस सेंटर की कमान फिर भी बिचौलिए भारी

हरिद्वार, एजेंसी। जिले में व्यावसायिक वाहनों के फिटनेस की जांच के लिए प्रवर्तन विभाग ने बहादराबाद स्थित एक केंद्र को जिम्मेदारी सौंपी है। विभाग से अधिकृत केंद्र के संचालकों का आरोप है कि व्यावसायिक वाहनों की जांच के लिए बिचौलिए हावी हो रहे हैं। आरोप है कि सेंटर आने वाले अधिकांश वाहनों के मालिक अथवा चालक इस बात से अनभिज्ञ हैं कि वाहनों की श्रेणी के अनुसार उसका कितना शुल्क लगेगा।

फिटनेस सेंटर संचालक शैलेंद्र सिंह का कहना है कि कई बार शिकायत आ रही है कि एजेंट बनकर कुछ लोग उन्हें गुमराह कर रहे हैं। निर्धारित शुल्क से अधिक रुपये लेकर वह आसानी से फिटनेस सर्टिफिकेट दिलाने का दावा करते हैं। कई वाहनों के स्वामी और चालकों का आरोप रहता है कि उन्हें वाहन के फिटनेस सर्टिफिकेट के लिए कोई नंबर भी नहीं जारी किया गया है।

फिटनेस सेंटर संचालक एक तरफ बिचौलियों से परेशान हैं। वहीं वाहन चालक और मालिक जटिल प्रक्रिया और शुल्क में असमानता के चलते भी ठगे जा रहे हैं। इसके पीछे मुख्य कारण है कि ऑटोमेटिव जांच की प्रकिया काफी जटिल होती है।

ऑनलाइन हाउस अरेस्ट का तीसरा मामला, ठगों ने पूर्व प्रोफेसर से चार लाख ठगे

नैनीताल, एजेंसी। रामनगर क्षेत्र में ऑनलाइन हाउस अरेस्ट का तीसरा मामला सामने आया है। इस बार साइबर ठगों ने उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय (यूओयू) के रिटायर्ड प्रवक्ता को कूरियर में ड्रग्स के साथ उनका आधार और पैन कार्ड होने का झांसा देकर आनॅलाइन हाउस अरेस्ट कर दिया।

हल्द्वानी, रामनगर क्षेत्र में ऑनलाइन हाउस अरेस्ट का तीसरा मामला सामने आया है। इस बार साइबर ठगों ने उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय (यूओयू) के रिटायर्ड प्रवक्ता को कूरियर में ड्रग्स के साथ उनका आधार और पैन कार्ड होने का झांसा देकर आनॅलाइन हाउस अरेस्ट कर दिया। इसके बाद चार लाख रुपये खाते में डलवा लिए। रिटायर्ड प्रोफेसर ने मुखानी थाने में एफआईआर दर्ज कराई है।

शिव साई कॉलोनी निकट रेनबो स्कूल बिठौरिया निवासी हरिहर प्रसाद शुक्ला ने मुखानी पुलिस को दी तहरीर में कहा कि 25 अप्रैल को उनके पास अनजान नंबर से फोन आया। फोन करने वाले ने कहा कि उनके आधार कार्ड से एक पार्सल ताइवान भेजा गया है जिसे मुंबई कस्टम पुलिस ने पकड़ लिया है। कूरियर से ड्रग्स, पासपोर्ट, क्रेडिट कार्ड व गैरकानूनी सामग्री मिली है। अब उन्हें तत्काल मुंबई क्राइम ब्रांच में रिपोर्ट करना होगा।

हरिहर का कहना है कि जब उन्होंने हल्द्वानी से मुंबई पहुंचने में असमर्थता

जताई तो व्यक्ति ने कहा कि वह कॉल को ऑनलाइन मुंबई क्राइम ब्रांच से कनेक्ट कर रहा है। इसके बाद ऑनलाइन जुड़े कथित डीसीपी और इंस्पेक्टर ने कहा कि प्राथमिक जांच में सामने आया है कि हरिहर नाम के आधार, पहचान पत्र से चार बैंक अकाउंट अलग-अलग शहरों में खोले गए हैं और उनसे करोड़ों रुपये का गैरकानूनी लेनदेन हुआ है। इस कारनामे में कई अपराधी शामिल हैं।

ठगों ने इस मामले की ऑनलाइन जांच में सहयोग करने के लिए उन्हें 24 घंटे स्काइप की विडियो काल पर मुंबई क्राइम ब्रांच की निगरानी में रहने की हिदायत दी। ठगों ने उन्हें डिजिटल हाउस अरेस्ट के तहत बंधक बनाए रखा। इसके बाद फाइनेंशियल वेरीफिकेशन के लिए उनके बताए गए खाते में चार लाख रुपये जमा करवा लिए। मुखानी थानाध्यक्ष पंकज जोशी ने बताया कि अज्ञात ठगों पर धोखाधड़ी की धारा में प्राथमिकी दर्ज की है। सेवानिवृत्त प्रोफेसर हरिहर के अनुसार ठगों ने उन्हें सीबीआई और आरबीआई के फर्जी पत्र दिखाए और अपराध में शामिल होने का डर दिखाया। एक पत्र में लिखा था कि मुझे तत्काल अपने एसबीआई बैंक खाते से 35,565 रुपये उनके खाते में ट्रांसफर करने होंगे। इस दौरान ठगों ने उनके सभी बैंक खातों में जमा धनराशि की जानकारी ले ली। रातभर स्काइप एप के तहत वीडियो कॉल पर इंस्पेक्टर की निगरानी में रखा गया। सुबह तक मानसिक दबाव और डर के चलते सोचने समझने की शक्ति प्रभावित हो गई। अगले दिन उन्होंने चार लाख रुपये ठगों के बताए खातों में डाल दिए। कहा कि इसके बाद उन्होंने यह जानकारी अपने बेटे को दी। बेटे ने ऑनलाइन साइबर पोर्टल में भी शिकायत की है।

सिसोदिया की जमानत याचिकाओं पर जवाब दाखिल करने के लिए ईडी, सीबीआई को और समय मिला

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली उच्च न्यायालय ने आबकारी नीति कथित घोटाले से जुड़े भ्रष्टाचार और धनशोधन मामलों में पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया की जमानत याचिकाओं पर जवाब दाखिल करने के लिए बुधवार को ईडी तथा सीबीआई को और समय प्रदान किया। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) और केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) के वकीलों ने न्यायमूर्ति स्वर्ण कांता शर्मा को सूचित किया कि उन्हें जवाब दाखिल करने के लिए और समय चाहिए। न्यायमूर्ति स्वर्णकांता शर्मा ने तीन मई को दोनों एजेंसियों को नोटिस जारी कर याचिकाओं पर जवाब दाखिल करने के लिए कहा था और मामले की सुनवाई बुधवार तक के लिए स्थगित कर दी थी। एजेंसियों के वकीलों के अनुरोध का सिसोदिया के वकील ने विरोध किया और कहा कि वह (सिसोदिया) जेल में बंद हैं जबकि ईडी और और सीबीआई ने उच्चतम न्यायालय को आश्वासन दिया था कि छह महीने में सुनवाई पूरी हो जाएगी। उच्च न्यायालय ने अपने आदेश में कहा, प्रतिवादियों ने जवाब दाखिल करने के लिए और समय मांगा है। कहा गया है कि ईडी मामले में एक सह-अभियुक्त के संबंध में एक और अभियोजन शिकायत दर्ज करने की प्रक्रिया में है। अदालत ने कहा, आरोपी हिरासत में है, इसके बावजूद प्रतिवादियों को अपना जवाब दाखिल करने के लिए चार और दिन दिए गए हैं। सोमवार तक अदालत में जवाब दाखिल किया जाए और दूसरे पक्ष को एक अग्रिम प्रति भी सोमवार तक मुहैया कराई जाए। अदालत ने मामले को 14 मई को सुनवाई के लिए सूचीबद्ध कर दिया।

अस्थायी विलंब के बाद दिल्ली मेट्रो की वायलेट लाइन पर सामान्य सेवाएं बहाल

नई दिल्ली। दिल्ली मेट्रो की वायलेट लाइन पर बुधवार को मेट्रो सेवा में अस्थायी विलंब होने के कारण यात्रियों को परेशानी हुई। अधिकारियों ने बताया कि दिल्ली मेट्रो रेल प्रबंधन (डीएमआरसी) द्वारा संचालित अन्य लाइनों की सेवा में कोई समस्या नहीं आई। डीएमआरसी ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में कहा सरिता विहार से मोहन एस्टेट तक मेट्रो सेवा में विलंब हो रहा है। बाकी लाइनों पर सेवाएं सामान्य हैं। वायलेट लाइन का उपयोग करने वाले एक यात्री ने कहा कि स्टेशनों पर घोषणाओं के माध्यम से पता चला कि रास्ते में तकनीकी समस्याओं के कारण देर हो रही है। वायलेट लाइन मध्य दिल्ली में कश्मीरी गेट को हरियाणा के फरीदाबाद में राज नाहर सिंह से जोड़ती है। बाद में, डीएमआरसी ने कहा कि प्रभावित लाइन पर सामान्य परिचालन बहाल हो गया है।

जेल में केजरीवाल के लिए सुविधाओं की मांग करने वाली जनहित याचिका खारिज

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली उच्च न्यायालय ने जेल से सरकार चलाने के वास्ते मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के लिए उपयुक्त इंतजाम करने की अपील करते हुए एक वकील द्वारा दायर की गयी एक जनहित याचिका को बुधवार को एक लाख रुपये के जुमार्ने के साथ खारिज कर दिया। याचिकाकर्ता ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की दिल्ली इकाई के अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा को केजरीवाल के इस्तीफे के लिए अनुचित दबाव डालने से रोकने की भी मांग की थी। कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश मनमोहन की अगुवाई वाली एक पीठ ने कहा कि चूंकि आप नेता अपनी गिरफ्तारी के विरूद्ध पहले ही उच्चतम न्यायालय का दरवाजा खटखटा चुके हैं, ऐसे में न्यायिक हिरासत में उन्हें कोई सुविधा प्रदान करने के संबंध में किसी आदेश की अपील न की जाए। न्यायमूर्ति मनमोहन और न्यायमूर्ति पी एस अरोड़ा की इस पीठ ने कहा कि यह अदालत मीडिया पर सेंसरशिप नहीं लगा सकती और न ही राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों को बयान देने से रोक सकती है। उच्च न्यायालय ने कहा, क्या हम आपातकाल लगाते हैं? क्या हम सेंसशरिप लगाते हैं? हम मार्शल लॉ लगाते हैं? हम कैसे प्रेस पर पाबंदी लगा दें? राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों (का मुंह बंद कर दें)? उच्च न्यायालय ने याचिकाकर्ता से कहा, एक लाख रुपये का बैंक ड्राफ्ट तैयार रखिए। याचिकाकर्ता ने दलील दी थी कि वैसे तो जेल से सरकार चलाना व्यावहारिक रूप से असंभव है लेकिन प्रौद्योगिकी की मदद से ऐसा संभव किया जा सकता है। जनहित याचिका में उसने जेल में केजरीवाल के लिए वीडियो कांफ्रेंस का इंतजाम करने का अनुरोध किया। उसने यह भी गुजारिश की कि मीडिया को केजरीवाल के इस्तीफे या दिल्ली में राष्ट्रपति शासन लगाने संबंधी अटकलबाजी वाली सनसनीखेज हेडलाइन चलाने से रोका जाए। अतिरिक्त सॉलीसीटर जनरल चेतन शर्मा ने कहा कि यह याचिका गलत धारणा पर आधारित है तथा किसी परोक्ष मंशा से दायर की गयी है।

दक्षिण दिल्ली से आठ साल की लड़की का अपहरण करने वाला युवक गिरफ्तार

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दक्षिण दिल्ली से आठ साल की बच्ची के अपहरण के आरोप में एक युवक को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने बुधवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने आरोपी की पहचान महरौली निवासी मोहम्मद उमर(28) के रूप में की है। पुलिस उपायुक्त (दक्षिण) अंकित चौहान ने बताया, छह मई को दोपहर 3 बजे, कोटला मुबारकपुर पुलिस स्टेशन को आठ वर्षीय लड़की के अपहरण के संबंध में एक पीसीआर कॉल प्राप्त हुई थी। सूचना मिलते ही पुलिस को तुरंत मौके पर भेजा गया। उन्होंने बताया कि परिवार की शिकायत के आधार पर भारतीय दंड संहिता की धारा 363(अपहरण) के तहत प्राथमिकी दर्ज कर जांच शुरू की गई। पुलिस उपायुक्त ने कहा, ह्यह्यलड़की के परिवार के सदस्यों और रिश्तेदारों से गहन पूछताछ की गई। टीम ने हर कोण से जांच पड़ताल की । सीसीटीवी फुटेज के विश्लेषण से मामले में महत्वपूर्ण सुराग मिले क्योंकि संदिग्ध को इलाके में घूमते हुए देखा गया था। उन्होंने कहा कि बापू पार्क, उदय चंद मार्ग, कोटला मुबारकपुर, गुरुद्वारा रोड, साउथ एक्सटेंशन-1, पिलंजी गांव और अन्य स्थानों पर कई सीसीटीवी कैमरों की जांच करने के बाद आरोपी को साउथ एक्सटेंशन-1 बस स्टॉप से आते देखा गया। उन्होंने कहा, हमने आरोपी की पहचान करने के लिए डीटीसी बसों के और सीसीटीवी फुटेज की जांच की। जिस लड़की का अपहरण किया गया था उसका विवरण जिपनेट (आसपास के राज्यों की पुलिस नेटवर्किंग प्रणाली) पर अपलोड किया गया था। पुलिस उपायुक्त ने बताया कि पुलिस ने मंगलवार को उमर को अंधेरिया मोड़ की झुग्गी बस्ती से गिरफ्तार करने के साथ ही लड़की को बचा लिया गया। उन्होंने कहा, पूछताछ के दौरान उमर ने खुलासा किया कि वह कांच के छोटे खिलौने बनाता है और कांच लेने के लिए कोटला गया था जहां उसने लड़की को खेलते हुए देखा और उसका अपहरण कर लिया। उन्होंने कहा कि लड़की को उसके परिवार से मिलाने के बाद मेडिकल जांच के लिए भेज दिया गया।

हत्या के प्रयास के मामले में एक गिरफ्तार

नई दिल्ली। दिल्ली स्टेट लेवल के एक रेसलर को दिल्ली पुलिस की काइम ब्रांच ने गिरफ्तार किया है। इसकी तलाश हत्या के प्रयास के मामले में दिल्ली की तिमारपुर थाना पुलिस को पिछले महीने से ही थी। आरोपित की पहचान सुमित के रूप में हुई है। यह दो बार स्टेट लेवल पर गोल्ड मेडल जीत चुका है। अप्रैल महीने में तिमारपुर इलाके में इसने अपने साथियों के साथ मिलकर विष्णु नाम के एक शख्स पर जानलेवा हमला किया था। इस हमले में गोली चलाई गई थी। हालांकि पीड़ित की किस्मत अच्छी थी कि उसको गोली लगी नहीं। फायरिंग के बाद सभी आरोपित मौके से फरार हो गए थे। इसमें आरोपित सुमित के अलावा सागर, निखिल, देव और अनिकेत भी शामिल था। क्राइम ब्रांच के डीसीपी सतीश कुमार ने बताया कि फरार आरोपित की तलाश पुलिस टीम टेक्निकल सर्विलांस की मदद से कर रही थी। इसी दौरान हेड कांस्टेबल विकास डबास को इस रेसलर के बारे में सूचना मिली। पता चला कि यह दिल्ली से हरियाणा फरार होने वाला है। पुलिस की नजर से बचने के लिए मुकरबा चौक से बस से हरियाणा जा रहा है। उस सूचना पर एसीपी विवेक त्यागी की देखरेख में इंस्पेक्टर सतीश मलिक की टीम ने मुकरबा चौक बस स्टॉप पर छापा मारा और वहां से सुमित को गिरफ्तार कर लिया।

जनता से सीधे संवाद के लिए आप चलाएगी विशेष अभियान

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी ने 13 से 23 मई तक विशेष चुनावी अभियान का ऐलान किया है। बुधवार को पार्टी कार्यालय पर आयोजित प्रेस वार्ता में पार्टी के प्रदेश संयोजक गोपाल राय ने बताया कि हम जेल का जवाब वोट से अभियान के तहत विशेष अभियान चलाएंगे, जिसमें जनता से सीधा संवाद किया जाएगा। अभियान के तहत महिला संवाद, ग्रामीण पंचायत, ट्रेड टाउन हॉल और पूर्वांचल समागम का आयोजन किया जाएगा। गोपाल राय ने कहा कि नई दिल्ली से महिला संवाद, पश्चिमी दिल्ली से ग्रामीण पंचायत, पूर्वी दिल्ली से ट्रेड टाउन हॉल और दक्षिणी दिल्ली से पूर्वांचल समागम की शुरूआत की जाएगी। इन कार्यक्रमों की शुरूआत भले ही एक संसदीय क्षेत्र से हो रही है, लेकिन सभी में इनका आयोजन किया जाएगा। पार्टी के पदाधिकारी, प्रत्याशी और कार्यकर्ता सीधे जनता से संवाद करेंगे। सरकार द्वारा कराए गए कामों को जनता के बीच गिनाएंगे। इसके साथ ही, जनता प्रत्याशी से क्या चाहती है, उस पर भी जनता के सुझावों को आमंत्रित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को जेल भेजे जाने के बाद जनता में काफी रोष है। जनता देख रही है कि किस तरह से विपक्ष को खत्म करने की साजिश रची जा रही है।

क्रिकेट की दुनिया के नए रोमांचक मुकाम की शुरूआत, बिग क्रिकेट लीग का हुआ शुभारंभ

- प्रतिभाशाली क्रिकेटरों के लिए एक स्वर्णिम अवसर, जो उच्च स्तर पर अंतरराष्ट्रीय और घरेलू क्रिकेट के दिग्गजों के साथ खेलने का सपना देखते हैं

नोएडा। बिग क्रिकेट लीग (बीसीएल) ने नोएडा के रेडिसन ब्लू एमबीडी होटल के लेक्सिकॉन हॉल में बुधवार को अपनी धमाकेदार शुरूआत की। आधिकारिक उद्घाटन और प्रेस कॉन्फ्रेंस में एक ऐसी लीग का अनावरण किया गया जो भारत में क्रिकेट को ग्रास रूट स्तर एक रोमांचक रूप देने के प्रयास करेगी। यह लीग महत्वाकांक्षी लोकल खिलाड़ियों को अपने प्रिय क्रिकेट सितारों के साथ खेलने का अवसर प्रदान करेगी।

यह बीसीएल के संस्थापक और अध्यक्ष, श्री रुद्र प्रताप सिंह का विजन है, जो स्वयं भारत के पूर्व अंतरराष्ट्रीय क्रिकेटर हैं। श्री सिंह ने बताया हमने बहुत से प्रतिभाशाली क्रिकेटरों को देखा जिनके सपने कई वजहों और हालातों के कारण से पूरे नहीं हो पाते हैं, बीसीएल इन सभी महत्वाकांक्षी लोकल क्रिकेटरों को अपनी प्रतिभा दिखाने और अपने क्रिकेट हीरोज के साथ क्रिकेट खेलने का अभूतपूर्व अनुभव का अवसर देगा। महान क्रिकेट हस्तियों श्री दिलीप वेंगसरकर, लीग कमिश्नर और श्री कर्टनी वाल्श, उपाध्यक्ष ने प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान श्री सिंह के उत्साह और दृष्टिकोण का समर्थन किया। पूर्व भारतीय कप्तान और महान बल्लेबाज श्री वेंगसरकर ने कहा, यह सिर्फ एक और क्रिकेट लीग नहीं है, बल्कि देश की तमाम उन प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को अवसर देने के बारे में है जिन्हें अपनी प्रतिभा दिखाने के मौके नहीं मिले और भारत में क्रिकेट प्रतिभा के अविश्वसनीय खजाने को दुनिया के सामने प्रदर्शित करने के बारे में है। पूर्व अंतरराष्ट्रीय सितारों और स्थानीय प्रतिभाओं का मेल ही बीसीएल को अन्य क्रिकेट लीग्स से अलग करता है। यह अपने शुद्धतम रूप में क्रिकेट का उत्सव है।

बीसीएल के वाइस प्रेसिडेंट, पूर्व वेस्टइंडीज के कप्तान और महान फास्ट गेंदबाज श्री कर्टनी वॉल्श भी ने कहा, हम कुछ बेहतरीन मैच देखेंगे, अप्रत्याशित नायकों को उभरता देखेंगे, जो दुनिया भर के खिलाड़ियों की एक नई पीढ़ी को प्रेरणा देंगे। श्री रुद्र प्रताप सिंह, बीसीएल के संस्थापक और अध्यक्ष, ने भी इन भावनाओं को दोहराते हुए कहा, बीसीएल केवल क्रिकेट से अधिक है, भारतीय क्रिकेट में एक अलग तरह की पहल है। हम सभी को इस यात्रा का हिस्सा बनने के लिए आमंत्रित करते हैं। श्री अनिरुद्ध चौहान, जो बीसीएल के सह-संस्थापक और सीईओ हैं, ने कहा, हमने बिग क्रिकेट लीग सीजन-1 के चयन के दौरान देश भर में कुछ अद्भुत प्रतिभाएं देखी हैं। हमें विश्वास है कि इस खेल के बारे में बढ़ती जागरूकता के कारण आने वाले वर्षों में हर सीजन के साथ प्रतिभाओं की गुणवत्ता और बेहतर होती रहेगी। उद्घाटन सत्र में छह शानदार टीमें - अवध लायंस, मुंबई मरीन्स, राजस्थान किंग्स, सदर्न स्पार्टन्स, बंगाल राइनोस और नॉर्दर्न चैलेंजर्स - आमने-सामने होंगी। इस पहले सीजन में क्रिकेट प्रेमियों को भरपूर क्रिकेटिंग एक्शन देखने को मिलेगा

दिल्ली की सातों सीटों पर काबिज होगी भाजपा : सतीश गर्ग

नई दिल्ली:एक तो दिल्ली की गर्मी ऊपर से चुनावी तड़का और तड़के में मिर्ची का काम कर रहे लोगों के बोल जी हाँ हेल्पिंग हैंड वेलफेयर सोसाइटी के अध्यक्ष सतीश गर्ग का कहना है की महाठगबंधन का बिस्तर दिल्ली की सातों सीटों से गोल होगा और दिल्ली की सातों सीटों पर भाजपा परचम लहराने वाली है, दिल्ली की जनता जानती है कि भारत का सुरक्षित भविष्य केवल नरेंद्र मोदी जी के हाथ में है देश को तोड़ने वालों के अरमानों पर पूरा पानी फिरेगा सतीश गर्ग का यह भी कहना है कि भाजपा के मनोज तिवारी और हर्ष मल्होत्रा अपनी-अपनी सीटों से कीर्तिमान स्थापित करने जा रहे हैं भरपूर जन समर्थन इसका गवाह है दिल्ली की लूट -खसूट की नीति को दिल्ली की जनता एक सिरे से खारिज कर चुकी है सरकार बनने के बाद आने वाले 5 सालों में वह ऐतिहासिक काम होंगे जो भारत को समृद्ध बनाएंगे

डीयू के रन फॉर विकसित भारत में दौड़े पांच हजार छात्र

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली विश्वविद्यालय में रन फार विकसित भारत का आयोजन किया गया। इसमें सभी छात्रों से मतदान करने की अपील की गई। दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि लोकतंत्र की मजबूती के लिए सभी विद्यार्थी खुद भी वोट डालें और 10-10 लोगों को वोट डालने के लिए प्रेरित करें। इस अवसर पर दौड़ में शामिल छात्रों का उत्साह बढ़ाने के लिए बैडमिंटन खिलाड़ी साइना नेहवाल व आत्माराम सनातन धर्म कॉलेज के पूर्व छात्र राजकुमार राव विशिष्ट अतिथि के रूप में पहुंचे।

रन फॉर विकसित भारत को कुलपति प्रो योगेश सिंह ने हरी झंडी दिखाई। दौड़ का आयोजन सुबह सात बजे विश्वविद्यालय के गेट नंबर से एक से किया गया। दौड़ गेट नंबर चार से होते हुए खेल परिसर में संपन्न हुई। कुलपति ने छात्रों से आह्वान किया कि 2047 तक भारत को विकसित बनाने में सभी छात्र अपनी भूमिका खोजें। दौड़ में एनसीसी, एनएसएस सहित पांच हजार छात्रों, विभिन्न कॉलेजों से नोडल ऑफिसर और स्पोर्ट्स शिक्षकों ने हिस्सा लिया। इस अवसर पर डीन ऑफ कॉलेजे प्रो बलराम पाणी, दक्षिणी परिसर के निदेशक प्रो. श्री प्रकाश सिंह, रजिस्ट्रार डॉ. विकास गुप्ता, डीन स्टूडेंट वेलफेयर प्रो. पंकज अरोड़ा, खेल निदेशक डॉ. अनिल कुमार कलकल समेत अन्य पदाधिकारी व शिक्षक उपस्थित रहे।

कुलपति ने कहा कि हम सभी चाहते हैं कि भारत आगे बढ़े और अच्छा बने। उसमें हम सबका अपना-अपना योगदान हो। उन्होंने कहा आपके इस कार्य से लोकतंत्र मजबूत होगा और अगले 25 साल में देश में बहुत कुछ अच्छा होगा। उन्होंने कहा कि आप लोग जब अच्छा करेंगे तभी देश के लिए अच्छा होगा। कुलपति ने मंचासीन बैडमिंटन खिलाड़ी साइना नेहवाल और फिल्म अभिनेता राजकुमार राव का उदाहरण देते हुए कहा कि जैसे इन्होंने देश का नाम ऊंचा किया है, आप सब भी अपनी जिंदगी में देश का नाम ऊंचा करने का प्रण लें। प्रो. योगेश सिंह ने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि 2047 तक भारत को विकसित बनाने में सभी बच्चे अपनी भूमिका खोजें। देश को आप सबकी बहुत जरूरत है। आचार संहिता का बताया था उल्लंघन डीयू के शिक्षक संगठनों ने आपत्ति जताते हुए दौड़ को आचार संहिता का उल्लंघन बताया था। शिक्षकों की ओर से कहा गया था कि यह आयोजन राजनीतिक रूप से प्रेरित है, जबकि डीयू की ओर से कहा गया था कि इसे मतदाता जागरूकता बढ़ाने के लिए आयोजित किया जा रहा है। वहीं, इस मामले में दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष देवेन्द्र यादव ने भी विकसित भारत एम्बेसडर के सहयोग से कार्यक्रम के तहत आदर्श आचार संहिता के घोर उल्लंघन के संबंध में मुख्य चुनाव आयुक्त को पत्र लिखकर अपना विरोध जताया था।

अवैध कॉलोनियों में सुविधाओं के लिए नहीं देंगे निर्देश : हाई कोर्ट

नई दिल्ली। दिल्ली हाई कोर्ट ने मंगलवार को अनाधिकृत कॉलोनी में सीवेज और कचरा निपटान की सुविधाओं की मांग करने वाली जनहित याचिका खारिज कर दी। याचिका में अनधिकृत कॉलोनी में सीवेज और कचरा निपटान की सुविधाएं प्रदान करने के लिए अधिकारियों को निर्देश देने की मांग की गई थी। कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश मनमोहन और न्यायमूर्ति मनमीत प्रीतम सिंह अरोड़ा की खंडपीठ ने जनहित याचिका को खारिज करते हुए पूछा कि अगर कल को कोई उच्च न्यायालय की भूमि पर अतिक्रमण करता है तो क्या न्यायालय को सीवेज सुविधाएं प्रदान करने के लिए निर्देश जारी करना चाहिए। पीठ ने अपने आदेश में टिप्पणी की कि आपके मन में किसी भी कानून के प्रति कोई सम्मान नहीं है। रिट याचिका जैसे उपायों का इस्तेमाल सरकारी जमीन पर अतिक्रमण करने वाले नहीं कर सकते। सर्व सेवा ट्रस्ट की जनहित याचिका में दिल्ली नगर निगम और दिल्ली सरकार को सीवेज सुविधाओं की व्यवस्था करने और एक कॉलोनी में कचरे के निपटान की व्यवस्था करने का निर्देश देने की मांग की गई है।

फर्जी वीजा मामले में एक एजेंट गिरफ्तार

नई दिल्ली। आईजीआई एयरपोर्ट थाना पुलिस टीम ने फर्जी वीजा के मामले में एक एजेंट को गिरफ्तार किया है। आरोपित की पहचान सैयद सरताज अहमद के रूप में हुई है। यह जसोला गांव, जामिया नगर, दिल्ली का रहने वाला है। डीसीपी उषा रंगनी ने बताया कि इसकी तलाश पुलिस को कई दिनों से थी। आरोप है कि इसने एक व्यक्ति सलाउद्दीन को पिछले साल पहले थाईलैंड का वीजा बना कर दिया। फिर वहां जाने से रोककर इस साल मार्च में सलाउद्दीन को अजरबैजान के बाकू भेजा था। वहां से उसे वापस भारत भेज दिया गया, क्योंकि उसके वीजा में फजीर्वाड़ा पाया गया। वापस दिल्ली पहुंचने पर आईजीआई एयरपोर्ट पर पुलिस ने सलाउद्दीन से पूछताछ की तो उसने बताया कि वह उप्र के बिजनौर का रहने वाला है। उसके पास से जो पासपोर्ट बरामद किया गया, उसमें एक पेज गायब था। उस मामले में पुलिस ने केस दर्ज करके जांच शुरू की। सलाउद्दीन को गिरफ्तार कर लिया गया, उसने बताया कि वह पांचवी पास है और अच्छे पैसे कमाने के लिए वह विदेश जाना चाह रहा था।

पिछले साल वह नसीम अली नाम के एक एजेंट के संपर्क में आया था। नसीम ने विदेश भेजने के लिए डेढ़ लाख रुपये की मांग की। उसने पासपोर्ट और वीजा का इंतजाम कर दिया। कुछ दिन के बाद अचानक उसने कहा कि अभी थाईलैंड जाना संभव नहीं है। इसलिए उसने फिर इस साल नसीम को अजरबैजान के बाकू जाने का इंतजाम किया। नसीम अली ने दूसरे एजेंट सैयद सरताज अहमद के सहयोग से फर्जी डॉक्यूमेंट का इंतजाम किया। सलाउद्दीन तीन मार्च को फ्लाइट से बाकू के लिए रवाना हुआ लेकिन वहां जाने के बाद जब उसके डॉक्यूमेंट की जांच की गई तो फजीर्वाड़ा का पता चला और फिर उसे वापस भारत भेज दिया गया।

वरिष्ठ आप नेता आतिशी व दक्षिणी दिल्ली से लोकसभा प्रत्याशी सहीराम पहलवान ने जेल का जबाव:आतिशी

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

वरिष्ठ आप नेता आतिशी व दक्षिणी दिल्ली से लोकसभा प्रत्याशी सहीराम पहलवान ने जेल का जबाव, वोट से कैपेन के तहत गोविन्दपुरी, कालकाजी में पदयात्रा की। आप की पदयात्रा को लोगों का जबरदस्त प्यार और समर्थन मिला। अपने मुख्यमंत्री की गिरफ़्तारी से नाराज लोगों ने कहा कि, लोकसभा चुनावों में भाजपा की अपने इस षड्यंत्र का कड़ा जबाव मिलेगा। लोगों ने कहा कि, अरविंद केजरीवाल जी ने दिल्ली के लोगों को अपना परिवार माना है, उनके खिलाफ ऐसा अत्याचार हम बर्दाश्त नहीं करेंगे; भाजपा को इस अति का परिणाम भुगतना होगा।

इस मौके पर वरिष्ठ आप नेता आतिशी ने कहा कि, अरविंद केजरीवाल जी ने 2 करोड़ दिल्लीवासियों को अपना परिवार माना है। उनकी हर जरूरतों में साथ खड़े रहे है। आज जब केजरीवाल जी को जरूरत तो पूरी दिल्ली उनके साथ खड़ी है। उन्होंने कहा कि, भाजपा भूल गई है-अरविंद केजरीवाल सिर्फ. मुख्यमंत्री नहीं है, दिल्ली वालों के लिए उनके बेटे, उनके भाई है, दिल्ली के लोग अरविंद केजरीवाल जी से प्यार करते है। यही कारण है कि, मोदी जी ने एक केजरीवाल को गिरफ़्तार किया तो आज दिल्ली के हर गली-मोहल्ले से हजारों केजरीवाल मोदी जी की तानाशाही का मुंहतोड़ जबाव देने के लिए निकल पड़े है। और 25 मई को जनता भाजपा की तानाशाही और अत्याचार का सूपड़ा साफ करने के लिए, अपने भाई-अपने बेटे अरविंद केजरीवाल जी को जेल से बाहर निकालने के लिए वोट देगी।

आप नेता आतिशी ने कहा कि, दिल्ली के लोग अरविंद केजरीवाल जी की प्यार करते है। लोगों को पता है कि, अरविंद केजरीवाल जी ही है जिन्होंने सरकारी स्कूलों को वर्ल्ड क्लास बनाकर आम लोगों के बच्चों को बेहतरीन शिक्षा दी। केजरीवाल जी ही है जिन्होंने दिल्ली के 2 करोड़ लोगों को अपना परिवार माना है और उनके लिए शानदार अस्पताल, मोहल्ला क्लिनिक की व्यवस्था की है, शानदार स्वास्थ्य व्यवस्था दी है। महिलाओं को फ्री बस यात्रा दी है, बुजुर्गों के तीर्थयात्रा पर जाने का सपना पूरा किया है। दिल्ली के लोग जानते है कि, केजरीवाल जी ही है जिन्होंने उनकी ज़िंदगी को बेहतर बनाने का काम किया है। ऐसे में अरविंद केजरीवाल जी की गिरफ़्तारी से लोगों में बहुत गुस्सा है। लोग जानते है कि अरविंद केजरीवाल जी की गिरफ़्तारी साजिश के तहत की गई है। केजरीवाल जी को झूठे आरोपों में गिरफ़्तार किया गया है। ऐसे में इस गिरफ़्तारी से लोग बहुत गुस्सा है। और इस गिरफ़्तारी का गुस्सा लोग अपने वोट के साथ दिखायेंगे, चुनावों में दिखायेंगे। इस लोकसभा चुनाव में लोग आम आदमी पार्टी को वोट देकर जितायेंगे। उन्होंने कहा कि, जब जब दिल्ली के लोगों की जरूरत रही तो केजरीवाल जी उनके हर दुख सुख में परिवार के सदस्य की तरह साथ खड़े रहे। आज जब अरविंद केजरीवाल जी को जरूरत है तो पूरी दिल्ली उनके साथ खड़ी है। आतिशी ने कहा कि, दिल्ली के लोकप्रिय मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जी को गिरफ़्तार कर मोदी जी और भाजपा ने बहुत बड़ी गलती की है। मोदी जी ने तो एक केजरीवाल को गिरफ़्तार किया है लेकिन आज दिल्ली के हर गली-मोहल्ले से हजारों केजरीवाल मोदी जी की तानाशाही का मुंहतोड़ जबाव देने के लिए निकल पड़े है। उन्होंने कहा कि, हर तानाशाह का अंत होता है और मोदी जी और भाजपा की ये गलती उनकी तानाशाही का अंत साबित होगा। अरविंद केजरीवाल जी को गिरफ़्तार कर उन्होंने खुद अपनी तानाशाही का अंत लिख दिया है।

सिसोदिया की जमानत याचिका पर जवाब के लिए जांच एजेंसियों को मिला समय

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली हाई कोर्ट ने बुधवार को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) और सीबीआई को पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया द्वारा दायर जमानत याचिका पर जवाब दाखिल करने के लिए चार दिनों का अतिरिक्त समय दिया। इससे पहले ट्रायल कोर्ट ने उनकी जमानत याचिका खारिज कर दी थी, जिसका विरोध करते हुए उन्होंने हाई कोर्ट में जमानत आवेदन दाखिल किया है। न्यायमूर्ति स्वर्ण कांता शर्मा की पीठ ने जांच एजेंसियों को मामले में जवाब दाखिल करने के लिए और समय देते हुए मामले में विस्तृत सुनवाई के लिए 13 मई को सूचीबद्ध किया है। प्रवर्तन निदेशालय की ओर से पेश वकील जोहेब हुसैन ने मामले में जवाब दाखिल करने के लिए और समय मांगा और अदालत को सूचित किया कि जांच अधिकारी मामले में एक और पूरक आरोप पत्र दाखिल करने की प्रक्रिया में हैं। पीठ ने बीते शुक्रवार को दोनों एजेंसियों को नोटिस जारी किया और मामले में उनसे जवाब मांगा था। इसके अलावा पीठ ने आवेदक मनीष सिसोदिया को सप्ताह में एक बार हिरासत में अपनी बीमार पत्नी से मिलने की अनुमति भी दी थी। सिसोदिया की न्यायिक हिरासत 21 मई तक बढ़ी : राउज एवेन्यू कोर्ट में बुधवार को दिल्ली के पूर्व उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया को वीडियो कान्फ्रेंसिंग के जरिए पेश किया गया। स्पेशल जज कावेरी बावेजा की अदालत ने उनकी न्यायिक हिरासत 21 मई तक के लिए बढ़ा दी है। इससे पहले 7 मई को अदालत ने सीबीआई मामले में उनकी न्यायिक हिरासत 15 मई तक बढ़ा दी थी। इस दौरान उन पर आरोप तय करने की प्रक्रिया पर भी 15 मई को ही सुनवाई होगी।

उत्तर रेलवे

आज़ादी का अमृत महोत्सव

ई-निविदा सूचना

रुचि की अभिव्यक्ति सूचना संख्या वरिष्ट मंडल अभियंता-छ/नई दिल्ली ई.ओ.आई.-01-2024 दिनांक 06.05.2024 भारत के राष्ट्रपति के लिए और उनकी ओर से, अधोहस्ताक्षरी 15.00 बजे 21/05/2024 तक निम्नलिखित कार्य के लिए इच्छुक व्यक्तियों, एनजीओ, धर्मार्थ संस्थानों, कॉर्पोरेट आदि के लिए रुचि की अभिव्यक्ति आमंत्रित करता है।

क्र. सं.	स्टेशन	लगभग । ट्रैक ऐपकी लंबाई	कार्य का विवरण
1.	नांगलोई	8000	ट्रैक के किनारे-किनारे कम ऊंचाई के पौधे लगाकर हरित आवरण/परिसर के विकास के लिए पाथवे स्टेशन के इष्टिकोण/परिसर का सौंदर्यीकरण।

1. इच्छुक प्रायोजक संगठनों/पार्टियों को सलाह दी जाती है कि वे अपना आवेदन ईमेल denivdli@gmail.com या डाक से भेजें।
2. इच्छुक व्यक्ति / पार्टियाँ / संगठन वेबसाइट पर जा सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए नीचे लिंक दिया गया है- https://nr.indianrailways.gov.in/viewsection.ins?lang=0&id=0,5,315,573,1099
   (i) कार्य सम्पादन के संबंध में दिशा निर्देश।
   (ii) निष्पादित किये जाने वाले समझौता ज्ञापन (एम.ओ.यू.) का विवरण।
   (iii) (मिमी) प्रत्येक स्टेशन पर उपरोक्त कार्य के लिए अपेक्षित रेखाचित्र/योजनाएँ।
   (iv) रेलवे की जमीन एम.ओ.आर. पत्र के आधार पर रेलवे के नियमों और शर्तों पर एम.ओ.यू. पर हस्ताक्षर करने के बाद ही सौंपी जाएगी।
3. इच्छुक संगठन/पार्टियाँ/व्यक्ति कृपया अधिक स्पष्टीकरण के लिए निम्नलिखित अधिकारियों से संपर्क कर सकते हैं।

क्र.सं.	स्टेशन	पदनाम	सेल नंबर
1.	नांगलोई	सहायक मंडल अभियंता/रोहतक	9729531220

4. आवंटित संगठन/पार्टी अधिकतम 10 वर्ग फुट क्षेत्र (अस्थायी) पर अच्छे उद्योग अभ्यास के अनुसार प्रासंगिक विवरण के साथ अपना नाम प्रदर्शित कर सकता है। विज्ञापन/प्रचार के लिए उन्हें कोई अतिरिक्त स्थान/सुविधा नहीं दी जाएगी।
5. अधिक प्रतिभागियों के मामले में लॉटरी प्रणाली अपनाई जाएगी। 1382/24

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें
@Pratahkiran
www.pratahkiran.com
नई दिल्ली, गुरूवार, 09 मई, 2024

श्री वैंकटेश्वरा विश्वविद्यालय में तनाव प्रबंधन पर एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला

प्रात: किरण ब्यूरो, इकरामुद्दीन मलिक

अमरोहा। श्री वैंकटेश्वरा विश्वविद्यालय/ संस्थान में स्ट्रेस मैनेजमेंट पर एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का शानदार आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में प्रतिभाग करते हुए रेल मंत्रालय, भारत सरकार के वरिष्ठ निदेशक एवं विख्यात लाइफ कोच श्री मनीष प्रताप सिंह ने संस्थान के शिक्षकों एवं छात्र- छात्राओं को जीवन में तनाव से मुक्ति पाने के तरीकों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए सुखद जीवन जीने के सिद्धांतों को समझाया। श्री वैंकटेश्वरा विश्वविद्यालय/ संस्थान के डा. सी. वी. रमन सभागार में तनाव प्रबंधन विषय पर आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारम्भ संस्थापक अध्यक्ष डा. सुधीर गिरि, मुख्य अतिथि रेल मंत्रालय, भारत सरकार के निदेशक श्री मनीष प्रताप सिंह, प्रतिकुलाधिपति डा. राजीव त्यागी, कुलसचिव डा. पीयूष पाण्डे आदि ने सरस्वती माँ की प्रतिमा के सन्मुख दीप-प्रज्ज्वलित करके किया। अपने सम्बोधन में मुख्य अतिथि रेल मंत्रालय, भारत सरकार के निदेशक एवं विख्यात जीवन प्रबन्धन गुरु श्री मनीष प्रताप सिंह ने कहा कि आज पूरे विश्व में दो-तिहाई लोग विशेष रूप से युवा पीढ़ी तनाव एवं अवसाद ग्रस्त है, जिसका मूल कारण अपने ऊपर कम विश्वास एवं दूसरों से एक्सपेक्टेशन (उम्मीद) है। हमने अपनी खुशियाँ दूसरों में तलाशनी शुरू कर दी है जब हमारी दूसरों से की गई उम्मीदें पूरी नही होती है तो हम तनाव एवं अवसाद में चले जाते है। उन्होंने सुखद जीवन के लिए ह्यस्वयं में विश्वास, समय प्रबन्धन जीवन के प्रति सकारात्मक नजरियाँ एवं राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय जरूरतों के मुताबिक स्वयं को अपग्रेड करने का मूलमन्त्र सिखाया और ध्यान (मेडिटेशन) को तनावमुक्ति का सबसे बड़ा टूल करार देते हुए सभी से इसको अपनाने की अपील की। राष्ट्रीय कार्यशाला को प्रतिकुलाधिपति डा. राजीव त्यागी, कुलसचिव डा. पीयूष पाण्डे आदि ने भी सम्बोधित किया। इस अवसर पर ग्रुप एडवाइजर श्री आर. एस. शर्मा, सीईओ अजय श्रीवास्तव, डीन विम्स डा. संजीव भट्ट, डा. मोहित शर्मा, डा. सबार्नद साहू, डा. आशुतोष सिंह, डा. राजेश सिंह, डा. दिव्या गिरधर, डा. एना एरिक ब्राउन, डा. अश्विन सक्सेना, डा. ओमप्रकाश गुसाई, मारूफ चौधरी, डा. नीतू सिंह, डा. मंजरी राणा, मार्केटिंग डायरेक्टर तरुण काम्बोज, आई.टी. हेड. विशाल शर्मा एवं राजीव सिंह, डा. एल.एस. रावत, कैंपस प्रबंधक एस.एस. बघेल अरुण गोस्वामी, शीलभद्र शर्मा, जनसंपर्क विभाग से प्रशांत दहिया एवं श्री राम गुप्ता के साथ मेरठ परिसर से निदेशक प्रताप चौधरी, मीडिया प्रभारी विश्वास राणा आदि लोग उपस्थित रहे।

11 साल से यह दिल्ली पुलिस को दे रहा था चकमा

- पहाड़गंज पुलिस ने आखिरकार गिरफ्तार किया

पहाड़गंज थाना की पुलिस टीम ने 11 साल से फरार चल रहे एक वांटेड को आखिरकार दबोच लिया है। जिसकी पहचान मोहम्मद खालिद के रूप में हुई है। यह पहले से मर्डर, लूट, धमकी देने और आर्म्स एक्ट के 9 मामलों में शामिल रहा है। यह गाजियाबाद, यूपी का रहने वाला है। इसे पुलिस ने हौजकाजी इलाके से गिरफ्तार किया है।

डीसीपी एम हर्षवर्धन ने बताया कि 2006 में इसके खिलाफ दरियागंज थाना में दर्ज मामले में तीस हजारी कोर्ट ने 11 साल पहले इसे भगोड़ा भी घोषित कर दिया था। उस समय से लगातार इसकी तलाश की जा रही थी। यह ठिकाना बदलकर बच रहा था। एसएचओ राजीव राणा झा की देखरेख में एएसआई राजीव तोमर, हेड कांस्टेबल राम अवतार की टीम ने टेक्निकल सर्विलेंस की मदद से इसके बारे में पता लगाने में कामयाब हुई। पुलिस टीम इसे गिरफ्तार कर लिया। यह पहले से दरियागंज, शाहदरा, न्यूज उस्मान, सीलमपुर, जामा मस्जिद, चांदनी महल और हौज काजी थाना के मामलों में शामिल रहा है।

बाकू एयरपोर्ट पर खुली पोल, वापस भेजा भारत

- डेढ़ लाख में फर्जी वीजा, आरोपी गिरफ्तार

संवाददाता

आईजीआई एयरपोर्ट की पुलिस टीम ने फेक वीजा के मामले में दिल्ली के एक एजेंट को गिरफ्तार किया है। जिसकी पहचान सैयद सरताज अहमद के रूप में हुई है। यह जसोला गांव, जामिया नगर, दिल्ली का रहने वाला है। डीसीपी उषा रंगनी ने बताया कि इसकी तलाश पुलिस को कई दिनों से थी। आरोप है कि इसने एक शख्स सलाउद्दीन को पिछले साल पहले थाईलैंड का वीजा बना कर दिया। फिर वहां जाने से रोककर इस साल मार्च में सलाउद्दीन को अजरबैजान के बाकू भेजा था। वहां से उसे वापस भारत डीपोट कर दिया गया, क्योंकि उसका वीजा में फजीर्वाड़ा पाया गया।

वापस दिल्ली आने पर आईजीआई एयरपोर्ट पर पुलिस ने सलाउद्दीन से पूछताछ की तो उसने बताया की वह उत्तर प्रदेश के बिजनौर का रहने वाला है। उसके पास से जो पासपोर्ट बरामद किया गया, उसमें एक पेज गायब था। उस मामले में पुलिस ने तहत मामला दर्ज करके जांच शुरू की। सलाउद्दीन को गिरफ्तार कर लिया गया, उसने बताया कि वह पांचवी पास है और अच्छे पैसे कमाने के लिए वह विदेश जाना चाह रहा था। पिछले साल वह नसीम अली नाम के एक एजेंट के संपर्क में आया था। जिसने विदेश भेजने के लिए डेढ़ लाख रुपए की मांग की। उसने पासपोर्ट और वीजा का इंतजाम कर दिया। लेकिन कुछ दिन के बाद अचानक उसने बोला कि अभी थाईलैंड जाना संभव नहीं है। इसलिए उसने फिर इस साल नसीम को अजरबैजान के बाकू जाने का इंतजाम किया। नसीम अली ने दूसरे एजेंट सैयद सरताज अहमद के सहयोग से फर्जी डॉक्यूमेंट का इंतजाम किया। सलाउद्दीन 3 मार्च को फ्लाइट से बाकू के लिए रवाना हुआ, लेकिन वहां जाने के बाद जब उसके डॉक्यूमेंट की जांच की गई तो फर्जी वाड़ा का पता चला और फिर उसे वापस भारत भेज दिया गया।

दो बार गोल्ड मेडलिस्ट रहे रेसलर को क्राइम ब्रांच ने दबोचा

- उत्तरी दिल्ली के तिमारपुर में की थी फायरिंग

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली स्टेट लेवल के रेसलर को क्राइम ब्रांच की टीम ने गिरफ्तार किया है। इसकी तलाश हत्या के प्रयास के मामले में दिल्ली की तिमारपुर पुलिस को पिछले महीने से ही थी। पुलिस के अनुसार गिरफ्तार आरोपी की पहचान सुमित के रूप में हुई है। यह दो बार स्टेट लेवल पर गोल्ड मेडल जीत चुका है। अप्रैल महीने में तिमारपुर इलाके में इसने अपने साथियों के साथ मिलकर विष्णु नाम के एक शख्स पर जानलेवा हमला किया था। जिसमें गोली चलाई गई थी, पीड़ित की किस्मत अच्छी थी कि उसको गोली लगी नहीं। फायरिंग के बाद सभी आरोपी मौके से फरार हो गए थे। जिसमें आरोपी सुमित के अलावा सागर, निखिल, देव और अनिकेत भी शामिल था।

पता चला कि दिल्ली से हरियाणा फरार होने वाला है डीसीपी सतीश कुमार ने बताया कि फरार आरोपियों के बारे में पुलिस टीम टेक्निकल सर्विलांस और लोकल इंफॉर्मेशन की वजह से तलाश कर रही थी। इसी दौरान हेड कांस्टेबल विकास डबास को इस रेसलर के बारे में एक इनफार्मेशन मिली। पता चला कि यह दिल्ली से हरियाणा फरार होने वाला है। पुलिस की नजर से बचने के लिए मुकरवा चौक से बस से हरियाणा जा रहा है। दो बार दिल्ली स्टेट लेवल पर गोल्ड मेडल जीत चुका है उस सूचना पर एसीपी विवेक त्यागी की देखरेख में इंस्पेक्टर सतीश मलिक की टीम ने मुकरबा चौक बस स्टॉप पर छापा मारा और वहां से सुमित को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस के अनुसार यह गवर्नमेंट स्कूल से आठवीं तक की पढ़ाई कर चुका है। यह रोशनआरा रोड के एक अखाड़ा से रेसलिंग सीखना शुरू किया था। दो बार दिल्ली स्टेट लेवल पर यह गोल्ड मेडल जीत चुका है।

21 अप्रैल को गर्ल फ्रेंड के चक्कर में चली थी गोली पूछताछ से पता चला कि इसके दोस्त सागर का विष्णु नाम के युवक से गर्लफ्रेंड को लेकर झगड़ा हुआ था। उसी का सबक सिखाने के लिए सुमित और सागर ने अपने साथियों के साथ मिलकर 21 अप्रैल को विष्णु पर गोली चलाई थी। लेकिन विष्णु की किस्मत अच्छी रही की गोली विष्णु को लगी नहीं और यह सभी वहां मौके से फरार हो गए थे।

पश्चिम विहार में की थी लाखों की लूट - महिला की हत्या

- आठ साल से फरार मास्टर माइंड को क्राइम ब्रांच ने दबोचा
- हरिद्वार - ऋषिकेश में नाम और पता बदलकर छुपता था

संवाददाता

बाहरी दिल्ली के पश्चिम विहार वेस्ट थाना इलाके में लूट और हत्या के मामले में वांटेड बदमाश को क्राइम ब्रांच की टीम ने गिरफ्तार कर लिया है। जिसकी पहचान सुमित उर्फ मुकेश उर्फ राहुल के रूप में हुई है। डीसीपी अमित गोयल ने बताया कि यह पहले से चोरी और स्नेचिंग के 21 मामलों में शामिल रहा है। चार मामलों में इसकी गिरफ्तारी के लिए वारंट भी इश्यू था।

क्राइम ब्रांच की टीम इसके बारे में पता लग रही थी। इसी दौरान हेड कांस्टेबल राहुल को इसके बारे में एक इंफॉर्मेशन मिल गई। उस सूचना के आधार पर एसीपी नरेश कुमार की देखरेख में इंस्पेक्टर पवन कुमार की टीम ने विजय विहार इलाके में ट्रैप लगाकर इसे गिरफ्तार कर लिया।

पुलिस के अनुसार जुलाई 2016 में पश्चिम विहार वेस्ट इलाके में घर में वारदात हुई थी। जिसमें एक महिला की हत्या करके वहां से ज्वेलरी और कैश लूटकर ले गए थे। उस मामले में पुलिस को सुमित की तलाश थी, इसे बाद में कोर्ट ने भगोड़ा भी घोषित कर दिया था। यह पता और नाम बदलकर छुपकर रह रहा था। इसने अपने सहयोगी के साथ मिलकर 8 साल पहले लूट मर्डर की वारदात को अंजाम दिया था। उस मामले में बाकी आरोपी गिरफ्तार हो गए थे, लेकिन सुमित हरिद्वार और ऋषिकेश में जाकर फरारी काट रहा था।

नेबसराय में हुई थी हत्या, चल रहा था फरार

- क्राइम ब्रांच द्वारा संगम विहार से गिरफ्तार

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

साउथ दिल्ली के नेबसराय थाना इलाके में पिछले साल गोली मारकर हुई हत्या के मामले में वांटेड चल रहे बदमाश को क्राइम ब्रांच की नई दिल्ली रेंज की टीम ने गिरफ्तार किया है। जिसकी पहचान कुणाल उर्फ भोला की रूप में हुई है। यह साउथ दिल्ली के दक्षिणपुरी इलाके का रहने वाला है। डीसीपी अमित गोयल ने बताया कि इसे हत्या के उस मामले में कोर्ट ने बाद में भगोड़ा घोषित कर दिया था। इसकी पिछले साल से नेब सराय पुलिस को तलाश थी। क्राइम ब्रांच की टीम भी टेक्निकल सर्विलांस और इनफॉरमर की मदद से पता लगाने में जुटी थी। इसी दौरान हेड कांस्टेबल धर्मेंद्र को कुणाल उर्फ भोला के बारे में एक जानकारी मिली। उस सूचना पर एसीपी उमेश बर्थवाल की देखरेख में इंस्पेक्टर रामपाल की टीम ने संगम विहार इलाके में छापा मारा और इसे गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ हुई तो पता चला कि जब यह नाबालिक था, तभी से यह आपराधिक वारदात में शामिल रहा है। यह करीब आठ साल पहले भी 2016 में भी अपने साथियों के साथ मिलकर एक शख्स को किडनैप करके उसके परिवार वालों से फिरौती की रकम मांगी थी। लेकिन जब वह रकम नहीं मिली तो इसने साथियों के साथ मिलकर उसकी हत्या कर दी थी। उस मामले में यह 5 साल तक जेल में रहा, 2022 में जेल से बाहर आया। उसके बाद यह कई वारदात को अंजाम दे चुका है। पिछले साल दोस्त का जब किसी के साथ झगड़ा था तो यह उसको समझने गया था। लेकिन बात वहां पर बनी नहीं तो गोली मारकर उस शख्स की हत्या कर दी थी। जिसमें यह फरार चल रहा था। इसके बाद कोर्ट ने इसे भगोड़ा घोषित कर दिया था।

गाड़ी की टक्कर से 62 साल के बुजुर्ग कांग्रेस नेता की मौत

- प्रशांत विहार पुलिस ने गाड़ी किया जप्त, आरोपी गिरफ्तार

संवाददाता

रोहिणी जिला के प्रशांत विहार थाना की पुलिस टीम ने हिट एंड रन मामले में फरार आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। जिसकी पहचान चिराग चौधरी के रूप में हुई है। यह रोहिणी सेक्टर 14 का रहने वाला है। डीसीपी डॉक्टर जीएस सिद्धू ने बताया कि 7 मई की सुबह रोहिणी इलाके में एक्सीडेंट की घटना हुई थी। जिसमें 62 साल के बुजुर्ग हरिकिशन जिंदल की मौत हो गई थी। मृतक जिंदल प्रशांत विहार इलाके के रहने वाले थे। जानकारी के अनुसार वह कांग्रेस के बुजुर्ग नेता थे, जो विधानसभा चुनाव भी लड़ चुके थे। वह रोजाना मॉर्निंग वॉक पर निकलते थे। उस मामले में पुलिस ने 250 से ज्यादा सीसीटीवी फुटेज खंगालकर गाड़ी का पता लगाया और इस एक्सीडेंट की वारदात को अंजाम देने वाले आरोपी को गिरफ्तार करके गाड़ी को भी जप्त कर लिया।

सड़क हादसे में कांग्रेस नेता की मौत

नई दिल्ली। रोहिणी इलाके में सोमवार की सुबह सैर पर निकले दिल्ली कांग्रेस के नेता हरि किशन जिंदल (62) की तेज रफ्तार कार की चपेट में आने से मौत हो गई। वह प्रशांत विहार में रहते थे। पुलिस ने केस दर्ज कर आरोपित कार चालक को गिरफ्तार कर लिया है। कार चालक की पहचान रोहिणी सेक्टर-14 निवासी चिराग चौधरी (24) के रूप में हुई है। पुलिस ने कार को भी जब्त कर लिया है। पूछताछ में कार चालक चिराग ने बताया कि सोमवार सुबह वह अपने कुछ दोस्तों को रोहिणी छोड़ने जा रहा था। इस बीच अचानक एक मोड़ पर कार से अपना नियंत्रण खो दिया और हादसा हो गया। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है। रोहिणी जिले के डीसीपी डॉ. गुर इकबाल सिंह सिद्धू बताया कि सोमवार सुबह करीब साढ़े छह बजे रोहिणी सेक्टर 14 में एक कार दुर्घटना होने के संबंध में प्रशांत विहार पुलिस को सूचना मिली। सूचना के आधार पर स्थानीय पुलिस मौके पर पहुंची तो पता चला कि घायल व्यक्ति को रोहिणी के बाबा साहेब अंबेडकर अस्पताल ले जाया गया है। जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मृतक की पहचान हरिकिशन जिंदल के रूप में हुई।

जानकारी के अनुसार हरिकिशन जिंदल परिवार के साथ प्रशांत विहार स्थित बंदा बहादुर सोसाइटी में रहते थे। वह 2020 में वजीरपुर इलाके से कांग्रेस पार्टी से विधानसभा का चुनाव भी लड़ चुके थे।

RML हॉस्पिटल में क्राइम ब्रांच साइबर एक्सपर्ट टीम पहुंची

- डॉक्टरों को बताया गया, किस तरह बचें साइबर फ्रॉड से
- स्पेशल सीपी, डीसीपी, एसीपी ने दी बारीकी से जानकारी

संवाददाता

दिल्ली पुलिस ने RML हॉस्पिटल के मेडिकल डायरेक्टर मेडिकल सुपरीटेंडेंट डॉ अजय के साथ मिलकर साइबर अवेयरनेस और साइबर सिक्योरिटी का एक अवेयरनेस प्रोग्राम का आयोजन किया। इस प्रोग्राम में क्राइम ब्रांच की स्पेशल सीपी शालिनी सिंह ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के द्वारा जुड़कर साइबर अवेयरनेस और सिक्योरिटी पर अपने विचार रखे। डीसीपी साइबर क्राइम राकेश पावरिया ने दिल्ली पुलिस की साइबर क्राइम और साइबर पुलिस स्टेशन की वर्किंग के बारे में बताया। दिन प्रतिदिन बढ़ने वाले साइबर क्राइम और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के द्वारा होने वाली ठगी से अवगत कराया। उन्होंने दिल्ली पुलिस के यूसर फ्रेंड्ली एप के बारे में भी जानकारी दी।

एसीपी साइबर क्राइम प्रभात सिन्हा और साइबर फोरेंसिक एक्सपर्ट सचिन कुमार ने साइबर क्राइम के बचाव के बारे में सभागार में मोजूद डाक्टरो को जागरूक किया। प्रभात सिन्हा को साइबर हैकिंग का और 8 सालों का सीबीआई में साइबर फ्रॉड के केसों का अच्छा अनुभव है। उन्होंने डिजिटल अरेस्ट, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, सैक्सटारशन, जूस जैकिंग, आधार कार्ड के मिसयूज के द्वारा साइबर क्रिमिनल के चंगुल में फंसने से बचाव के बारे में बताया।

डॉक्टर को बताया की यदि आपका मोबाइल खो जाता है, तो उसके आईएमईआई को लॉक करके आप अपने फोन को दोबारा कैसे प्राप्त कर सकते हैं। किसी का फेक न्यूड फोटो या वीडियो सोशल मीडिया अकाउंट पर वायरल हो रहा है, तो उसको कैसे ब्लॉक किया जाए।

कमला मार्केट में महिला को लूटा, CCTV फुटेज से 4 दबोचा

संवाददाता

कमला मार्केट थाना की पुलिस टीम ने महिला से लूटपाट के एक मामले का 24 घंटे के अंदर खुलासा करते हुए चार लुटेरों को गिरफ्तार किया है। इनकी पहचान सैयद हाशिम, मोहम्मद सलीम, फैजल और तोफेल के रूप में हुई है। यह सभी संगम विहार, हौजकाजी, तुर्कमान गेट और चांदनी महल के रहने वाले हैं। इनके पास से महिला से लूटा गया मोबाइल और वारदात में इस्तेमाल स्कूटी बरामद किया। डीसीपी एम हर्षवर्धन ने बताया कि एक महिला रात के समय अपने रिलेटिव के घर जा रही थी। इस दौरान लाल क्वार्टर के पास चार बदमाशों ने मिलकर उसके साथ लूटपाट की। वारदात को अंजाम दिया और उसका मोबाइल लूटकर भाग गए। विरोध करने पर धक्का देखकर उसे गिरा दिया। उस मामले में पुलिस टीम ने छानबीन शुरू की थी। सीसीटीवी फुटेज की मदद से वारदात को अंजाम देने वाले बदमाशों के बारे में पता लगाना शुरू किया।

जिसमें चार लोग नजर आए, पुलिस टीम में उनके बारे में जानकारी इकट्ठा शुरू की और इनफॉर्मर की मदद से सैयद हाशिम को मिंटो रोड कांप्लेक्स से गिरफ्तार किया। उसके पास से मोबाइल बरामद किया गया। फिर उसकी निशानदेही पर उसके साथी मोहम्मद सलीम को हौजकाजी से, फैजल को तुर्कमान गेट से और तोफेल को अजमेरी गेट से पकड़ा गया। वारदात में इस्तेमाल स्कूटी भी बरामद किया गया। आगे की कार्रवाई पुलिस टीम कर रही है।

छावला, नजफगढ़, बाबा हरिदास नगर में सेंधमारी

64 मामलों में शामिल 4 गिरफ्तार, 10 और खुले

द्वारका जिला के एंटी बरग्लरी सेल की पुलिस टीम ने चार शातिर सेंधमारों को गिरफ्तार किया है। इनके पास से काफी संख्या में गोल्ड की ज्वैलरी भी बरामद की गई है। इनकी गिरफ्तारी से 10 मामलों का खुलासा पुलिस ने किया है। जो इन्होंने बाबा हरिदास नगर, छावला, नजफगढ़, मोहन गार्डन आदि थाना इलाकों में दिया था। डीसीपी अंकित सिंह ने बताया कि गिरफ्तार किए गए सेंधमारो की पहचान शकील, रंजीत राजेंद्र और तिलक राज के रूप में हुई है। यह सभी शाहबाद डेयरी, नांगलोई, नरेला और सुलेमान नगर इलाके के रहने वाले हैं। इंस्पेक्टर विवेक मंडोला की देखरेख में सब इंस्पेक्टर विनोद, हेड कांस्टेबल नरेश, कृष्ण, सोनिया, सुभाष और हेमंत की टीम ने सीसीटीवी फुटेज की मदद से पता लगाकर इनको गिरफ्तार किया। पुलिस ने कार की बैटरी भी बरामद की है। पूछताछ में पता चला कि शकील उर्फ राहुल पहले से 14 मामलों में शामिल रहा है। जबकि राजेंद्र उर्फ महाराज 24 मामलों को अंजाम दे चुका है। इसका तीसरा साथी रंजीत भी 29 मामलों में शामिल रहा है।

सैम पित्रोदा के बयान को गलत तरीके से पेश कर रही भाजपा : देवेंद्र यादव

नई दिल्ली। कांग्रेस के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष देवेन्द्र यादव ने बुधवार को कहा कि कांग्रेस पार्टी इंडियन ओवरसीज कांग्रेस के अध्यक्ष सैम पित्रोदा की भारतीयों पर की गई टिप्पणी को गलत तरीके से पेश कर रही है। यादव ने मीडिया से बातचीत में कहा कि सैम पित्रोदा का बयान किसी को अपमानित करने वाला नहीं है। सैम पित्रोदा के बयान को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) उल्टा ले रही है। उल्लेखनीय है कि सैम पित्रोदा ने कहा था कि पूर्व के लोग चीनी जैसे दिखते हैं, दक्षिण में लोग अफ्रीकी जैसे दिखते हैं। सैम पित्रौदा की इस टिप्पणी पर यादव कहते हैं, यह इस देश की सुंदरता है। विभिन्न समुदायों, धर्मों के लोग और अलग-अलग भौगोलिक परिस्थितियां रहती हैं।

विकास एन.जी.ओ. ने पचास टी.बी रोगी लिए गोद, वितरण की पोषण पोटली

प्रात: किरण संवाददाता, नादिर त्यागी

स्योहारा। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र स्योहारा में अधीक्षक डॉक्टर बी के स्नेही और डॉक्टर संजय विश्कर्मा तथा डॉ नोमान मारूफ ने अपने हाथो से टीबी के मरीजों को पोषण पोटली वितरित की। इस अवसर पर प्रभारी डॉ स्नेही और डॉ संजय विश्कर्मा ने बताया कि विश्व कल्याण आगम संस्थान (विकास) एनजीओ के डॉक्टर नोमान मारूफ के द्वारा 50 टीबी के मरीजों को जिनका उपचार निशुल्क अस्पताल से चल रहा है को 6 माह के लिए गोद लिया गया है । इन सभी मरीजों को आज पोषण आहार पोटली वितरित की गई। और आगामी 6 माह तक भी नियमित रूप से इन्हे ये पोषण पोटली निःशुल्क उपलब्ध करवाई जायेगी। इस पोषण पोटली मे चना,सोयाबीन, मूंफली ,गुड , प्रोटीन डाइट इत्यादि शामिल है।इस दौरान सीएचसी स्योहारा के स्वास्थ्य विभाग के भी कर्मचारी उपस्थित रहे।इस दौरान सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र स्योहारा अधीक्षक डॉक्टर बी के स्नेही ने डॉ नोमान मारूफ और विकास एनजीओ के सभी सदस्यों की सराहना की ओर बताया कि सरकार ने 2025 तक टीबी को खत्म करने की ठानी है। टीबी एक बैक्टीरिया से होने बाली बीमारी है। ये बीमारी हवा से फेल सकती है टीबी ग्रसित मरीजों को हर जगह नहीं थूकना चाहिए। थूक में बैक्ट्रिया होने पर दूसरे लोग प्रभावित हो सकते है।और जिन लोगो की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होती है जैसे एड्स के मरीज , शुगर के मरीज ,गुर्दे के मरीज जल्द ही टीबी से ग्रसित हो सकते है। टीबी की सभी जांचे बलगम की जॉच ,एक्सरे ,खून की जांचे आदि सरकार द्वारा निशुल्क अस्पतालों में करवाई जाती है।आप लोग जिन्हें 2 हफ्ते से ज्यादा समय से खांसी,बुखार, बलगम में खून आना, वजन कम होना, रात को पसीना आना ,भूख न लगना आदि लक्षण हो तो तत्काल पास की सरकारी अस्पताल में अपनी बलगम की जांच अवश्य करवा ले , टीबी होने पर सरकारी अस्पताल से निशुल्क दबाए दी जाती है ।साथ ही पोषण डाइट के लिए 500 रुपए हर माह डीबीटी से मरीज के खाते में भी भेजे जाते है। सीएचसी स्योहारा में टीबी लेब में जांच की सुविधा उपलब्ध है।

आरएमएल में शुरू हुई बीपी-मधुमेह की स्क्रीनिंग

नई दिल्ली। कम उम्र के युवाओं में भी सामने आ रहे मधुमेह और उच्च रक्तचाप (बीपी) के मामलों का समय पर पता लगाने के लिए डॉ. राम मनोहर लोहिया अस्पताल में बुधवार को स्क्रीनिंग शुरू हुई। इस मधुमेह और उच्च रक्तचाप स्क्रीनिंग सेंटर का उद्घाटन स्वास्थ्य मंत्रालय की अतिरिक्त सचिव रोली सिंह ने की। इस मौके पर अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अजय शुक्ला, एंडोक्रिनोलॉजी विभाग की प्रमुख डॉ. बिंदु कुलश्रेष्ठ, सामुदायिक चिकित्सा विभाग की प्रमुख डॉ. नीलम रॉय सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे। इस मौके पर डॉक्टरों ने बताया कि मधुमेह और उच्च रक्तचाप की समस्या तेजी से बढ़ रही है। यह एक छुपा हुआ खतरा है। यदि इसे समय पर पकड़ा नहीं गया तो यह शरीर में दूसरी समस्या को बढ़ा सकता है। डॉ. बिंदु कुलश्रेष्ठ और डॉ. नीलम रॉय ने कहा कि स्क्रीनिंग सेंटर की मदद से बड़े स्तर पर लोगों में इस रोग की पकड़ हो सकेगी। अभी देखा गया है कि काफी लोग खुद को सामान्य मानते हैं, लेकिन जांच में उनमें रोग मिल जाता है। अस्पताल में ऐसे काफी रोगी मिल रहे है। इस समस्या को देखते हुए यह सेंटर शुरू किया गया है। उद्घाटन के अवसर पर आम जनता के बीच मधुमेह और उच्च रक्तचाप की जांच के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए नुक्कड़ नाटक भी किया गया।

जेल का जवाब वोट से अभियान के दूसरे चरण की शुरूआत 13 मई से: गोपाल राय

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी (आप) लोकसभा चुनाव के लिए ह्यजेल का जवाब वोट से अभियान के दूसरे चरण की शुरूआत 13 मई से करेगी और इसके तहत राष्ट्रीय राजधानी की उन चार संसदीय सीट पर महिला संवाद और ट्रेड टाउन हॉल जैसे कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे जहां पार्टी ने अपने उम्मीदवार खड़े किए हैं। आप की दिल्ली इकाई के संयोजक गोपाल राय ने बुधवार को एक प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि पार्टी अबतक घर-घर प्रचार, अनेक संकल्प सभाएं और रोड शो का आयोजन कर चुकी है जिनमें मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल ने शिरकत की थी। उन्होंने कहा, अभियान के तहत हम अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के खिलाफ घर-घर गए। अब अभियान का दूसरा चरण शुरू होगा जो 13 से 23 मई तक आयोजित किया जाएगा। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने दिल्ली की आबकारी नीति से जुड़े कथित धन शोधन के मामले में केजरीवाल को गिरफ्तार किया है। अभियान के अगले चरण में, आप पूर्वी दिल्ली में ट्रेड टाउन हॉल, नई दिल्ली में महिला संवाद, दक्षिण दिल्ली में पूर्वांचल संगम तथा पश्चिम दिल्ली में ग्रामीण पंचायत का आयोजन करेगी। राय ने बताया, ये चार अहम कार्यक्रम हैं जिनका चुनाव पर बड़ा असर पड़ता है। हम चार कार्यक्रमों की इन इलाकों से शुरूआत करेंगे और फिर उन्हें अन्य निर्वाचन क्षेत्रों में लेकर जाएंगे। मिसाल के तौर पर, महिला संवाद पूर्वी दिल्ली में भी होगा। हम सिर्फ इसे नई दिल्ली सीट से शुरू कर रहे हैं। कांग्रेस के साथ सीट बंटवारे के तहत आप ने दिल्ली की चार लोकसभा सीट पर अपने उम्मीदवार खड़े किए हैं जबकि तीन पर कांग्रेस ने अपने प्रत्याशी उतारे हैं। दिल्ली में लोकसभा चुनाव के छठे चरण के तहत 25 मई को वोट डाले जाएंगे।

संक्षिप्त खबरें

छापेमारी में गोदाम से नकली सीमेंट बरामद

सराय। थाना क्षेत्र के शीतल भकुरहर गांव से एक सीमेंट गोदाम में छापेमारी कर विभिन्न कंपनियों के सीमेंट, दो प्रेशर मशीन और खाली सीमेंट का नया रैपर बरामद नकली सीमेंट फैक्ट्री का उद्भेदन किया है। बताया गया कि पुलिस ने छापेमारी में गोदाम से अल्ट्रा टेक सुपर सीमेंट का खाली रैपर बांगूर जंगरोधक सीमेंट का रैपर, डालमिया ढलाई एक्सपर्ट डीएसपी सीमेंट का रैपर, अल्ट्राटेक प्रीमियम सीमेंट का भरा हुआ बोरा, कंक्रीटो सीमेंट का भरा हुआ बोरा, बांगूर जंगरोधक सीमेंट का भरा हुआ बोरा, डालमिया डीएसपी सीमेंट का भरा हुआ बोरा, अंबुजा सीमेंट का भरा हुआ बोरा समेत कुल 3573 बोरे नकली सीमेंट बैग जब्त किया है।

मुखिया की स्वीकृति पर मिलेगा अंत्येष्टि का लाभ

जमुई/गिद्धौर। कबीर अंत्येष्टि अनुदान योजना का लाभ लेने के लिए अब मृत्यु-प्रमाण पत्र की आवश्यकता नही होगी।के वल मुखिया की ही स्वीकृति पर परिजनों को लाभ की राशि मिलेगी।बिहार सरकार अधिक से अधिक लोगों को योजना से लाभ मिल सके।इसको देखते हुए मृत्यु-प्रमाण-पत्र अनिवार्यता ही अब समाप्त कर दी है।ज्ञात हो कि कबीर अंत्येष्टि अनुदान योजनांतर्गत बीपीएल परिवार के सदस्यों के मृत्यु के उपरांत मृतक के आश्रित को सहायता के रूप में तीन हजार रुपए तत्काल देने का प्रावधान है।योजना के भुगतान को लेकर अब से पहले मृतकों का निबंधन होना आवश्यक था।यही वजह था कि योजना के तहत लाभ देने में स्वीकृति के क्रम में मृत्यु प्रमाण पत्र की मांग अनिवार्य रूप से लाभुकों से की जाती थी।जिसकी वजह से लाभुकों को राशि प्राप्त करने के लिए मृत्यु प्रमाण-पत्र बनाने तक का इंतजार करना पड़ता था। लेकिन अब ऐसा नही होगा।बीडीओ ने बताया कि नए नियम के तहत अब आवेदन पत्र पर मुखिया द्धारा सत्यापित किये जाने के बाद राशि देने की प्रक्रिया पूरी की जाएगी।

गांव वाले ने कहा अपनी जमीन नहीं देंगे... 'खजाना' वाली भूमि नहीं छोड़ेंगे, अफसरों की बड़ी टीम मनाने में जुटी

प्रात: किरण, संवाददाता

जमुई जिले के सिकंदरा इलाके के जिस मंजोष गांव में लौह अयस्क मैग्नेटाइट का भंडार मिला है, लेकिन यहां के लोग माइनिंग के लिए जमीन देने से इनकार कर दिया है। गांव वाले एक होकर बैठक कर अधिकारियों को आवेदन देते हुए कह दिया है कि वे लोग खनन के लिए अपनी जमीन किसी हाल में नहीं देंगे।

जानिये इसकी वजह क्या है

लौह अयस्क के खनन के लिए नीलामी के पहले जमीन अधिग्रहण को लेकर गांव पहुंचकर अधिकारियों ने ग्रामीणों के साथ की बैठक। मंगलवार की शाम इस बैठक में गांव के सैकड़ों लोग शामिल हुए। यहां ग्रामीणों ने लोहा निकालने के लिए अपनी जमीन और घर देने से मना कर दिया। गांववालों का सीधे कहना है कि वे लोग सदियों से यहां रहते आ रहे हैं लोहा के लिए वे लोग विस्थापित नहीं होंगे, अपने घर और उपजाऊ जमीन को हाथ से नहीं जाने देंगे। बताते चलें कि बीते दिनों बिहार सरकार के खान एवं भूतत्व विभाग के सचिव धर्मेंद्र सिंह ने यह जानकारी दी थी कि इस इलाके में लौह अयस्क का खजाना है। जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के द्वारा कराए गए सर्वेक्षण में सिकंदरा इलाके में लौह अयस्क मैग्नेटाइट के दो ब्लॉक मंजोष और भट्ठा गांव में मिले हैं। मंजोष गांव में 45 मिलियन टन लौह अयस्क है जिसका मार्केट वैल्यू 2500 करोड़ रुपये का है, जबकि भट्ठा में 1 हजार करोड़ का लौह अयस्क है, जिसका माइनिंग के लिए नीलामी की प्रक्रिया की जा रही है। इन गांव का जमीन अधिग्रहण के लिए भूमि का वर्गीकरण किया जा रहा है। लोहे के माइनिंग के लिए इस गांव में 85 हेक्टेयर जमीन अधिग्रहण करने के लिए चिन्हित किया है। भूमि के वर्गीकरण के लिए सर्वे का ग्रामीण विरोध करते हुए जमीन देने से मना कर रहे हैं। जिसको लेकर कई अधिकारी मंगलवार की शाम गांव पहुंचे थे। गांव वालों को समझने के लिए जिले के अधिकारी मंजोष पहुंचे, जिसमें एडीएम, उप विकास आयुक्त, जिला खनन पदाधिकारी अनुमंडल अधिकारी, भूमि उप समाहर्ता समेत और भी कई लोग थे। लगभग 3 घंटे चली ग्रामीणों के साथ बैठक के बाद गांववालों ने अधिकारियों को आवेदन देते हुए सीधे तौर पर कह दिया कि वे लोग किसी भी हाल में गांव से नहीं हटेंगे ना तो वे लोग अपना घर छोड़ेंगे और ना ही अपनी जमीन। गांव के लोगों का सीधे तौर पर कहना था कि वे लोग मर जाएंगे, लेकिन विस्थापित नहीं होंगे। सदियों से यहां रहते आ रहे हैं, उनकी जमीन उपजाऊ है और लोहा निकालने के लिए सरकार उन्हें विस्थापित नहीं कर सकती। बैठक के बाद जिले के उप विकास आयुक्त सुमित कुमार ने बताया कि ग्रामीणों के मन मे कई तरह की आशंकाएं हैं, जिन्हें दूर करने के लिए बैठक की गई है। उन आशंकाओं और परेशानी को दूर करने के लिए पूरी कोशिश की गई है, सरकार ग्रामीणों के साथ है, सरकार कल्याणकारी होती है. कल्याण के दायरे में जो भी आएगा वह निर्णय लिया जाएगा।

प्रधानमंत्री का बिहार के लिए समय देना गर्व की बात:चिराग

- कार्यालय उद्घाटन कार्यक्रम में सुनाया खरगोश-कछुआ की कहानी

प्रात: किरण, संवाददाता

हाजीपुर। हाजीपुर सुरक्षित लोकसभा से एनडीए समर्थित लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास के प्रत्याशी सह राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान हाजीपुर स्थित डाकबंगला रोड में मंगलवार के देर शाम राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के चुनाव प्रधान कार्यालय का उद्घाटन फीता काट कर की। उद्घाटन के दौरान उपस्थित कार्यकर्ता को संबोधित करते हुए श्री चिराग ने अपने कार्यकताओं को कड़ी नसीहत भी दे दिया है और कार्यकताओं को बचपन वाली खर्गोश और कछुए की कहानी सुना डाला। चिराग ने कहा कि खरगोश जानता था हम रेस जीत रहे हैं यह सोचकर विश्राम करने लगा और कछुए ने बाजी मार ली। इसलिए विश्राम नहीं करना है बल्कि आने वाले दस बारह दिन चुनौतियों से भरें हुए हैं और दुश्मन को कभी भी कमजोर नहीं समझना चाहिए दुश्मन हमेशा आपके एक कमजोर पल का इंतजार करता है और उसकी कमजोर पल में आप पर हावी होने का प्रयास करता है। इसीलिए कमजोर पल को कभी भी नहीं आने देना है ।कोई भी लड़ाई हल्की नहीं होती है ,कोई चुनौती हल्की नहीं होती है ।निश्चिंत होकर नहीं बैठना है यह बातें सिर्फ हाजीपुर के लिए नहीं बल्कि पूरे बिहार के लिए है। पत्रकारों द्वारा पूछे गए सवाल का जवाब देते श्री चिराग ने कहा कि कुछ लोग बोल रहे हैं कि क्या पीएम बार-बार बिहार आ रहे हैं ऐसे लोगों को समझना चाहिए कि जो व्यक्ति स्वयं राष्ट्रीय स्तर पर गठबंधन का नेतृत्व कर रहा हो वह बिहार का कितना समय दे रहे हैं कि हमारे लिए गर्व की बात है। विपक्ष के एक दो नेता ही हर जगह जा रहे हैं बाकी लोग कहां है ।चुनाव कार्यालय के उद्घाटन के मौके पर पूर्व सांसद रामकिशोर सिंह, पूर्व विधायक सतीश राय,लोकसभा प्रभारी अरविन्द सिंह, जिला प्रभारी अशरफ अंसारी, युवा प्रदेश अध्यक्ष वेद प्रकाश पाण्डेय,प्रदेश उपाध्यक्ष रालोमो कमल प्रसाद सिंह,भाजपा जिला अध्यक्ष प्रेम सिंह कुशवाहा, जदयू जिला अध्यक्ष सुभाष चंद्र सिंह, रालोमो जिला अध्यक्ष लालदेव राम, हम (सेक्कूलर) जिला अध्यक्ष अरविन्द पासवान, लोजपा जिला अध्यक्ष संजीव सिंह,पूर्व जिला भाजपा अध्यक्ष संजय सिंह, विनोद कुमार राय,अवधेश सिंह,संतोष शर्मा, मनोज सिन्हा, इंदल पासवान,राकेश पासवान, संतोष स्वराज,सहित एनडीए के कार्यकर्त्ता उपस्थिति थे।

गिद्धौर के तारडीह में डायन का आरोप लगाकर महिला के साथ किया मारपीट

प्रात: किरण, संवाददाता

गिद्धौर/जमुई। गिद्धौर थाना क्षेत्र अंतर्गत गंगरा पंचायत के तारडीह गांव में एक महिला पर डायन का आरोप लगाकर जानलेवा तरीके से मारपीट किया गया। महिला को गंभीर घायलाअवस्था में गिद्धौर के दिग्विजय सिंह सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया। घायल महिला अनीता देवी के पति बिनोद दास ने बताया कि वह काम करने गया था। इसी दौरान उसके लड़के ने आकर बताया कि घर मे मां के साथ मारपीट की जा रही है। कामदेव, ओंकार दास, सोनिया देवी, लड़की श्वेता घर के भीतर खींचकर ले गई और चारों ने मिलकर मारपीट की। वहीं दूसरे पक्ष से ओंकार रविदास की पत्नी सोनी देवी ने कहा कि मेरे भैंसुर बिनोद दास, गोतनी अनीता देवी और गोतनी के भाई मुकेश ने मारपीट की है। हम बैंगलोर में थे। इसी दौरान 22 अप्रैल को आवेदन दिया गया। जिसपर हम गांव आये तो बोले कि बिना गुनाह-कुसूर का आवेदन क्यूं दिया? देवर ने समझाया कि आवेदन देने से कुछ नहीं होता है तो हम शांत रह गए। एक दिन गल्लम गाली उधर से की गई तो हम इसके लिए मना किये और कहे कि मेरी बेटी को भी नहीं गाली दीजिये। जिसपर उसने कहा कि आपको यहां रहने नहीं देंगे। हमने कहा कि अच्छा वो तो देखेंगे कि आप नहीं रहने देंगे तो आप समझियेगा। इसपर मेरे भैंसुर, गोतनी और गोतनी के भाई ने मारपीट की, जिसमें मेरा सर फूट गया है। वहीं मामले को लेकर दोनों पक्षों की ओर से गिद्धौर थाना में आवेदन दिया गया है। पुलिस अग्रेतर कार्रवाई हेतु मामले के अनुसंधान में जुटी है।

14वीं पुण्यतिथि पर श्रद्धा से याद किए गए तेज प्रताप चौहान

प्रात: किरण, संवाददाता

हाजीपुर। सदर प्रखंड के बलवा कुंवारी स्थित लोक सांस्कृतिक चेतना मंच पर आयोजित भावपूर्ण श्रद्धांजलि सभा में तेज प्रताप चौहान के तैल चित्र पर श्रद्धा सुमन अर्पित किया गया। श्रद्धांजलि सभा की अध्यक्षता लोक सांस्कृतिक चेतना मंच के सचिव विजय प्रताप सिंह ने की। जबकि संचालन अनिल सिंह फौजी ने किया। श्रद्धांजलि सभा में मौजूद सभी गनमान लोगों ने तेज प्रताप चौहान के तैल चित्र पर पुष्पांजलि कर अपनी अपनी श्रद्धा सुमन अर्पित की। इस मौके पर मुख्य रूप से मौजूद चौहान जी के करीबी रहे पूर्व सांसद प्रतिनिधि अवधेश कुमार सिंह ने चाचा चौहान के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उन्होंने सन 1857 के योद्धा बाबू वीर कुंवर सिंह के असमरणीय एवं क्रांतिकारी गौरव गाथा को जन-जन तक पहुंचने का काम किया चाचा चौहान का समाज के युवाओं को दिया संदेशों को स्मरण कराये। जिंदा कॉम अपने पूर्वजों के स्मृति, शौर्य, पराक्रम, एवं उनकी अविस्वर्णी, योगदान को युग युगांतर तक संयोजक कर रखते हैं। वहीं लोजपा नगर अध्यक्ष मनोज सिन्हा ने कहा तेज प्रताप चौहान अलौकिक व्यक्ति के धनी थे उन्होंने अपना सारा जीवन समाज कल्याण को समर्पित कर दिया उनकी कमी हमेशा महसूस होती रहेगी। अंत में धन्यवाद ज्ञापन उनके पुत्र ज्ञान प्रताप चौहान ने किया। श्रद्धांजलि सभा में यह रहे मौजूद परमानंद सिंह, जनार्दन तिवारी, अमर, प्रताप, वीर बहादुर सिंह, कृष्ण कुमार, तारक चौहान, चुनचुन पटेल, प्रिंस चौहान, कुणाल राज, वेद, युवराज, अभिषेक कुमार सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे।

योजना-मैट्रिक पास को 10 हजार तो इंटरमीडिएट को मिलेगी 25 हजार की राशि

- 15 मई तक भरे जाएंगे कन्या उत्थान योजना के फॉर्म

प्रात: किरण, संवाददाता

जमुई/गिद्धौर। जिले में इंटरमीडिएट का परीक्षा परिणाम घोषित हो चुका है। छात्र-छात्राएं स्नातक परीक्षा में नामांकन कराने में जुटे हुए हैं।हालांकि बेटियों की पढ़ाई में कोई व्यवधान न हो,तथा अपनी पढ़ाई अनवरत जारी रख सके। इसको लेकर कन्या उत्थान योजना शुरू की गई है। जिसको लेकर ऑनलाइन आवेदन शुरू कर दी गई है। योजना के लाभ के लिए बिहार बोर्ड से इंटरमीडिएट में उत्तीर्ण छात्राएं ही 15 मई तक आवेदन कर सकती है। बता दें की मुख्यमंत्री बालक व बालिका प्रोत्साहन योजना के तहत प्रथम श्रेणी से मैट्रिक पास छात्र-छात्राओं के लिए पोर्टल पर आवेदन की प्रक्रिया चल रही है।इसके साथ ही अनुसूचित जाति व जनजाति की इंटर प्रथम व द्वितीय श्रेणी से उत्तीर्ण छात्राएं भी आवेदन कर सकती है।ऑनलाइन आवेदन करने की अंतिम तिथि 15 मई ही निर्धारित है। मैट्रिक पास को 10 हजार तो इंटरमीडिएट को मिलेगी 25 हजार की राशि मुख्यमंत्री बालक व बालिका प्रोत्साहन योजना के तहत आवेदक को 10 हजार रूपए की प्रोत्साहन राशि दी जाती है।इसके साथ ही कन्या उत्थान योजना के तहत पात्र आवेदकों को 25 हजार रूपए की राशि सरकार द्वारा दी जाएगी।मुख्यमंत्री मेधावृति योजना के तहत छात्राओं को 8 हजार रूपए की प्रोत्साहन राशि दी जाती है। इंटरमीडिएट के परिणाम जारी होने के समय अविवाहित का देना होगा घोषणापत्र आवेदन के लिए निम्न कागजात जरूरी आवेदन के लिए पात्र वैसे आवेदक है, जिन्होंने 2024 में इंटरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण की है।आवेदन के साथ आवेदक को अपनी शैक्षणिक प्रमाण पत्र,आधार कार्ड,बैंक पासबुक जो आधार से लिंक हो,जाति,आय,निवास प्रमाण पत्र, दो पासपोर्ट साइज फोटो, मोबाइल नंबर एवं ई-,मेल आईडी संलग्न करना होगा। आवेदन की प्रक्रिया पूर्ण होने पर आवेदन की जांच विभाग द्वारा की जाएगी।इसके बाद खाते में राशि भेजी जाएगी। अविवाहित होने का देना होगा प्रमाण पत्र बता दे छात्राओं के इस योजना का लाभ लेने के लिए घोषणा करना होगा कि इंटर परिणाम जारी होने के समय वे अविवाहित थी।इसके साथ ही बिहार की निवासी हूं।अपना आधार संख्या स्वेच्छापूर्ण दे रही हूं।इसके बाद आवेदन की प्रक्रिया शुरू होगी।जिला चयन करने के साथ नाम,पिता का नाम,माता का नाम,जन्म तिथि,इंटर में प्राप्त अंक के साथ वैवाहिक स्थिति और मोबाइल नंबर दर्ज करने पर ओटीपी सत्यापित करना होगा।

अज्ञात चोरों ने की एक दुकान में लाखों रुपए की चोरी

प्रात: किरण, संवाददाता

जमुई/गिद्धौर थाना क्षेत्र के गिद्धौर बाजार में संचालित डी.के.डिजिटल स्टूडियो दुकान में बीती रात्रि बुधवार को चोरों द्वारा दुकान के खपरैल का छप्पर फाड़कर हजारों रुपये के बेशकीमती सामानों सहित नकदी की चोरी कर लेने का एक मामला प्रकाश में आया है। जानकारी के अनुसार गिद्धौर बाजार में बंदर छाप गली में मेहता खाद भंडार के समीप डी के डिजिटल स्टूडियो संचालित दिनेश कुमार के डिजिटल स्टूडियो दुकान के खपरैल का छप्पर फाड़ कर नकदी चार हजार पांच सौ रुपए काउंटर पार रखा कंप्यूटर, प्रिंटर, डीएसएलआर कैमरा सरकारी शिक्षकों का कुछ कागजात सहित कई अन्य सामानों की चोरी कर ली। घटना को लेकर पीड़ित दुकानदारों ने जानकारी देते हुए बताया कि रोज की तरह हम दुकानदार अपना अपना दुकान बंद कर घर चले गए।जब अहले सुबह गुरुवार को दुकान खोला तो देखा कि दुकान का छत का खपरैल का छप्पर उखाड़ कई जरूरी सामान गायब है।वही थानाध्यक्ष रीता कुमारी ने बताया कि पीड़ित दिनेश कुमार द्वारा लिखित आवेदन दिया गया है।मामला दर्ज कर जांच पड़ताल की जा रही है।

तीसरी पुण्यतिथी पर श्रद्धापूर्वक याद किए गए पत्रकार सह समाजसेवी दिवंगत बलराम सिंह

प्रात: किरण, संवाददाता

महुआ।महुआ प्रखंड क्षेत्र के सिंघाड़ा उत्तरी पंचायत के सिंघाड़ा गांव में पत्रकार सह समाजसेवी दिवंगत बलराम सिंह के तीसरी पुण्यतिथि पर श्रद्धांजली सभा का आयोजन किया गया।इस श्रद्धांजली सभा की अध्यक्षता बृज किशोर सिंह एवं संचालन सुनील कुमार सिंह ने किया। इस अवसर पर उपस्थित लोगों ने दिवंगत बलराम सिंह के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें भाव पूर्ण श्रद्धांजलि दी। इस श्रद्धांजली सभा में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने कहा कि एक बेबाक पत्रकार थे। उन्होंने जनमानस की हर समस्या को अपने कलम के माध्यम से लोगों के समक्ष रखा तथा उसका निराकरण भी कराया। वे जब तक जीवित रहे वे हमेशा समाज की समस्याओं को लेकर संघर्षरत रहे हैं। वे जीवंत पत्रकारिता के एक अदभुत नमूना थे। वक्ताओं ने दिवंगत पत्रकार बलराम सिंह के द्वारा बताए गए मार्गों पर चलने एवम अनुकरण करने का भी संकल्प दोहराया।इस कार्यक्रम में प्रोफेसर संजय कुमार सिंह, प्रोफेसर पीएम सिंह, प्रोफेसर सुरेश सिंह, प्रोफेसर अरविंद झा, सेवानिवृत प्राचार्य प्रोफेसर रघुवंश प्रसाद सिंह, प्रमोद सिंह,उमेश सिंह, सुधीर मालाकार, राजकुमार सिंह, धर्मेंद्र सिंह, संजय सिंह, अनिल सिंह उपेंद्र व्यास मोहम्मद इरशाद, शंभू सदाशिव, राजेश मिश्रा, विपिन कुमार, दिलीप कुमार, कामेश्वर चौधरी, प्रोफेसर सरोज कुमार सिंह उर्फ लाला सिंह आदि के साथ साथ अनेकों गणमान्य, बुद्धिजीवी समाजसेवी और स्थानीय लोग भी उपस्थित थे।

हाजीपुर लोकसभा क्षेत्र के लिए स्टैंडिंग कमेटी की बैठक आयोजित

प्रात: किरण, संवाददाता

हाजीपुर लोकसभा आम निर्वाचन, 2024 के मद्देनजर आज समाहरणालय सभागार में जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह जिलाधिकारी वैशाली श्री यशपाल मीणा की अध्यक्षता में स्टैंडिंग कमेटी की 25 वीं बैठक हुई। बैठक में पुलिस अधीक्षक श्री हर किशोर राय भी मौजूद थे।

जिला पदाधिकारी ने कमिटी के सदस्यों को बताया कि आज हाजीपुर लोक सभा क्षेत्र के लिए ईवीएम का द्वितीय रेंडमाइजेशन प्रेक्षक महोदय और सभी अभ्यर्थियों और उनके प्रतिनिधियों की उपस्थिति में हुई। इस अवसर पर जिला पदाधिकारी ने कहा कि हम लोग प्रत्येक चरण में किए जा रहे सभी कार्यों से सभी दलों/उम्मीदवारों को समय-समय पर अवगत कराते जा रहे हैं। रेंडमाइजेशन के पश्चात अब सभी इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन को जीपीएस लगे वाहन में दंडाधिकारी एवं पुलिस बल की निगरानी में संबंधित डिस्पैच सेंटरों पर भेजा जाएगा।

इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक श्री हर किशोर राय ने कहा कि आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन किसी भी हालत में नहीं होना चाहिए। मतदान समाप्ति के 48 घंटे पहले प्रचार पूरी तरह बंद हो जाना चाहिए। हम लोग आचार संहिता उल्लंघन के मामलों पर कड़ी नजर रखे हुए हैं।

इस अवसर पर अपर जिला दंडाधिकारी, उप विकास आयुक्त, उप निर्वाचन पदाधिकारी, सभी अनुमंडल पदाधिकारी, जिला पंचायती राज पदाधिकारी, ए आर ओ सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे। साथ ही सभी अभ्यर्थियों, राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि भी मौजूद थें।

अभिभावक जागरूकता तथा साइकिल रैली कैंपेन का आयोजन

प्रात: किरण, संवाददाता

हाजीपुर। प्रखंडों में भारत स्काउट एवं गाइड के द्वारा मतदाता जागरूकता अभियान चलाया गया। उत्क्रमित उच्च माध्यमिक विद्यालय बाजितपुर करतार, पातेपुर के प्रांगण में मतदाता जागरूकता कार्यक्रम के तहत बच्चों के द्वारा अभिभावक जागरूकता तथा साइकिल रैली कैंपेन का आयोजन किया गया जिसमें स्काउट गाइड के प्रखंड प्रभारी राजीव कुमार के नेतृत्व में, विद्यालय के स्काउट गाइड के नोडल शिक्षक विकास कुमार सहयोगी शिक्षक मनीष कुमार , विद्यालय के शिक्षकगण सुगंधा प्रिया ,राजा , अंसिता,सोनाली पूनम शोभा, रूबी ,अख्तर,सुमन,तथा विद्यालय के छात्र-छात्राओं के द्वारा दिव्यांग, वृद्ध ,महिला तथा युवाओं को बच्चों द्वारा स्व- निर्मित मतदान टोपी पहनकर मतदान करने के लिए उत्साहित तथा प्रेरित किया गया। चुनावी जागरूकता अभियान कार्यक्रम विद्यालय के प्रभारी प्रधानाध्यापक रामनाथ साह के निर्देशन में संपन्न कराया गया । इसी क्रम में मध्य विद्यालय बेलकुंडा के स्काउट गाइड एवं शिक्षकों के द्वारा खेत खलिहानों में घूम घूम कर महिला एवं पुरुष मतदाताओं को मतदान करने के लिए प्रेरित किया।

स्काउट गाइड के जिला संगठन आयुक्त ऋतुराज ने कहा कि हमें अपने लोकतंत्र पर गर्व है।समझदारी व नैतिक आधार पर बिना किसी लालच व प्रलोभन के अपने मताधिकार का प्रयोग आप करें। लोकतांत्रिक देश में मत का प्रयोग एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया के साथ संवैधानिक अधिकार भी है। इसलिए मत का प्रयोग करना अपना नैतिक कर्तव्य समझें। सभी के वोट का मूल्य बराबर है इसमें कोई पक्षपात नहीं है। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र तभी मजबूत बनेगा जब पारदर्शी होगा। उन्होंने युवाओं से आह्वान करते हुए कहा कि लोकतंत्र की परंपराओं को बनाए रखने के लिए नई आशाओं, अभिलाषाओं, कर्म, प्रेरणा तथा निर्माण कार्य क्षमताओं के साथ आगे बढ़ने के लिए अपने कर्तव्यों एवं अधिकारों का निर्वहन करना सुनिश्चित करें।

मतदान तिथि को ईंट भट्टो को बंद रखने का निर्देश

हाजीपुर। जिला पदाधिकारी के निदेशानुसार जिले के वी टी आर 70 प्रतिशत से अधिक करने एंव ईंट भट्टे पर कार्यरत श्रमिकों को मतदान करने को प्रेरित करने हेतु मंगलवार को जिला खनिज विकास पदाधिकारी के द्वारा वैशाली ईंट निमार्ता संघ के प्रतिनिधि एंव ईंट भट्टा संचालको के साथ बैठक की गई' जिले के सभी ईंट भट्टा संचालको को मतदान तिथि को भट्टा बंद रखने का निर्देश दिया गया है' साथ ही श्रमिकों को मताधिकार का प्रयोग करने हेतु वेतन के साथ मतदान के दिन छुट्टी देने का भी निर्देश दिया है मतदान का निर्धारित समय 7 बजे सुबह से लेकर 6 बजे शाम, मतदान केंद्र पर उपलब्ध सुविधाओं, मतदान हेतु सभी प्रकार के दस्तावेज, एंव मतदान प्रक्रिया के बारे में भी जानकारी दी गई! सभी को अपना अमूल्य वोट का प्रयोग करने को कहा गया।

जिला निर्वाचन पदाधिकारी ने सामान्य प्रेक्षक को चुनाव की तैयारियों की दी जानकारी

प्रात: किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं भयरहित चुनाव सम्पन्न कराने हेतु वैशाली लोक सभा निर्वाचन क्षेत्र के सामान्य प्रेक्षक शिव प्रसाद नकाते की अध्यक्षता में सभी कोषांगों के वरीय एवं नोडल पदाधिकारी तथा पुलिस पदाधिकारी के साथ समाहरणालय सभागार में बैठक की गयी। सभी प्रखण्डों के प्रखण्ड विकास पदाधिकारी एवं अंचलाधिकारी बैठक में विडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से संबद्ध थें। बैठक में वैशाली के व्यय प्रेक्षक जी वामशी कृष्णा रेड्डी तथा पुलिस प्रेक्षक एस. महेश्वरन भी उपस्थित थें। बैठक में निवार्ची पदाधिकारी, वैशाली -सह- जिलाधिकारी, मुजफ्फरपुर सुब्रत कुमार सेन ने चुनाव की अद्यतन तैयारी के बारे में सभी प्रेक्षकों को कोषांगवार जानकारी दी। प्रेक्षक ने कर्मियों को आयोग के प्रावधान एवं नियमों से प्रशिक्षण में अवगत कराने, मतदान केन्द्रों पर ए.एम.एफ. की उपलब्धता सुनिश्चित करने, मतदाताओं में विश्वास बहाल करने, सेक्टर पदाधिकारी को भ्रमणशील रहने, गर्मी को देखते हुए मतदान केन्द्रों पर पेयजल की व्यवस्था सुनिश्चित करने, लो वोटर टर्न आउट वाले मतदान केन्द्रों पर मतदाता जागरूकता का कार्यक्रम करने, मतदान कर्मियों को चुनाव संबंधी सावधानी एवं एहतियाती उपायों अर्थात क्या करें, क्या न करें से अवगत कराने आदि सुझाव दिये गये। बैठक में जिलाधिकारी द्वारा ई.वी.एम., वी.वी.पैट की तैयारी, मतदान सामग्री की तैयारी, आदर्श आचार संहिता का क्रियान्वयन, एकल खिड़की सेल द्वारा दी जा रही अनुमति, पोस्टल बैलेट, कम्यूनिकेशन प्लान, कर्मियों का प्रशिक्षण, जिला नियंत्रण कक्ष का 24 घंटे संचालन आदि के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी। इसके अतिरिक्त वरीय पुलिस अधीक्षक राकेश कुमार द्वारा चुनाव के दौरान पुलिस व्यवस्था के संबंध में जानकारी दी गयी।

वैशाली संसदीय निर्वाचन क्षेत्र के सामान्य प्रेक्षक शिवप्रसाद नकाते का आवासन जिला अतिथि गृह में हैं तथा उनका मोबाईल नम्बर- 9031026672 है। व्यय प्रेक्षक जी वामशी कृष्णा रेड्डी का आवासन जिला अतिथि गृह में हैं तथा उनका मोबाईल नम्बर- 9031026673 है तथा पुलिस प्रेक्षक एस महेश्वरन का भी आवासन जिला अतिथि गृह में हैं तथा उनका मोबाईल नम्बर- 9031026690 है। अतः आम नागरिक उक्त सम्पर्क सूत्र का उपयोग कर लोक सभा आम निर्वाचन 2024 से संबंधित किसी तरह के सुझाव/शिकायत के लिए माननीय प्रेक्षक महोदय से सम्पर्क किया जा सकता है। बैठक में उप विकास आयुक्त श्री आशुतोष द्विवेदी, नगर आयुक्त श्री नवीन कुमार, अपर समाहर्ता, राजस्व श्री संजीव कुमार, अपर समाहर्ता, विधि-व्यवस्था श्री सुधीर कुमार सिन्हा, अनुमंडल पदाधिकारी पूर्वी श्री अमित कुमार, अनुमंडल पदाधिकारी पश्चिम श्री बृजेश कुमार, जिला भू-अर्जन पदाधिकारी श्री अशोक कुमार गुप्ता, जिला आपूर्ति पदाधिकारी श्री प्रभात कुमार, डी.पी.ओ. आई.सी.डी.एस. श्रीमती चॉदनी सिंह, उप निर्वाचन पदाधिकारी श्री सत्यप्रिय कुमार सहित कई अन्य पुलिस एवं प्रशासनिक पदाधिकारी मौजूद थें।

सम्पादकीय

अंतिम फैसला तो जनता के हाथ में

सर्वोच्च अदालत ने लोक सभा चुनाव से पहले दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के समय को लेकर प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) से सवाल किया और जांच एजेंसी से इसका जवाब मांगा।अदालत ने पांच सवाल पूछे और उनके जवाब लेकर आने का निर्देश दिया। दो सदस्यीय बेंच ने कहा कि स्वतंत्रता बहुत महत्त्वपूर्ण है। आखिरी सवाल गिरफ्तारी के संबंध में है। न्यायिक कार्यवाही के बिना, जो कुछ हुआ उसके संदर्भ में कार्यवाही कर सकते हैं।अदालत ने पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया के लिए कहा कि पक्ष और विपक्ष में निष्कर्ष हैं। हमें बताएं कि केजरीवाल का मामला कहां है। क्या हम सीमा को बहुत विस्तृत बनाते हैं और सुनिश्चित करते हैं कि जो व्यक्ति दोषी है, उसका पता लगाने के लिए मानक समान हों। केजरीवाल 21 मार्च से शराब नीति घोटाले के मामले में न्यायिक हिरासत के तहत दिल्ली की तिहाड़ जेल में बंद हैं। केजरीवाल इस गिरफ्तारी से पहले ही सार्वजनिक तौर पर कई मर्तबा दोहरा चुके थे कि मोदी सरकार लोक सभा चुनाव के दौरान उन्हें गिरफ्तार कर सकती है।दिल्ली सरकार के नेता पहले ही जेल में हैं। माना जा रहा है कि आम आदमी पार्टी की लोकप्रियता विभिन्न राजनैतिक दलों के लिए चुनौती बनती जा रही है। सत्ताधारी दल की यह जिम्मेदारी है कि वह अन्य विपक्षी दलों के साथ पूर्वाग्रह भरा बर्ताव करने से बचे। दंड प्रक्रिया संहिता के अध्याय 5 में स्पष्ट प्रावधान है, कोई भी गिरफ्तारी इसके अधीन ही होनी चाहिए। केजरीवाल अपनी गिरफ्तारी और हिरासत को अवैध बता रहे हैं।यह कहना गलत नहीं है कि चुनाव के दरम्यान लगातार गिरफ्तारियां हो रही हैं तथा नोटिस भी थमाए जा रहे हैं या छापे तक डाले जा रहे हैं। दरअसल, केजरीवाल की गिरफ्तारी की टाइमिंग को लेकर सवाल उठ रहे हैं, जिनके उत्तर मिलने चाहिए। यह स्थिति लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए उचित नहीं कही जा सकती।बेशक, न्यायिक व्यवस्था अपनी जिम्मेदारी निभा रही है। सार्वजनिक जीवन में रहने वाला कोई भी राजनीतिज्ञ यदि किसी तरह के घोटाले में शामिल है तो उसे दंडित करने के लिए अदालतें हैं। अदालतोंपर पहले ही लंबित मामलों का दबाव है।उस पर मोदी सरकार लगातार आरोपियों को भाजपा में शामिल कर उन्हें क्लीन चिट देने का काम कर स्पष्ट संकेत दे रही है। यह अपने आप में गलत संदेश दे रहा है। बावजूद इसके अंतिम फैसला तो जनता के हाथ में है, जो मूकदर्शक जरूर है, लेकिन अपना निर्णय समय आने पर देगी।

चुनाव में ध्रुवीकरण

अवधेश कुमार

मुस्लिम आरक्षण इस चुनाव में एक बड़ा मुद्दा बन गया है।। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सहित पूरी भाजपा कांग्रेस पर आरोप लगा रही है कि वह अनुसूचित जाति-जनजाति तथा अन्य पिछड़े वर्ग के आरक्षण हटाकर मुसलमान को देना चाहती है।कांग्रेस सहित समूचा विपक्ष और भाजपा विरोधी कह रहे हैं कि मोदी और भाजपा देश में हिन्दू मुस्लिम के नाम पर चुनाव में ध्रुवीकरण चाहते हैं, जो सरेआम सांप्रदायिककरण है। अगर चुनाव में किसी संप्रदाय पर हमला किया जाए या उसके विरुद्ध दूसरे संप्रदाय को भड़काया जाए तो यह सांप्रदायिकता की श्रेणी में आएगा और इसके लिए चुनाव कानून ही नहीं सामान्य कानूनों में भी मुकदमा चलाने तथा सजा देने का प्रावधान है।प्रश्न है कि क्या प्रधानमंत्री ने जो आरोप लगाया उसे चुनाव को सांप्रदायिक रंग देने का षड्यंत्र मान लिया जाए या उसके पीछे तथ्य भी हैं? कांग्रेस के नेता और प्रवक्ता प्रधानमंत्री पर हमले कर रहे हैं किंतु यह कहने को तैयार नहीं है कि वह मुसलमानों को आरक्षण देने के पक्ष में नहीं है। कांग्रेस यह भी स्पष्ट नहीं करती कि वह धर्म के आधार पर आरक्षण के विरुद्ध है। कांग्रेस अपने घोषणा पत्र में आरक्षण की सीमा बढ़ाने का वचन देते हुए यह सुनिश्चित करने की घोषणा करती है कि अल्पसंख्यकों को शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, सार्वजनिक रोजगार, सार्वजनिक कार्य अनुबंध, कौशल विकास, खेल और सांस्कृतिक गतिविधियों में बिना किसी भेदभाव के अवसरों का उचित हिस्सा मिले तो इसलिए मंशा पर प्रश्न उठता है क्योंकि इसकी पृष्ठभूमि है।कांग्रेस सरकारों ने पहले भी मुसलमानों को आरक्षण देने की पहल की है। चूंकि धर्म के आधार पर आरक्षण मान्य नहीं था, इसलिए अन्य पिछड़े वर्ग के आरक्षण में से ही कर्नाटक में मुसलमानों को चार प्रतिशत आरक्षण दिया गया। केंद्र में यूपीए सरकार के कार्यकाल के दौरान आंध्र प्रदेश की कांग्रेस सरकार ने मुसलमानों को आरक्षण देने का कानून बना दिया। यह विषय सर्वोच्च अदालत तक गया। आज भी अनुसूचित जनजाति से धर्म परिवर्तन कर मुसलमान या ईसाई बनने वालों को आरक्षण का लाभ मिलता है। वे अल्पसंख्यक होने का भी लाभ पाते हैं और अनुसूचित जनजाति का भी। कांग्रेस यह तो कह रही है कि इसमें मुस्लिम शब्द कहीं नहीं है पर अल्पसंख्यक का अर्थ क्या है? प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने 9 दिसम्बर 2006 को राष्ट्रीय विकास परिषद की बैठक के भाषण में कहा कि मेरा मानना है कि हमारी सामूहिक प्राथमिकताएं कृषि, सिंचाई, जल संसाधन, स्वास्थ्य, शिक्षा, ग्रामीण बुनियादी ढांचे में निवेश के साथ ही एससी/एसटी, अन्य पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यकों, महिलाओं और बच्चों का उत्थान है। हमें ऐसी नई योजनाएं बनानी होंगी, जिनसे अल्पसंख्यकों खासकर मुस्लिमों को विकास में समान भागीदारी मिल सके। देश के संसाधनों पर उनका पहला हक होना चाहिए।इ 2014 लोक सभा चुनाव के लिए आचार संहिता लागू होने से ठीक एक दिन पहले मनमोहन सरकार ने 5 मार्च 2014 को दिल्ली की 123 प्रमुख संपत्तियों को दिल्ली वक्फ बोर्ड के हवाले कर दिया। दिल्ली वक्फ बोर्ड ने 27 फरवरी, 2014 को राष्ट्रीय राजधानी में इन प्रमुख संपत्तियों पर दावा किया था। अनेक उदाहरण मिलेंगे जिनसे साबित होगा कि मनमोहन सरकार ऐसी मुस्लिम संस्थाओं, संगठनों और व्यक्तियों के पूरी तरह प्रभाव में था। यह आदेश सरकार ने उचित मुआवजे का अधिकार और भूमि अधिग्रहण, पुनर्वास और पुनर्स्थापन में पारदर्शिता अधिनियम, 2013 के तहत मिली शक्तियों का प्रयोग करते हुए किया। तो क्या यह संशोधित अधिनियम ऐसे ही कार्यों को ध्यान में रखते हुए पारित हुआ था? नरेन्द्र मोदी सरकार के आने के बाद इन संपत्तियों को मुक्त कराया गया और उसके लिए भी न्यायालय में संघर्ष करना पड़ा। जिस तरह तेलंगाना एवं कर्नाटक में कांग्रेस को मुस्लिम समुदाय का वोट मिला उससे उसको लगता है कि ऐसी नीतियों पर आगे बढे से उसका खोया जनाधार वापस आ सकता है। इसलिए राहुल गांधी और उनके नेतृत्व में पूरी कांग्रेस यह साबित करने में लगी है कि मुसलमान के हितों के प्रति वह पूरी तरह समर्पित है या उसके लिए किसी सीमा तक जाने को तैयार है। ध्यान रखिए, पिछड़े वर्ग एवं अनुसूचित जाति व अनुसूचित जन जाति को आरक्षण पहले से प्राप्त है, नरेन्द्र मोदी सरकार ने आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए 10 फीसद आरक्षण का प्रावधान कर दिया है। तो आप आरक्षण की सीमा को बढ़ाना किसके लिए चाहते हैं? अपने भाषणों और वक्तव्यों में राहुल गांधी सहित ज्यादातर नेता अनुसूचित जाति-जनजाति व पिछड़े वर्ग के साथ ही अल्पसंख्यकों और मुसलमानों के उत्थान की बात करते हैं।आखिर अनुसूचित जाति-जनजाति जाति और पिछड़े वर्ग के साथ मुसलमान को क्लब कैसे किया जा सकता है? मुसलमानों ने देश में लंबे समय तक शासन किया और इस कारण वे विशेषाधिकार वर्ग में आते हैं। मोदी सरकार में ही सरकारी नौकरियों में मुसलमानों की संख्या 2014 के मुकाबले दोगुनी से ज्यादा हुई है। किंतु हमारे यहां जाति व्यवस्था में हाशिए पर रहे समूहों के कारण आरक्षण का प्रावधान संविधान में लाया गया। इसमें धर्म के आधार पर आरक्षण की कोई व्यवस्था न थी और न हो सकती है। ऐसी अवस्था में निश्चित रूप से अन्य पिछड़े वर्ग का हक मार कर ही कांग्रेस या आईएनडीआईए के अन्य दल उन्हें आरक्षण दे सकते हैं। पश्चिम बंगाल से इसके संदर्भ में एक डराने वाला आंकड़ा आया है।इस समय वहां 179 जातियां अन्य पिछड़े वर्ग में शामिल हैं, जिनमें 118 मुस्लिम हैं और हिंदू सिर्फ 61। मोदी सरकार ने जब राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग को संवैधानिक दर्जा दिया तो उसने राज्यों को भी पिछड़े वर्ग की सूची में जातियों को शामिल करने का अधिकार दिया। ममता बनर्जी ने 71 जातियां शामिल की जिनमें 65 मुस्लिम थे। जब पिछड़ा वर्ग आयोग ने इसका कारण पूछा तो बताया गया कि पिछड़े हिन्दुओं ने धर्म परिवर्तन कर इस्लाम ग्रहण कर लिया। जब यह पूछा गया कि कहां-कहां ऐसा हुआ तो उत्तर आया कि इसकी जानकारी नहीं है। सरकारों ने ऐसे नियम और ढांचे बना दिया जिनसे राजस्थान, बंगाल, कर्नाटक सहित कई राज्यों में पिछड़े वर्ग के आरक्षण का ज्यादातर लाभ मुस्लिम समुदाय को मिल रहा है। इसके बाद क्या किसी संदेह की गुंजाइश रह जाती है?

भारत में अंगदान की कमी से जा रही लोगों की जान

तीन लाख से अधिक रोगियों की प्रतीक्षा सूची और अंग के इंतजार में हर दिन कम से कम 20 लोगों की मृत्यु के साथ, भारत में अंग दान की कमी, विशेष रूप से मृतक दान, भारी नुकसान उठा रही है। भारत में मृतक अंगदान की दर पिछले एक दशक से प्रति दस लाख की आबादी पर एक दाता से कम रही है। भारत को इसे प्रति मिलियन जनसंख्या पर 65 दान तक बढ़ाने की आवश्यकता है और ऐसा करने के लिए, सार्वजनिक क्षेत्र की स्वास्थ्य सेवा को आगे बढ़ना होगा। देश में लगभग 600 मेडिकल कॉलेज और 20 से अधिक एम्स हैं। अगर हमें हर साल उनसे एक-एक दान भी मिले तो हम बेहतर स्थिति में रहेंगे।ह्न दुनिया भर में भी, अंगों की आवश्यकता वाले केवल 10% रोगियों को ही समय पर अंग मिल पाते हैं। स्पेन और अमेरिका में बेहतर अंग दान प्रणाली है, जहां प्रति मिलियन 30-50 दान की दर है। मरीजों के परिवारों को आगे आने और दान करने में मदद करने के लिए ट्रॉमा और आईसीयू डॉक्टरों को प्रशिक्षित करना समय की मांग है, कई संभावित मामलों की उपलब्धता के बावजूद, भारत में अंग दान की कम दर मस्तिष्क मृत्यु या मस्तिष्क स्टेम मृत्यु मामलों की अपर्याप्त पहचान और प्रमाणीकरण के कारण हो रही है। अंगदान के मामले में देश का वार्षिक औसत अब भी प्रति दस लाख लोगों पर एक से भी कम दाता है। सड़क परिवहन के आंकडों के मुताबिक भारत में हर साल, करीब 150, 000 लोग सड़कों पर मारे जाते हैं। इसका मतलब औसतन हर रोज सड़कों पर 1000 से ज्यादा दुर्घटनाएं होती हैं और 400 से ज्यादा लोग दम तोड़ देते हैं।

डॉ सत्यवान सौरभ
लेखक, पत्रकार, स्तंभकार

देश में तीन लाख मरीज अंगदान का इंतजार कर रहे हैं और देश में दाताओं की संख्या में वृद्धि मांग के अनुरूप नहीं है; विशेषज्ञों का कहना है कि देश को तत्काल मृतक दान दर बढ़ाने की जरूरत है, और आईसीयू डॉक्टरों और परिवारों के बीच इस बारे में अधिक जागरूकता होनी चाहिए कि कैसे एक मृतक दानकर्ता कई जिंदगियां बचा सकता है। तीन लाख से अधिक रोगियों की प्रतीक्षा सूची और अंग के इंतजार में हर दिन कम से कम 20 लोगों की मृत्यु के साथ, भारत में अंग दान की कमी, विशेष रूप से मृतक दान, भारी नुकसान उठा रही है। भारत में मृतक अंगदान की दर पिछले एक दशक से प्रति दस लाख की आबादी पर एक दाता से कम रही है।

भारत को इसे प्रति मिलियन जनसंख्या पर 65 दान तक बढ़ाने की आवश्यकता है और ऐसा करने के लिए, सार्वजनिक क्षेत्र की स्वास्थ्य सेवा को आगे बढ़ना होगा। देश में लगभग 600 मेडिकल कॉलेज और 20 से अधिक एम्स हैं। अगर हमें हर साल उनसे एक-एक दान भी मिले तो हम बेहतर स्थिति में रहेंगे।ह्न दुनिया भर में भी, अंगों की आवश्यकता वाले केवल 10% रोगियों को ही समय पर अंग मिल पाते हैं। स्पेन और अमेरिका में बेहतर अंग दान प्रणाली है, जहां प्रति मिलियन 30-50 दान की दर है। मरीजों के परिवारों को आगे आने और दान करने में मदद करने के लिए ट्रॉमा और आईसीयू डॉक्टरों को प्रशिक्षित करना समय की मांग है, कई संभावित मामलों की उपलब्धता के बावजूद, भारत में अंग दान की कम दर मस्तिष्क मृत्यु या मस्तिष्क स्टेम मृत्यु मामलों की अपर्याप्त पहचान और प्रमाणीकरण के कारण हो रही है। अंगदान के मामले में देश का वार्षिक औसत अब भी प्रति दस लाख लोगों पर एक से भी कम दाता है।

सड़क परिवहन के आंकडों के मुताबिक भारत में हर साल, करीब 150, 000 लोग सड़कों पर मारे जाते हैं। इसका मतलब औसतन हर रोज सड़कों पर 1000 से ज्यादा दुर्घटनाएं होती हैं और 400 से ज्यादा लोग दम तोड़ देते हैं। अंग दान में मृत डोनर के अंगों- जैसे हृदय, यकृत (लिवर), गुर्दे (किडनी), आंतें, आंखें, फेफड़े और अग्न्याशय (पैनक्रियाज) को निकाल कर दूसरे व्यक्ति के शरीर में प्रत्यारोपित कर दिया जाता है, जिसे जीवित रहने के लिए उनकी जरूरत है। एक मृत डोनर, जिसे कैडेवर भी कहा जाता है, इस तरह नौ लोगों की जान बचा सकता है। हालांकि हेल्थ प्रोफेशनल आमतौर पर अंगदान के विषय पर मृतक के परिजनों से बात करने में अटपटा महसूस करते हैं। डॉक्टर मृतक के अंगों को दान देने के बारे में पूछने से कतराते हैं। कोई इस बारे में प्रोत्साहन भी नहीं है और बदले की कार्रवाई का डर भी रहता है।

जनता अनिच्छुक और अविश्वासी है क्योंकि वे मस्तिष्क मृत्यु, अंग दान के विचार या इसके फायदों को पूरी तरह से नहीं समझते हैं। मृत्यु के बाद शरीर के बारे में सांस्कृतिक रीति-रिवाज सहमति में बाधा डाल सकते हैं, और कुछ धार्मिक मान्यताएँ अंग दान पर रोक लगाती हैं।भारत में पर्याप्त प्रत्यारोपण केंद्र, आवश्यक प्रशिक्षण वाले चिकित्सा पेशेवर या अंगों की पुनर्प्राप्ति, संरक्षण और परिवहन के लिए संसाधन नहीं हैं। अंग दान के लिए परिवार की सहमति प्राप्त करना अक्सर आवश्यक होता है। यह एक लंबी और भावनात्मक रूप से कठिन प्रक्रिया हो सकती है, जो दान में देरी कर सकती है या उसे रोक भी सकती है। यहां तक कि ऐसे मामलों में जहां अंग उपलब्ध हैं, कई रोगियों की पहुंच प्रत्यारोपण सर्जरी और पोस्ट-ऑपरेटिव देखभाल की उच्च लागत के कारण और भी सीमित है।

अंग विफलता वाले कई मरीज अंग की तीव्र कमी के परिणामस्वरूप प्रत्यारोपण का इंतजार करते समय मर जाते हैं।अगों की अत्यधिक आवश्यकता के कारण अवैध अंग व्यापार नेटवर्क को बढ़ावा मिलता है, जो कमजोर लोगों को नैतिक और स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों के साथ-साथ शोषण के खतरे में डालता है। अंगों की सीमित आपूर्ति के कारण स्वास्थ्य संबंधी असमानताएं बढ़ जाती हैं, जिससे पैसे वाले लोगों के लिए इसकी संभावना अधिक हो जाती है। जीवनरक्षक प्रत्यारोपण प्राप्त करें। डायलिसिस और अन्य सहायक देखभाल उन कई संसाधनों में से हैं जिन पर अंतिम चरण के अंग विफलता वाले रोगियों के प्रबंधन के कार्य द्वारा भारी कर लगाया जाता है। सभी बातों पर विचार करने पर, भारत की स्वास्थ्य सेवा प्रणाली निम्न अंगदान दरों से बहुत प्रभावित होती है, जिसके परिणामस्वरूप टाली जा सकने वाली मौतें, अनैतिक व्यवहार और जीवन रक्षक देखभाल तक असमान पहुंच होती है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि सभी को अंग प्रत्यारोपण तक उचित पहुंच मिले, इन मुद्दों को संबोधित करने के लिए एक बहुआयामी रणनीति की आवश्यकता है जिसमें नैतिक विचार, कानूनी सुधार, बुनियादी ढांचे का विकास और सार्वजनिक शिक्षा शामिल है। एक मृत अंग दाता आठ लोगों की जान बचा सकता है। दान की गई दो किडनी दो रोगियों को डायलिसिस उपचार से मुक्त कर सकती हैं।

दान किए गए एक लीवर को प्रतीक्षा सूची के दो रोगियों के बीच विभाजित किया जा सकता है। दो दान किए गए फेफड़ों का मतलब है कि दो अन्य रोगियों को दूसरा मौका दिया गया है, और एक दान किए गए अग्न्याशय और दान किए गए हृदय का मतलब दो और रोगियों को जीवन का उपहार प्राप्त करना है। एक ऊतक दाता - कोई व्यक्ति जो हड्डी, टेंडन, उपास्थि, संयोजी ऊतक, त्वचा, कॉर्निया, श्वेतपटल, और हृदय वाल्व और वाहिकाओं को दान कर सकता है। 75 लोगों के जीवन को प्रभावित कर सकता है। भारत में अंग दान की प्रतिज्ञा को वास्तविक दान में तब्दील करने की जरूरत है और इसके लिए मेडिकल स्टाफ को शिक्षित करने की जरूरत है। उन्हें मस्तिष्क मृत्यु और अंग दान के महत्व के बारे में परिवारों को पहचानने, पहचानने, सूचित करने और परामर्श देने में सक्षम होना चाहिए।

संकुचित व षड्यंत्रकारी चुनावी विमर्श अत्यंत चिंतनीय

जो खिलाफ हैं वह हराम जादे हैं। इसके साथ ही स्वयं बहुसंख्यकवाद की राजनीति करने वाली यही भाजपा अपने विरोधी दलों को अल्पसंख्यक परस्त व मुस्लिम तुष्टीकरण करने वाले दलों के रूप में पूरे जोर शोर से प्रचारित कर रही है। अपने इस ह्यअनैतिकह्ल अभियान में वह वर्तमान चुनावी बेला में सार्वजनिक मंचों से जिन शब्दों व वाक्यों का इस्तेमाल कर रही है वह भारतीय राजनीति के इतिहास का अब तक का सबसे गिरा व निम्नस्तरीय चुनाव अभियान है। यह इस बात का भी परिचायक है कि अबकी बार चार सौ पार का हवाई नारा देने वाली भाजपा व इसके शीर्ष नेता समझ चुके हैं कि जनता अब उनके विघटनकारी मंसूबों को समझ चुकी है। और 400 पार की बात तो दूर इस बार तो उनकी सत्ता में वापसी पर भी प्रश्न चिन्ह लग चुका है। गौरतलब है कि सर्वोच्च न्यायालय के आदेश पर अयोध्या स्थित विवादित मंदिर मस्जिद मुकददमे का निर्णय सुनाया गया। इसी फैसले में केंद्र सरकार से एक ट्रस्ट बनाकर मंदिर निर्माण करने को कहा गया। यहाँ यह भी काबिल-ए-गौर है कि मंदिर-मस्जिद अदालती वाद परिवाद में मुद्दई के रूप में न तो राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ था न विश्व हिन्दू परिषद् न ही भाजपा। परन्तु केंद्र में भाजपा के नेतृत्व वाली एन डी ए सरकार होने के नाते बड़ी ही चतुराई से ट्रस्ट के गठन से लेकर मंदिर निर्माण व उद्घाटन तक के इस पूरे प्रकरण का भाजपा द्वारा निजीकरण कर लिया गया।

निर्मल रानी
लेखक वरिष्ठ राजनीतिक टिप्पणीकार हैं

विगत चार दशकों से भारतीय जनता पार्टी भगवान राम के नाम पर राजनीति कर स्वयं को स्थापित करने की कोशिश करती रही है। आखिरकार धार्मिक ध्रुवीकरण व राम मंदिर की राजनीति ने उसे केंद्रीय सत्ता में आने में मदद की और यह भाजपा का लोकप्रिय मुद्दा बन गया। अब वही भाजपा इससे भी दो कदम आगे बढ़कर जहाँ सर्वव्यापी मयार्दा पुरुषोत्तम भगवान राम को अपना निजी ह्यभगवानह्ल समझने लगी है वहीँ अपने विरोधी दलों को राम विरोधी तो राम द्रोही आदि प्रचारित कर रही है। इसी दल की एक सांसद यहाँ तक कह चुकी है कि जो हमारे साथ हैं वह रामजादे हैं और जो खिलाफ हैं वह हराम जादे हैं। इसके साथ ही स्वयं बहुसंख्यकवाद की राजनीति करने वाली यही भाजपा अपने विरोधी दलों को अल्पसंख्यक परस्त व मुस्लिम तुष्टीकरण करने वाले दलों के रूप में पूरे जोर शोर से प्रचारित कर रही है। अपने इस ह्यअनैतिकह्ल अभियान में वह वर्तमान चुनावी बेला में सार्वजनिक मंचों से जिन शब्दों व वाक्यों का इस्तेमाल कर रही है वह भारतीय राजनीति के इतिहास का अब तक का सबसे गिरा व निम्नस्तरीय चुनाव अभियान है। यह इस बात का भी परिचायक है कि अबकी बार चार सौ पार का हवाई नारा देने वाली भाजपा व इसके शीर्ष नेता समझ चुके हैं कि जनता अब उनके विघटनकारी मंसूबों को समझ चुकी है। और 400 पार की बात तो दूर इस बार तो उनकी सत्ता में वापसी पर भी प्रश्न चिन्ह लग चुका है। गौरतलब है कि सर्वोच्च न्यायालय के आदेश पर अयोध्या स्थित विवादित मंदिर मस्जिद मुकददमे का निर्णय सुनाया गया। इसी फैसले में केंद्र सरकार से एक ट्रस्ट बनाकर मंदिर निर्माण करने को कहा गया। यहाँ यह भी काबिल-ए-गौर है कि मंदिर-मस्जिद अदालती वाद परिवाद में मुद्दई के रूप में न तो राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ था न विश्व हिन्दू परिषद् न ही भाजपा। परन्तु केंद्र में भाजपा के नेतृत्व वाली एन डी ए सरकार होने के नाते बड़ी ही चतुराई से ट्रस्ट के गठन से लेकर मंदिर निर्माण व उद्घाटन तक के इस पूरे प्रकरण का भाजपा द्वारा निजीकरण कर लिया गया। यहाँ तक कि 22 जनवरी 2024 को हुये मंदिर उद्घाटन के दौरान इसके प्राण प्रतिष्ठा के धार्मिक विधि विधान सम्बन्धी तौर तरीकों व समय को लेकर देश के चारों शंकराचार्यों सहित तमाम संतों महंतों द्वारा इसका कितना तार्किक विरोध किया गया। परन्तु उन सब की अनसुनी कर दी गयी। और मंदिर ट्रस्ट से लेकर इसके उद्घाटन तक को पूर्णतः भाजपाई इवेंट के रूप में पेश किया गया। और अब उसी आधार पर यह कहकर वोट माँगा जा रहा है कि ह्यजो राम को लाये हैं हम उनको लाएंगे।

देश के चारों शंकराचार्य ही नहीं बल्कि हजारों वरिष्ठ संतों ने तथा भाजपा विरोधी दलों ने यह बखूबी समझ लिया था कि ट्रस्ट गठन से लेकर प्राणप्रतिष्ठा तक का पूरा कार्यक्रम पूरी तरह राजनैतिक व अनैतिक है। इसी लिये जहां शंकराचार्यों ने इस आयोजन में शिरकत नहीं की वहीँ विपक्षी दलों के नेताओं ने भी 22 जनवरी के इस ह्यराजनैतिक आयोजनह्ल से दूरी बनाये रखी। इतना ही नहीं बल्कि कई प्रमुख केंद्रीय मंत्री व भाजपाई मुख्यमंत्री भी अभी तक अयोध्या के नवनिर्मित मंदिर दर्शन करने नहीं गए हैं। परन्तु भाजपा के निशाने पर केवल कांग्रेस व इंडिया गठबंधन के नेता हैं। भाजपा इसे लेकर ऐसे ऐसे दुष्प्रचार कर रही है ताकि वह किसी तरह कांग्रेस व इंडिया गठबंधन के अन्य दलों व उनके नेताओं को राम विरोधी साबित कर सके। अफसोस की बात तो यह है कि कल के धर्मनिर्पेक्षतावादी जो आज भगवा रंग में रंग रहे हैं उनसे भी भाजपा यही कहलवा रही है कि कांग्रेस राम विरोधी है। और कांग्रेस अयोध्या मंदिर दर्शन करने का विरोध करती है।

जबकि सच्चाई इससे बिल्कुल अलग है। कांग्रेस की प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेट अयोध्या दर्शन करने जा चुकी हैं। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय रॉय पूरी उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के साथ राम मंदिर जा चुके। सांसद दीपेंद्र हुडा, छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जेसे तमाम कांग्रेस नेता 22 जनवरी के बाद अयोध्या जा चुके हैं। परन्तु कांग्रेस आला कमान ने किसी नेता से इस विषय पर कोई सवाल नहीं किया। क्योंकि कांग्रेस शुरू से यही मानती आ रही है कि धर्म व धर्म पालना किसी भी व्यक्ति का आस्था सम्बन्धी अत्यंत निजी विषय है। इसकी पालना करने या न करने का प्रत्येक व्यक्ति का अपना निजी अधिकार है। कांग्रेस ने न तो कभी राम के नाम पर वोट माँगा न ही राम के विरोध के नाम पर। परन्तु दुष्प्रचार की इंतेहा यह कि नरेंद्र मोदी स्वयं यह कह रहे हैं कि मैं ह्यलोकसभा चुनाव में 400 सीट इसलिए जीतना चाहता हूं कि ताकि कांग्रेस अयोध्या में राम मंदिर पर बाबरी ताला ना लगा दे। कांग्रेस की चली तो कांग्रेस कहेगी कि भारत में जीने का पहला हक भी उसके वोट बैंक (मुसलमानों) का है। लेकिन जब तक मोदी जिंदा है, नकली सेक्युलरिज्म के नाम पर भारत की पहचान मिटाने की कोई भी कोशिश मोदी सफल नहीं होने देगा, और ये हजारों वर्ष पुराने भारत को, उसकी इस संतान की गारंटी है।ह्ल देश के प्रधानमंत्री के मुंह से निकला हुआ यह वाक्यविपक्षी दलों के लिये कितनी कुंठा से भरा व हताशा से परिपूर्ण प्रतीत होता है? आज देश मंहगाई, बेरोजगारी, शिक्षा, स्वास्थ्य, अमेरिकी डालर के मुकाबले भारतीय मुद्रा में आ रही अभूतपूर्व गिरावट, सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम, (पीएसयू) के चंद निजी हाथों में सौंपे जाने जैसे अनेक महत्वपूर्ण मुद्दों से जूझ रहा है। परन्तु सरकार के पास इनका न तो कोई जवाब है न ही इनके समाधान की कोई नीति। 2019 का चुनाव इसी मोदी सरकार ने मुफ़्त राशन पाने वाले

पर्याप्त सुविधाओं के अभाव से प्रभावित होती बालिका शिक्षा

आशा नारंग

हाल ही में आईसीएसई समेत विभिन्न राज्यों के दसवीं और बारहवीं के परिणाम घोषित हुए हैं, जिनमें बड़ी संख्या में छात्राओं ने उम्मीद से कहीं अधिक बढ़कर प्रदर्शन किया है. यह आंकड़े बताते हैं कि यदि अवसर और सुविधाएं प्रदान किये जाएं तो लड़कियां भी किसी भी परिणाम को अपने पक्ष में करने की भरपूर सलाहियत रखती हैं. दरअसल आजादी के बाद हमारे देश में चाहे केंद्र की सरकार हो, या राज्य की सरकारें, सभी ने जिन बुनियादी सुविधाओं के विकास पर सबसे अधिक फोकस किया उसमें शिक्षा भी एक अहम विषय था. शहर से लेकर गांव और अमीर से लेकर गरीब तक के सभी बच्चों को समान रूप से शिक्षा प्राप्त हो इसके लिए कई स्तर पर योजनाएं तैयार की गई. बच्चों के लिए स्कूल तक पहुंच को आसान बनाने पर जोर दिया गया, गरीब के बच्चों की शिक्षा में कोई बाधा न आये इसके लिए अनिवार्य और मुफ्त शिक्षा की व्यवस्था की गई, किताब-कॉपियां और स्कूल ड्रेस मुफ्त उपलब्ध कराये जाने लगे. सरकार की इस पहल का बहुत सकारात्मक परिणाम भी नजर आने लगा. आजादी के बाद 1951 की पहली जनगणना में जहां देश में साक्षरता की कुल दर महज 18.33 प्रतिशत थी वहीं 60 वर्षों बाद 2011 में यह बढ़कर 74 प्रतिशत से अधिक हो गई. लेकिन इस सुखद आंकड़ों के साथ सिक्के का एक दूसरा पहलू यह है कि अभी भी किशोरियां विशेषकर दूर दराज के ग्रामीण क्षेत्रों की किशोरियों के सामने शिक्षा प्राप्त करना एक बड़ी चुनौती है. अभी भी हमारे देश में कई ऐसे ग्रामीण क्षेत्र हैं जहां महिलाओं की साक्षरता दर बेहद कम है. जहां मुश्किल से लड़कियां 12वीं तक भी शिक्षा प्राप्त कर पाती हैं. ऐसा ही एक गांव राजस्थान के अलवर जिला स्थित शादीपुर है. जहां आज भी महिलाओं में साक्षरता की दर दहाई के आंकड़े को भी पार नहीं कर सका है. इस गांव में बालिका शिक्षा के प्रति जहां समाज में उदासीनता है वहीं शिक्षा के क्षेत्र में सरकार की योजनाएं भी दम तोड़ती नजर आती है. अलवर जिला से करीब 67 किमी और तिजारा तहसील से लगभग 20 किमी की दूरी पर आबाद इस गांव की जनसंख्या 300 के आसपास है. इसमें महिलाओं की जनसंख्या करीब 48 प्रतिशत है. मुस्लिम बहुल इस गांव में 2011 की जनगणना के अनुसार कुल साक्षरता की दर 18 प्रतिशत से भी कम है. पुरुषों में जहां साक्षरता की दर करीब 30 प्रतिशत है वहीं महिलाओं में यहां साक्षरता की दर पांच प्रतिशत से भी कम है.

जो न केवल चिंता का विषय है बल्कि बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने वाले हमारे आंकड़ों पर भी प्रश्न चिन्ह लगाता है. इतना ही नहीं गांव में न तो कोई पंचायत घर है, न आंगनबाड़ी और न ही सार्वजानिक शौचालय की कोई सुविधा उपलब्ध है. गांव वालों के रोजगार का मुख्य साधन पशुपालन, दैनिक मजदूरी, थ्रेसर मशीन चलाना, ट्रक ड्राइवर का काम करना और कुछ परिवार की अपनी जमीन है जिस पर वह खेती करते हैं. महिलाएं घर के काम के साथ साथ खेती के काम में भी पुरुषों का हाथ बटाती हैं. गांव में पक्की सड़क का अभाव होने के कारण आवागमन की सुविधा भी सुलभ नहीं है.गांव में बालिका शिक्षा की चिंताजनक स्थिति के बारे में 35 वर्षीय अब्बास बताते हैं कि गांव में केवल 8वीं तक ही स्कूल है. इससे आगे की शिक्षा प्राप्त करने के लिए लड़कियों को 10 किमी दूर अन्य गांव में जाना पड़ेगा. लेकिन आवागमन की सुविधाओं का अभाव, लड़कियों के साथ होने वाले छेड़छाड़ का डर और बालिका शिक्षा के प्रति समाज की सीमित सोच के कारण अभिभावक लड़कियों को इतनी दूर भेजने से इंकार कर देते हैं. जिससे चाह कर भी कोई लड़की 9वीं या 10वीं की शिक्षा प्राप्त करने से वंचित रह जाती है. वह बताते हैं कि गांव में 8वीं तक जो सरकारी विद्यालय संचालित हैं उनमें भी सुविधाओं का घोर अभाव है. प्रधानाध्यापक सहित केवल 4 शिक्षकों के भरोसे यह पूरा स्कूल चल रहा है. इसके अतिरिक्त स्कूल में न तो पीने के साफ पानी की व्यवस्था है और न ही छात्र-छात्राओं के लिए शौचालय की उचित व्यवस्था है.नाम नहीं बताने की शर्त पर एक छात्रा की मां बताती है कि उनकी बेटी कई बार स्कूल में सुविधाओं की कमी की शिकायत कर चुकी है. लेकिन वह आर्थिक रूप से इतनी सशक्त नहीं हैं कि अपनी बेटी का एडमिशन गांव से बाहर या किसी निजी शिक्षण संस्थान में करा सकें. वह बताती है कि स्कूल में कोई महिला शिक्षिका के नहीं होने से लड़कियों को अक्सर माहवारी के दौरान समस्याओं का सामना करना पड़ता है.

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें

@Pratahkiran www.pratahkiran.com

राष्ट्रीय दैनिक प्रात:किरण
नई दिल्ली, गुरुवार, 09 मई, 2024

संक्षिप्त खबरें

पोखर में डूबने से दो बच्चों की हुई मौत

ढाका,(पूर्वी चम्पारण) कुंडवा चैनपुर थाना क्षेत्र के दोस्तियां गांव के पोखर से दो बच्चे का शव बुधवार को बरामद किया गया। जानकारी के अनुसार मंगलवार की शाम से ही दोनों बच्चे लापता थे। जिसे बुधवार को ग्रामीणों ने देखा तो इसकी सूचना परिजनों को दी जिसके बाद पोखर से दोनों बच्चे का शव बरामद किया गया। दोनो मृतक की पहचान दोस्तियां गांव निवासी साबिर अख्तर के आठ वर्षीय पुत्र मो. अयान और जाहिद अख्तर के दस वर्षीय पुत्र मो. राशिद के रूप में हुई है। इधर इस अन्होनी घटना से परिजनों का रो- रोकर बुरा हाल है पुरा गांव में मातमी सन्नाटा है। थानाध्यक्ष राकेश कुमार राय ने बताया की पुलिस घटनास्थल पर पहुंच जानकारी ली और दोनों शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है।

तीयर नदी में डूबने से 35 वर्षीय युवक की मौत

छपरा। बनकटवा पु च लखौरा थाना क्षेत्र के तीयर नदी मे डूबने से एक 35 वर्षीय युवक की मौत बुधवार को गोलापकरीया गाँव के निकट मछली पकड़ने के दौरान हो गया उक्त मृतक की पहचान निमोईया गाँव निवासी बिरचन मुखिया पिता शंकर मुखिया के रूप मे किया गया मौके पर लखौरा पुलिस ने पहुंच कर शव को अपने अभिरक्षा मे लेकर पोस्टमार्टम के लिए मोतिहारी भेज दिया गया जानकारी लखौरा थाना अध्यक्ष पंकज कुमार ने दी

कदाचार मुक्त परीक्षा हमारी प्राथमिकता : कुलपति

छपरा सदर । जयप्रकाश विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर सत्र 2021-23 द्वितीय सेमेस्टर तथा सत्र 2020-22 तृतीय सेमेस्टर की परीक्षा बुधवार को विश्वविद्यालय परिसर स्थित मल्टीपर्पस परीक्षा भवन में प्रारंभ हुई। पहले दिन पहली पाली में द्वितीय सेमेस्टर के पेपर सीसी 5 एवं द्वितीय पाली में तृतीय सेमेस्टर के पेपर सीसी 10 की सभी विषयों की परीक्षा कदाचारमुक्त एवं शांतिपूर्ण माहौल में संपन्न हुई। पहले दिन की परीक्षा में कुल 8 परीक्षार्थियों को नकल के आरोप में निष्कासित किया गया। कुलपति प्रो. परमेंद्र कुमार बाजपेई ने प्रथम पाली की परीक्षा का निरीक्षण किया। उन्होंने सभी कक्षों में घूम-घूमकर परीक्षा का जायजा लिया और केंद्राधीक्षक एवं वीक्षकों को आवश्यक निर्देश दिए। कुलपति ने कहा कि कदाचारमुक्त परीक्षा उनकी प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि ससमय परीक्षाफल प्रकाशन का संकल्प लिया गया है जिसे हर हाल में पूर्ण किया जाएगा। इस अवसर पर कुलसचिव प्रो. रणजीत कुमार और समायोजक, महाविद्यालय विकास परिषद प्रो. हरिश्चंद्र भी उपस्थित थे।

शराब मामले में आजीवन कारावास

छपरा कोर्ट। विशेष अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश उत्पाद अतुल वीर सिंह ने रसूलपुर थाना कांड संख्या 92/20 के उत्पाद सत्र संख्या 195 /22 के अभियुक्त राज किशोर पांडे को अंदर दफा 304(') भा द वि के अन्तर्गत आजीवन कारावास और शराब पीने के आरोप में एक माह की सजा सुनाई है। बताते चलें कि अभियुक्त ने शराब पीकर 17 अगस्त 2020 को अपने चाचा रसुलपुर थाना के बलिया निवासी देवनाथ पांडे को मामूली विवाद पर चाकू मारकर हत्या कर दिया था पर अपने चाचा देवनाथ पांडे के पेट में चाकू मार कर घायल कर दिया था जख्मी कर दिया और इलाज के क्रम में चाचा का निधन 1 सितंबर 2020 को पटना मे हो गया।अभियोजन की ओर से विशेष लोक अभियोजक उत्पाद सर्वजीत ओझा तथा उनके सहायक अनिल कुमार पांडे तथा सुसृति एवं कृति ने भी सरकार का पक्ष न्यायालय में रखा बचाव पक्ष की ओर से विधिक प्राधिकार की अधिवक्ता सुनीता कुमारी ने न्यायालय में पक्ष रखा।

बिहार सरकार के पीएचईडी मंत्री निरज सिंह बबलू का घोड़ासहन में स्वागत

घोड़ासहन बिहार सरकार के पीएचईडी मंत्री नीरज सिंह बबलू का स्वागत घोड़ासहन के कैलाश मार्केट में भाजपा के वरिष्ठ नेता व शिवहर लोकसभा के एनडीए के संयोजक प्रभु नारायण के द्वारा किया गया। मौके पर मंत्री श्री सिंह ने कहा कि शिवहर लोकसभा व पश्चिम चम्पारण लोकसभा क्षेत्र में भ्रमण पर निकले है। इन दोनो क्षेत्रों की जनता ने मन बना लिया है कि देश में तीसरी बार नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री बनाना है। डबल इंजन की सरकार में तेज गति से विकास हो रहा है। देश व बिहार की जनता प्रचण्ड जनादेश देने वाली है। इस अवसर पर जिला उपाध्यक्ष दिलिप सर्राफ ,अभय सिंह, मन्टू सिंह, आयुष नारायण, राम एकवाल यादव, नरेन्द्र साह, रामाकान्त गुप्ता आदि उपस्थित रहे।

सारण लोक सभा क्षेत्र के लिए इवीएम का द्वितीय रैंडमाइजेशन संपन्न

समान्य प्रेक्षक और प्रत्याशियों/राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में किया गया आयोजन

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा। लोक सभा आम चुनाव को लेकर मंगलवार को जिला सूचना विज्ञान कार्यालय में सारण लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र के लिए इवीएम का द्वितीय रैंडमाइजेशन किया गया। इस अवसर पर समान्य प्रेक्षक गुरप्रीत सिंह बत्रा, जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह जिला पदाधिकारी अमन समीर, आरओ सह एडीएम एसएस पांडेय, डीडीसी प्रियंका रानी, नगर आयुक्त सुमित कुमार, सोनपुर एसडीएम कुमार निशांत विवेक, सदर एसडीएम संजय कुमार राय, उप निर्वाचन पदाधिकारी जावेद एकबाल, डीएमडब्लूओ रवि प्रकाश, डीसीओ हरिशंकर कुमार, डीपीआरओ रविन्द्र कुमार, डीआईओ श्री तारणी कुमार समेत निर्वाचन लड़ने वाले अभ्यर्थी या उनके प्रतिनिधि उपस्थित थे। प्रेक्षक श्री सिंह ने अभ्यर्थियों और प्रतिनिधियों से सफल और शांतिपूर्ण मतदान आयोजन में सहयोग की अपील की। उन्होंने कहा कि किसी भी छोटी-बड़ी बात से आरओ को अवगत कराएं। प्रशासन बिल्कुल निष्पक्षता से कार्य के प्रति कृतसंकल्पित है। जिला निर्वाचन पदाधिकारी श्री समीर ने रैंडमाइजेशन की पूरी प्रक्रिया को विस्तार से समझाते हुए बताया कि रैंडमाइजेशन ऐसी प्रक्रिया है जिससे इवीएम के मामले में पारदर्शिता सुनिश्चित होती है। प्रथम रेंडमाइजेशन में इवीएम को विधान सभा वार एलॉट किया गया था। वहीं दूसरे रैंडमाइजेशन से मशीनों को बूथ वार चिन्हित किया जाएगा। इस पूरी प्रक्रिया में कोई मानवीय या मैनुअल कार्य नहीं होता। इसमें किसी को जानकारी नहीं होती कि कौन सी मशीन किस किस बूथ पर जाएगी और न ही इसके द्वारा निर्मित सूची से छेड़ छाड़ की जा सकती है। प्रथम रैंडमाइजेशन के बाद मशीनों को पृथक और स्कैन कर संबंधित विधान सभा के डिस्पैच सेंटर पर भेज दिया गया है। अब उनको बूथवार चिन्हित कर कमिशनिंग का कार्य किया जाएगा। चुनाव आयोग इवीएम की पारदर्शिता को लेकर अति संवेदनशील है। उन्होंने कहा कि इवीएम के प्रत्येक मूवमेंट की सूचना सभी राजनीतिक दलों को दी जाती है। उनकी उपस्थिति में ही सारे कार्य किए जाते हैं ताकि पारदर्शिता बनी रहे। साथ ही उनके साथ सभी सूचियां साझा की जाती हैं। मशीनों के कमिशनिंग या वोटिंग के समय खराब होने वाली मशीनों का विवरण भी तत्काल आप से शेयर किया जाएगा। सभी प्रत्याशियों से भी उम्मीद है कि प्रत्येक डिस्पैच सेंटर पर स्वयं या अपने प्राधिकृत प्रतिनिधि के माध्यम से उपस्थिति सुनिश्चित कर कार्यों का अवलोकन करेंगे। सामान्य प्रेक्षक के आदेश पर चुनाव आयोग के ईएमएस सिस्टम पर रैंडमाइजेशन प्रारम्भ किया गया। मढ़ौरा के 293 बूथ के लिए 368 बीयू, 369 सीयू और 400 वीवीपैट आवंटित किया गया। जबकि छपरा के 331 बूथ के लिए 415 बीयू, 416 सीयू और 450 वीवीपैट, गरखा के 305 बूथ के लिए 383 बीयू, 384 सीयू और 416 वीवीपैट, अमनौर के 275 बूथ के लिए 347 बीयू, 348 सीयू और 376 वीवीपैट, परसा के 280 बूथ के लिए 353 बीयू, 368 सीयू और 399 वीवीपैट तथा सोनपुर के 292 बूथ के लिए 367 बीयू, 368 सीयू और 399 वीवीपैट अलॉट किए गए। रैंडमाइज्ड मशीनों की सूची के प्रत्येक पृष्ठ पर ऑब्जर्वर, जिला निर्वाचन पदाधिकारी, आरओ, इवीएम के वरीय प्रभारी के साथ ही सभी प्रत्याशियों या उनके प्राधिकृत प्रतिनिधियों ने हस्ताक्षर किए। डीएम ने बताया कि हस्ताक्षरित प्रति जिला और आयोग के वेबसाइट पर भी अपलोड कर दी जाएगी। जिसे कोई भी देख सकेगा। वहीं उन्होंने सभी प्रत्याशियों को रैंडमाइज्ड मशीनों की सूची और बूथ लिस्ट की हार्ड कॉपी उपलब्ध कराने का निदेश दिया।

रोटरी सारण ने निकाली मतदाता जागरूकता रैली

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा। पहले मतदान,फिर जलपान इस युक्ति को चरितार्थ करने हेतु शहर की अंतरराष्ट्रीय स्वयंसेवी संस्था रोटरी सारण के द्वारा शहर में आज भव्य बाइक रैली निकाली गई ।इस रैली में सभी सदस्यों ने अपनी भागीदारी बखूबी निभाई ।इस रैली की सफलता के लिए आज सुबह 6:30 से सभी सदस्य काफी उत्सुक थे ।सभी सदस्य अपने हाथों में छोटे-छोटे स्लोगन लिखे हुए तख्तियां लिए हुए थे ।जिस पर लिखा हुआ था,लोकतंत्र की सशक्त तस्वीर,उंगली पर नीली लकीर।,जागरूक समाज की पहचान,शत प्रतिशत मतदान। इत्यादि बहुत सारे स्लोगन से लिखे हुए थे ।रैली शहर के राजेंद्र स्टेडियम से निकलकर थाना चौक,साहेबगंज चौक,मौना चौक होते हुए बाजार समिति,उमा नगर,प्रभुनाथ नगर,दहियावा टोला,जोगणिया कोठी,नगर पालिका चौक,राजेंद्र सरोवर होते हुए राजेंद्र स्टेडियम में वापस आकर समाप्त हुई ।इस खूबसूरत कार्यक्रम में जिला के प्रशासनिक अधिकारी भी शामिल रहे ।टीम को संबोधित करते हुए क्लब अध्यक्ष प्रदीप कुमार ने बताया कि एक भारतीय होने के नाते हमारा दायित्व है हम जरूर अपना मत का प्रयोग करें और एक सशक्त मजबूत सरकार का गठन कर राष्ट्र को समर्पित करें ।कार्यक्रम के संयोजक पूर्व अध्यक्ष राजेश फैशन रहे ।उनके साथ पूर्व अध्यक्ष पंकज कुमार, राजेश जायसवाल, मनोज गुप्ता, दिनेश कुमार गुप्ता, दिलीप पोद्दार, अशोक गुप्ता, उदय गुप्ता, अजय प्रसाद, विजय रंजन, मुकेश गुप्ता, अनिल कुमार पप्पू, शंभू गुप्ता, बासुकी गुप्ता एवं अन्य बहुत सारे सदस्य उपस्थित रहे।

प्रो. किरण बाला का प्रोफेसर के रूप में प्रोन्नति

प्रात : किरण, संवाददाता

रक्सौल। रक्सौल निवासी और प्रख्यात शिक्षाविद् ठाकुरराम बहुमुखी क्यामपस, बीरगंज, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, नेपाल के वनस्पति विज्ञान में कार्यरत प्रो. किरण बाला त्रिभुवन विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान में प्रोफेसर के पद पर प्रोन्नति प्राप्त की है। प्रो. बाला उस विश्वविद्यालय में वनस्पति विज्ञान विभाग में 1989 से कार्यरत है। यह गर्व की बात है। विद्यार्थियों के बीच अतिलोकप्रिय, कुशल प्राध्यापक और सख्त अनुशासन इनकी विशेषता है। प्रो. बाला पर्यावरणविद् और वक्ता भी है। मैट्रिक से लेकर स्नातकोत्तर में लगातार प्रथम श्रेणी प्राप्त किया है। बिहार विश्वविद्यालय ,मुजफ़्फ़रपुर वनस्पति विज्ञान में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान, गोल्ड मेडल प्राप्त प्राप्त कर कीर्तिमान स्थापित किया था। इन्हें ह्लइमीनेंट साइंटिस्ट अवार्ड-2020 भी प्राप्त हो चुका है। इनके शोधपत्र कई राज्यों एवं नेपाल में प्रस्तुत हुआ है, साथ ही इनके पीएचडी का भी कृषि विकास में विशेष स्थान प्राप्त है। सीमांचल क्षेत्र के शिक्षा क्षेत्र में इनका विशेष स्थान प्राप्त है। देश विदेश में इनके शिष्य आज भी इनसे जुड़े है, जो गुरु शिष्य के प्रगाढ़ संबंध को दशार्ता है। इनकी प्रोन्नति पर बिहार राज्य विश्वविद्यालय सेवा आयोग के सदस्य प्रो. अनिल कुमार सिन्हा, प्रो. चंद्रमा सिंह, प्रो. राजकिशोर सिंह, प्रो. पंकज कुमार श्रीवास्तव, प्रो. रामाशंकर प्रसाद, प्रो. जगदीश गुप्ता, प्रो. मनीष दुबे, प्रो. दिनेश पांडेय, सामाजिक कार्यकर्ता स्वच्छता के सिपाही सुरेश कुमार, गुड्डू सिंह, पिंटू गिरी, दुर्गेश साह, प्रो. धनंजय श्रीवास्तव, प्रो. शोभा बनर्जी, ई. जितेंद्र कुमार, राजकिशोर राय उर्फ. भगत जी, राकेश कुशवाहा, नितिन कुमार, चैम्बर ऑफ कॉमर्स के अरुण गुप्ता, आलोक श्रीवास्तव, गणेश धनोठिया, उदय सिंह, संतोष छात्रवंशी, समरजीत कुमार आदि ने प्रो. बाला को बधाई देते हुए कहा है कि उनके प्रोफेसर बनने से रक्सौल का शिक्षा क्षेत्र गौरवान्वित हुआ है। सीमांचल क्षेत्र की पहली महिला है जिन्हें यह स्थान मिला है। एक कुशल गृहिणी के साथ अध्यात्म के प्रति त्यो पूर्णरूपेण समर्पित प्रतिदिन कम से कम दो घंटे तक स्वध्याय करना इनकी विशेष हॉबी है। देश विदेश में इनके शिष्य आज भी जुड़े हैं। गुरुपूर्णिमा के दिन सुबह में गुआना, अफ़्रीकी देश से गुरुपूर्णिमा के दिन प्रो. अब्दुल अंसारी का फोन आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए आता है। उन्हें एक आदर्श शिक्षिका बताते हुए बधाई एवं शुभकामनाएँ दी है। इस उपलब्धि पर सीमांचल क्षेत्र विशेषकर रक्सौल आज गौरवान्वित महसूस कर रहा है।

रामकृष्ण मिशन आश्रम सभागार में माना रेड क्रॉस दिवस

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा : विश्व रेड क्रॉस दिवस के अवसर पर रेड क्रॉस सोसाइटी सारण द्वारा रामकृष्ण मिशन आश्रम के सभागार में एक विशेष आयोजन किया गया ।जिसमें मुख्य अतिथि स्वामी अतिदेवानंद महाराज उपस्थित हुए ।रेड क्रॉस सोसाइटी सारण के सभी सदस्य एवं रेड क्रॉस युवा इकाई के सदस्य कार्यक्रम में शामिल हुए ।मंच संचालन रेड क्रॉस सोसाइटी के सदस्य डॉ० शहजाद आलम ने किया ।रेडक्रॉस के लिए इस वर्ष का थीम था ह्लमानवता को जीवित रखनाह्व इस थीम पर विभिन्न वक्ताओं ने अपने विचार रखे ।रेड क्रॉस सोसाइटी के उपाध्यक्ष डॉ एच० के० वर्मा ने रेड क्रॉस के मूल सिद्धांत की चर्चा की तथा उन्होंने कहा कि हम अपने पड़ोसी से प्रेम रख हम सभी प्रेम संदेश पूरे विश्व में फैलाने का प्रयत्न करें। रेड क्रॉस सोसाइटी के सदस्य जितेंद्र कुमार ने युवाओं को कई उदाहरण देकर सेवा भाव एवं शांति के बारे में संदेश दिया। जिला सचिव जीनत मसीह ने रेड क्रॉस सोसाइटी के इतिहास एवं जनक हेनरी डूनन्त के जीवनी पर प्रकाश डाला तथा उन्होंने अपने संबोधन में नैतिकता पर बल दिया एवं रेड क्रॉस सोसाइटी द्वारा किए गए कार्य कलापो का वर्णन किया ।रेड क्रॉस सोसाइटी के युवा इकाई के प्रभारी भुनेश्वर कुमार ने युवा इकाई के कार्यों के संबंध में विस्तृत जानकारी दी। मुख्य अतिथि स्वामी अतिदेवानंद महाराज ने रेड क्रॉस के मूल सिद्धांतों के विषय में जानकारी देते हुए सभी स्वयंसेवी(रेड क्रॉस) की प्रशंसा करते हुए उन्हें सेवा करने के लिए प्रेरित किया । धन्यवाद ज्ञापन तथा पुर्व में कराए गए निबंध और चित्रकला प्रतियोगिता का पुरस्कार और प्रमाण पत्र वितरण संस्था के सदस्य डॉ० सुरेश प्रसाद सिंह के द्वारा कराया गया ।इस सभा में रेड क्रॉस सोसाइटी के सदस्य डॉ० शशिकांत परासर,सतेन्द्र श्रीवास्तव,मुन्नी कुमारी,संजीव चौधरी, अमरेश मिश्रा,नुसरत,श्रुति आदि उपस्थित थे।

कॉलेज, में मनाया गया अंतराष्ट्रीय थैलेसीमिया दिवस

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा। सेहत केंद्र, राष्ट्रीय सेवा योजना एवं रेड रिबन क्लब राजेंद्र कॉलेज, छपरा के संयुक्त तत्वावधान में आज दिनांक 8 मई 2024 को अंतराष्ट्रीय थैलेसीमिया दिवस के उपलक्ष्य पर एक सेहत संवाद का आयोजन किया गया। संवाद का विषय था -ह्लविश्व में थैलेसीमिया के वर्तमान स्थिति लक्षण एवं रोकथाम और रक्तदान का महत्वह्व। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीय प्राचार्य प्रो. सुशील कुमार श्रीवास्तव ने किया और अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि यह दिवस आनुवंशिक विकारों से पीड़ित रोगियों के संघर्ष के बारे में जागरूकता बढ़ाने सहित थैलेसीमिया के बारे में समाज में जागरूकता बढ़ाने के लिए मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि थैलेसीमिया एक आनुवंशिक विकार है जो माता-पिता से युवा पीढ़ी में रोग स्थानांतरित करता है। मंच संचालन करते हुए सेहत केंद्र की नोडल पदाधिकारी डॉ जया कुमारी पांडेय ने इस वर्ष की थीम ह्लजीवन को सशक्त बनाना, प्रगति को अपनानाः सभी के लिए समान और सुलभ थैलेसीमिया उपचारह्व, पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि पहली बार साल 1994 में थैलेसीमिया इंटरनेशनल फेडरेशन (टीआईएफ) द्वारा अंतरराष्ट्रीय मनाया गया था। तत्पश्चात सेहत केंद्र के पियर एजुकेटर रूपेश कुमार निषाद, अंशु कुमार, रॉबिन राजपूत, जन्नत अफरीन एवम शिवम मिश्रा ने विस्तार से थैलेसीमिया के प्रकार, लक्षणों, कारणों एवम उपचारों पर विस्तार से प्रकाश डाला। पियर एजुकेटर ने कहा कि दुर्भाग्य से, थैलेसीमिया का अभी तक कोई इलाज नहीं है, लेकिन रक्त आधान, अस्थि मज्जा प्रत्यारोपण और जीन थेरेपी जैसे उपचार मौजूद हैं। थैलेसीमिया का शीघ्र पता लगाना और इसे अच्छी तरह से प्रबंधित करना इस विकार से पीड़ित लोगों को बेहतर जीवन जीने में मदद करने के लिए महत्वपूर्ण है। कार्यक्रम पदाधिकारी डॉ. देवेश रंजन ने रक्तदान के महत्व पर प्रकाश डाला। धन्यवाद ज्ञापन करते हुए डॉ. अनुपम कुमार सिंह ने छात्रों से इस दिवस की सार्थकता हेतु अपने आस पास के समुदाय को इस के बारे में जागरूक करने की अपील की साथ ही रक्तदान करने हेतु प्रेरित किया ।इस अवसर पर सचिन कुमार चौरसिया, आशीष, मुस्कान, रोहित, रोशनी, मनीष आदि ने अपनी सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित की।

मेन रोड स्थित जर्जर ताड़ के पेड़ों को हटाने का काम शुरू

प्रात : किरण, संवाददाता

रक्सौल। नगर परिषद रक्सौल द्वारा मेन रोड पर स्थित सूखे और जर्जर ताड़ के पेड़ों को हटाए जाने का कार्य शुरू कर दिया गया है। बीते 12 अप्रैल को शिक्षाविद डॉ. स्वयंभू शलभ ने इन जर्जर ताड़ के पेड़ों को सुरक्षित तरीके से हटाये जाने का आग्रह नगर परिषद सभापति व कार्यपालक पदाधिकारी से किया था, जिस पर संज्ञान लेकर इन पेड़ों को सुरक्षित तरीके से हटाने की व्यवस्था बनाई गई। नगर परिषद जेई राजकुमार राय ने बताया कि 10 सूखे ताड़ के पेड़ों को हटाने का निर्देश मिला है जिनमें 4 हटा दिए गए। बाकी दो तीन दिन में हटा दिए जाएंगे। मौके पर नप उपसभापति प्रतिनिधि राकेश कुशवाहा, डॉ. स्वयंभू शलभ, जेई राजकुमार राय समेत नप कर्मी मौजूद थे। विदित है कि रक्सौल अनुमंडलीय अस्पताल से सोना टॉकीज के बीच करीब एक दर्जन ताड़ के पेड़ मौजूद है, जिनमें अधिकांश सूखकर ठूंठ बन चुके है, जो आँधी में सड़क पर या किसी के घर पर गिर सकते हैं। इनके सूखे हुए पत्ते बिजली के तारों पर गिरकर अक्सर पावर ब्रेकडाउन का कारण बनते हैं। पूर्व में आईडीबीआई बैंक के समीप और नगर परिषद कार्यालय के समीप ताड़ के पेड़ जड़ से टूट कर गिर चुके हैं। इन जर्जर पेड़ों के कारण आसपास के मकान में रहने वालों, आम नागरिकों और सड़क पर चलनेवाले सवारी साधनों के आगे हर समय खतरा मंडराता रहता है। इस कार्य को शुरू किए जाने से लोगों ने राहत की सांस ली है।

इस बार पश्चिम चंपारण लोकसभा की जनता सिर्फ बदलाव चाहती है: मदन मोहन तिवारी

प्रात : किरण, संवाददाता

सुगौली : लोकसभा चुनाव के चुनाव के दिन जैसे जैसे करीब होते जा रहे है वही चुनाव में मतदाताओं के बीच प्रत्याशी लगातार भ्रमण करते हुए दिखाई पड़ रहे है। इंडिया गठबंधन के कांग्रेस के पश्चिम चंपारण के प्रत्याशी मदन मोहन तिवारी सुगौली बाजार सहित नगर के कई क्षेत्रों में भ्रमण करते हुए धर्मेंद्र प्रसाद नायक के आवास पर लोगो से वोट की अपील ।करते हुए बताया की इस बार का वोट देश हित और संविधान बचाने की लड़ाई है और पश्चिम लोकसभा में इस बार की जनता बदलाव और वंशवाद को समाप्त करने के लिए कटिबद्ध है। आम लोग भाजपा के जुमले से परेशान है देश में इस बार चुनाव संविधान बचाने की है। इस बार पश्चिम लोकसभा चुनाव का परिणाम जनता के पक्ष में इंडिया गठबंधन का होगा। मौके पर राजद के सुगौली विधायक शशि भूषण सिंह ने कहा की इस बार लोकसभा चुनाव में मतदाता अपने मतो का प्रयोग बदलाव के लिए करेगी जनता जुमलोबाजी की सरकार निजात चाहती है। कांग्रेस नेता रघुनाथ प्रसाद गुप्ता ने कहा की हमारे महात्मा गांधी भी गुजरात वासी थे मगर उन्होंने कभी झूठ नहीं बोला देश को एक सूत्र में शांति और अमन का पाठ पढ़ाया वही हमारे हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी गुजरात से आते है वे झूठ के सिवा कुछ बोलते ही नहीं देश में सिर्फ हिंदू मुसलमान के अलावा इनके पास कोई और बात है ही नही। देश को गुमराही के रास्ते पर ले जा रहे है ।मौके पर राजद युवा के जिला अध्यक्ष असलम आलम सुगौली कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष अजय कुमार झा राजद प्रखंड अध्यक्ष ताराचंद यादव अमिरका यादव जेपी यादव बैधनाथ त्यागी राधेश्याम शर्मा ओजैर आलम पारस साह रामाश्रय पासवान शेख अदालत ध्रुव सर्राफ राजेश कुमार भोला साह जगत पासवान मो अनिसुरहमान चंदकिशोर यादव दीपू मिश्रा अफरोज आलम तूफान मिया सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे।

जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक के नेतृत्व में छपरा वासियों ने निकाली मतदाता जागरूकता साइकिल रैली

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा। लोकसभा आम निर्वाचन-2024 के अवसर पर अधिक से अधिक मतदाताओं की सहभागिता सुनिश्चित कर मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिये स्वीप कोषांग के माध्यम से पूरे सारण जिले में विभिन्न प्रकार की गतिविधियों का लगातार आयोजन किया जा रहा है। इसी कड़ी में बुधवार को जिलाधिकारी अमन समीर एवं पुलिस अधीक्षक डॉ० गौरव मंगला के नेतृत्व में छपरा वासियों ने मतदाता जागरूकता साइकिल रैली निकाली। इस रैली में समाज के विभिन्न वर्गों एवं संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने सैकड़ो की संख्या में भाग लिया। मतदाता जागरूकता साइकिल रैली राजेन्द्र स्टेडियम छपरा से प्रारम्भ होकर थाना चौक-साहेबगंज-प्रधान डाकघर-मौना चौक- साढा ढाला-प्रभुनाथ नागर-शक्ति नगर- ओवर ब्रिज- कचहरी स्टेशन- जोगिनिया कोठी- नगर पालिका चौक- राजेन्द्र सरोवर- गोपेश्वर नगर- अनुमंडल पदाधिकारी आवास होते हुये पुनः राजेन्द्र स्टेडियम में समाप्त हुई। इस रैली में एनसीसी, स्काउट एंड गाइड, रोटरी, लायंस क्लब, रोटी बैंक, विभिन्न कोचिंग संस्थान, विद्यालय एवं कॉलेज के प्रतिनिधियों/छात्र/छात्राओं के साथ साथ अन्य स्थानीय लोगों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। रैली में मतदाता जागरूकता से संम्बन्धित स्लोगन की तख्तियों तथा मतदाता जागरूकता गीत के माध्यम से छपरा एवं संपूर्ण सारण जिला वासियों को बढ़ चढ़ कर अपने मताधिकार के उपयोग हेतु प्रेरित किया गया। रैली को स्वीप कोषांग के वरीय प्रभारी -सह- उपविकास आयुक्त श्रीमती प्रियंका रानी ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर नगर आयुक्त, अपर समाहर्त्ता, अपर समाहर्त्ता लोकशिकायत सहित विभिन्न विभागों के जिला स्तरीय पदाधिकारी एवं स्वीप कोषांग के सभी नोडल पदाधिकारी एवं कर्मी उपस्थित थे।

पूर्व राज्यपाल गंगा प्रसाद का रक्सौल मे हुआ स्वागत

प्रात : किरण, संवाददाता

रक्सौल। चौरसिया, बरई समाज सेवा संघ, रक्सौल के अध्यक्ष शम्भु प्रसाद चौरसिया के नेतृत्व मे सिक्किम के पूर्व राज्यपाल बाबू गंगा प्रसाद चौरसिया का एक दिवसीय कार्यक्रम के तहत रक्सौल की पावन भूमि के आगमन पर रक्सौल कोईरिया टोला, नहर चौक पर सैकड़ों स्थानीय गणमान्य स्वजातीय के साथ ग्राम पंचायत राज हरदिया के सरपंच लक्ष्मण प्रसाद चौरसिया, समाजसेवी अजय कुमार चौरसिया, शिवम चौरसिया, हृदेश प्रसाद चौरसिया, सुरेन्द्र चौरसिया, शुकुल जी चौरसिया, डॉ. कुमार मनीष चौरसिया, ई.निशांत प्रवीण चौरसिया, विंध्याचल चौरसिया, नवल किशोर चौरसिया, कृष्ण मोहन चौरसिया, सिंहासन प्रसाद चौरसिया, वार्ड पार्षद पति छोटेलाल चौरसिया तथा रिची रोहन आदि ने पुष्प माला पहनाकर स्वागत व अभिनंदन किया। जिसकी जानकारी अध्यक्ष शम्भु चौरसिया ने देते हुए बताया कि महामहिम पूर्व राज्यपाल बाबू गंगा प्रसाद चौरसिया जी का रक्सौल के स्वजातीय बंधुओं से अंतरंग स्नेह व प्यार वर्षों से प्रगाढ़ रहा है। प्रत्येक वर्ष किसी न किसी अवसर पर रक्सौल की पावन भूमि पर महामहिम जी के आगमन से यहां के स्वजनों मे अपनापन व अटूट स्नेहिल भाव के रूप आशिर्वाद प्राप्त होता रहता है। इसी यात्रा क्रम मे पूर्व राज्यपाल जी ने बेतिया लोकसभा संसदीय क्षेत्र रक्सौल के विभिन्न ग्रामीण इलाकों हरदिया कोठी, रतनपुर, गम्हरिया, भवानीपुर, भैरवा टोला, श्यामपुर, आदापुर,बेलदरवा आदि मे जाकर हजारों स्वजातीय बंधुओं से औपचारिक मुलाकात कर समाजिक क्रियाकलापों तथा राष्ट्र हित मे मतदान करने आह्वान किया। जहां सभी स्वजनों ने गंभीरता से वर्तमान राजनीतिक घटनाक्रमों व समाजिक कार्यो की विस्तृत जानकारी दी। आदापुर के सैकड़ों लोगों ने रात्रि मे महामहिम जी के साथ एक बैठक कर अपनी अपनी बातों को साझा किया और राष्ट्र हित मे अधिक से अधिक मतदान करने की प्रतिबद्धता से अवगत कराया। वहीं श्यामपुर चौक अवस्थित बबलू चौरसिया के आवास पर संध्या नास्ता तथा श्यामपुर गांव मे मुखिया पति रामचन्द्र चौरसिया व चन्द्र मोहन चौरसिया के नेतृत्व मे सैंकडों लोगों ने पूर्व राज्यपाल जी का स्वागत व अभिनंदन किया तथा आदापुर बाजार मे रात्रि भोजन स्व. अनुठा लाल चौरसिया के आवास पर प्रबंध किया गया। जहां बेलदरवा के पूर्व मुखिया आलोक चौरसिया, सुबोध चौरसिया, बच्चु चौरसिया, विजय कुमार चौरसिया, डॉ.सुजीत चौरसिया आदि मौजूद रहे। साथ ही रक्सौल के आर्य समाज सेवा सदन मे प्रोफेसर रामाशंकर प्रसाद, समाजसेवी भरत प्रसाद गुप्ता,मनोज कुमार चौरसिया, विपिन चौरसिया, विक्की चौरसिया,आयुष चौरसिया आदि के साथ साथ सैकड़ों वैश्य समाज के प्रतिनिधियों ने महामहिम जी के विचारों को शांतिपूर्ण ढंग से श्रवन किया। वहीं मित्र राष्ट्र नेपाल के सांसद सह पूर्व मंत्री अजय चौरसिया ने बाबू गंगा प्रसाद चौरसिया जी से औपचारिक व स्नेहिल शिष्टाचार मुलाकात कर कुशल-क्षेम जाना और ईश्वर से दिघार्यु होने की कामना किया। पूर्व राज्यपाल ने अपनी सुखद यात्रा को सफल व यादगार बनाने के लिए सभी लोगों को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि पटना प्रस्थान से लेकर रक्सौल से वापसी तक कि यात्रा मे प्रशासनिक अधिकारियों का भरपूर सहयोग मिला।

हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस 40 वर्षों बाद अपने गुरु से मिल, हो गए विभोर

● अंग बस्त्र व पुष्पगुच्छ देकर गुरु को किया सम्मानित, लिया आशीर्वाद

प्रात : किरण, संवाददाता

रक्सौल। वीरगंज नेपाल स्थित हाईकोर्ट के चिफ जस्टिस रत्न बहादुर बागचंद मोतिहारी पहुँच अपने गुरू से मिल उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। चालिस बर्ष पहले ब्रृज किशोर श्रीवास्तव ने हाईस्कूल में उन्हें पढाया था। अंग्रेजी के प्रसिद्व शिक्षक श्री श्रीवास्तव ने पश्चिम नेपाल के धनगढी शहर स्थित पंचोदय सेकेण्डरी स्कूल में अपने विद्यार्थी रत्न बहादुर बागचन्द को पढ़ाया था। नेपाल के न्यायिक सेवा में रहकर अन्तर्राष्ट्रीय पहचान बनाये हुए चिफ जस्टिस रत्न बहादुर का अपने जीवन में श्रीवास्तव सर के प्रति अटूट प्रेम व स्नेह रहा। पिछले तीन दशक तक इस गुरु व शिष्य का मुलाकात नहीं हुई थी। अपने वीरगंज प्रवास के क्रम में चिफ जस्टिस ने अपने शिक्षक को फिर से तलाशना शुरू किया। इधर श्रीवास्तव सर सेवा निवृत्त होकर चम्पारण के मोतिहारी में रह रहे थे। आखिरकार गुरु शिष्य का मिलन हो ही गया। मोतिहारी में ब्रिज किशोर श्रीवास्तव सर को चिफ जस्टिस रत्न बहादुर बागचन्द ने अंग बस्त्र व पुष्पगुच्छ देकर सम्मानित किया और गुरु का आशीर्वाद प्राप्त किया। जब इस बात की जानकारी आसपास के लोगों को मिला तो वे भी गुरु शिष्य का अटूट प्रेम देखने पहुचे व गुरु के प्रति समर्पण भाव को देख भाव विभोर हो गए। नेपाल सरकार के इतने उच्चे पद पर कार्यरत रहकर भी चिफ जस्टिस की विनम्रता और गुरु भक्ति का उपस्थित लोगों ने काफी सराहना किया। नेपाल भारत जन सम्बन्ध की यही विशेषता है कि लोग एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। नेपाल के शैक्षिक उन्नयन में भारतीय नागरिकों का अमूल्य योगदान बताया जाता है।

विश्व थैलेसीमिया दिवस के मौके पर लियो क्लब छपरा टाउन ने लगाया रक्तदान शिविर

प्रात : किरण, संवाददाता

छपराः अंतरराष्ट्रीय स्वयं सेवी संस्था लियो क्लब छपरा टाउन के द्वारा ह्यवर्ल्ड थैलेसीमिया डेह्ल के मौके पर छपरा सदर अस्पताल में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया, जिसमे काफी संख्या में युवा युवती ने भाग लिया। लायंस क्लब के पुर्व जिलापाल वरिष्ठ नेत्र चिकित्सक डॉ एस के पाण्डेय ने कहा की थैलेसीमिया एक ऐसी बीमारी है जिसके बारे में लोगों को बहुत कम जानकारी है। इस बीमारी के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए हर साल 8 मई को ह्यवर्ल्ड थैलेसीमिया डेह्ल मनाया जाता है। थैलेसीमिया एक जेनेटिक ब्लड डिसऑर्डर है जिसमें शरीर में हीमोग्लोबिन का स्तर असामान्य तरीके से प्रभावित होने लगता है। इस वजह से शरीर में धीरे-धीरे खून की कमी होने लगती है। वही लियो अध्यक्ष आशुतोष पाण्डेय के देखरेख में रक्तदान शिविर का सफल आयोजन किया गया। लियो मनीष मनी ने कहा की थैलेसीमिया एक गंभीर बीमारी है, इस बीमारी से ग्रसित मरीज को महीने में दो बार रक्त की आवश्यकता कभी कभी हो जाती है जब भी ब्लड बैंक के माध्यम से जानकारी मिलती है हमारे लियो क्लब सदस्यो के द्वारा हमेशा सहयोग करने की प्रयास किया जाता है। इस मौके लायंस अध्यक्ष गोविंद सोनी ने रक्तदान शिविर में उपस्थित होकर सभी रक्तदाताओ का हौसला बढ़ाया और सभी को रक्तदान करने की अपील किया। उक्त मौके पर लियो अमित सोनी, रोमी कश्यप, खुशबू कुमारी, रोशनी परासर, सर्वेश रंजन आदि मौजूद थे।

संक्षिप्त खबरें

जिला विधिज्ञ संघ ने किया सम्मानित

औरंगाबाद। व्यवहार न्यायालय औरंगाबाद के एडीजे रत्नेश्वर कुमार सिंह को जिला विधिज्ञ संघ औरंगाबाद के अध्यक्ष विजय कुमार पाण्डेय और महासचिव जगनरायण सिंह ने शाल और बुके देकर सम्मानित किया। उसके सुखद भविष्य की कामना की। जिला विधिज्ञ संघ औरंगाबाद के अध्यक्ष विजय कुमार पाण्डेय ने कहा कि एडीजे रत्नेश्वर कुमार सिंह अपने न्यायिक कार्यों के प्रति पुरी तरह से निष्ठावान रहे। उनके व्यवहार कुशलता और सादगी प्रेरक है। अपने 41 माह के कार्यकाल में बहुत सारे लम्बित मामलों का निष्पादन किया है जो सराहनीय है। महासचिव जगनरायण सिंह ने कहा कि बार और बेंच में मधुर सम्बन्ध में उनका अमूल्य योगदान रहा है।

जहां तीर्थ यात्री करने जाते थे पिंडदान, वह धर्मशाला आज हुआ वीरान

औरंगाबाद। सदर प्रखंड स्थित जम्होर में अवस्थित पुनपुन बटाने संगम तट के समीप विष्णु धाम से कुछ ही दूरी पर अवस्थित अनुग्रह नारायण रोड घाट स्टेशन के समीप अवस्थित धर्मशाला की स्थिति काफी जर्जर हो चुकी है। जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन औरंगाबाद के उपाध्यक्ष सुरेश विद्यार्थी ने अवलोकन करते हुए बताया कि इस धर्मशाला की स्थापना राय बहादुर सूरजमल जी शिव प्रसाद झुनझुनवाला ने 1907 ईस्वी में की थी। कोलकाता के निवासी सूरजमल जी ने जिस समय धर्मशाला की स्थापना की थी उस समय का शिलालेख उन्होंने धर्मशाला के मेन गेट पर खुदवाई थी। जिसमें इसका जिक्र किया गया है।117 साल पुराने धर्मशाला के शिलालेख में जिक्र है कि संगम तट पर कोई भी पिंड दानी अथवा तीर्थ यात्री पिंडदान करने या विष्णु धाम का दर्शन करने आए तो उसे तीन दिन तक इस धर्मशाला में ठहरने के लिए जगह दी जाए।ठहरने के लिए उसे किसी प्रकार का कोई किराया नहीं लिया जाए। 100 वर्ष पहले पुनपुन बटाने के संगम की धारा धर्मशाला के समीप ही गुजरती थी। बाढ़ की विभीषिका के कारण नदी के कटाव के कारण पुनपुन एवं बटाने का धारा मुडकर संगम का तट धर्मशाला से आधा किलोमीटर दक्षिण की ओर चला गया।

राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन द्वारा मनाई गई रविन्द्र नाथ टैगोर की जयंती

गया।नोबेल पुरस्कार से सम्मानित और महान कवि रविंद्र नाथ टैगोर जी का 163बी जयंती राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन के प्रदेश कार्यालय में मनाया गया बिहार प्रदेश अध्यक्ष डॉ मनीष पंकज मिश्रा जी के द्वारा सर्वप्रथम उनके चित्र पर माला पुष्प चढ़ा कर श्रद्धा सुमन अर्पित किया गया इस अवसर पर डॉक्टर मनीष पंकज मिश्रा ने कहा भारत के पहले नोबेल पुरस्कार विजेता को हम आज श्रद्धा सुमन अर्पित कर रहे हैं बंगाल में जन्मे रविंद्र नाथ टैगोर जी साहित्य में नोबेल पुरस्कार मिला रवींद्रनाथ टैगोर जी का प्रतिभा को देखते हुए नॉन यूरोपीय और प्रथम भारतीय होने का नोबेल पुरस्कार पाने का गौरव क्षणप्राप्त हुआ डॉ रविंद्र नाथ टैगोर जी सबसे प्रसिद्ध कविता संग्रह गीतांजलि के लिए दिया गया था वह कवि के साथ-साथ नाटककार संगीतकार दार्शनिक समाज सुधारक थे आज श्रद्धा सुमन अपील करने वालों में राणा रणजीत सिंह प्रमोद कुमार हीरा यादव सुनील बंबईया बबलू गुप्ता विक्की बनवाल सहित दर्जनों श्रद्धासुमन अर्पित किए हैं।

डीएम ने लोगों की सुनी फरियाद, समाधान का अधिकारियों को दिया निर्देश

गया।दोपहर को अत्यधिक गर्मी के बावजूद समाहरणालय में आए अनेकों फरियादी को देख जिला पदाधिकारी गया डॉ0 त्यागराजन एसएम अपने कार्यालय कक्ष से निकलकर सभी फरियादियों से बारी बारी से सबकी फरियाद को सुना है। लगभग 10 लोगो की समस्याओं को सुना गया है। डोभी अंचल के भदौरा गाँव एरिया से आये व्यक्ति ने आपसी जमीन बटवारा को लेकर झगड़ा से संबंधित समस्या को बताया इस पर जिलाधिकारी ने अंचल अधिकारी से मोबाइल पर से बात करते हुए निर्देश दिया है कि मामले को सुनकर उचित निर्णय करें। उन्होंने कहा कि संबंधित विवादित स्थल को स्वयं निरीक्षण भी करना सुनिश्चित करेंगे। शेरघाटी प्रखंड के एक आवेदक ने बताया कि उन्हें भूमि सरकार द्वारा उपलब्ध कराई गई है परंतु उसमें कॉलोनी का निर्माण करने कुछ लोग जबरन नहीं दे रहे हैं इस पर जिला पदाधिकारी ने अनुमंडल पदाधिकारी शेरघाटी को उक्त मामले की समीक्षा कर नियमानुसार कार्रवाई करने का निर्देश दिए हैं।चारनदिह तेतर मोहड़ा के आवेदक ने बताया कि उन्हें कॉलनी(घर) बनाने का पैसा अब तक नही मिला है, जिसके कारण वो घर बनाने से वंचित हैं। डीएम ने प्रखंड विकास पदाधिकारी मोहरा को दूरभाष के माध्यम से फोन कर संबंधित मामले की जांच कर अभिलंब नियम अनुसार कार्रवाई करने का निर्देश दिए हैं।

भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी भोजपुर के द्वारा मनाया गया विश्व रेड क्रॉस दिवस

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। विश्व रेड क्रॉस दिवस के अवसर पर भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी भोजपुर जिला इकाई की तरफ से दो स्थानों पर , रेड क्रॉस कार्यालय आरा एवं उत्क्रमित मध्य विद्यालय बैंपली आंचल उदवंत नगर में भव्य समारोह का आयोजन किया गया। आज के कार्यक्रम के उद्घाटनकर्ता विक्रम विरकर वाइस प्रेसिडेंट सह उप विकास आयुक्त भोजपुर रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता डा विवेकानंद यादव अध्यक्ष भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी ने की। 1.साईकिल रैली ---सर्वप्रथम कार्यक्रम का उद्घाटन विक्रम विरकर वाइस प्रेसिडेंट के द्वारा विभिन्न स्कूलों से आए बच्चों की साइकिल रैली को सुबह 7.30 झंडी दिखाकर रवाना किया गया। इस साइकिल रैली में बच्चों के द्वारा रेड क्रॉस दिवस, मानवता की सेवा के साथ-साथ मतदाता जागरूकता से संबंधित बैनर और पोस्ट भी प्रदर्शित किए गए। यह रैली शहर के मुख्य मार्गो से होते हुए पुनः रेड क्रॉस परिसर दक्षिणी रमना रोड में आकर समाप्त हुई। आज के इस कार्यक्रम में जिन विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने सहभागिता निभाई उसमें संभावना आवासीय उच्च विद्यालय, आर एस मेमोरियल स्कूल जगदेव नगर ,बालिका विद्यालय, जैन कन्या पाठशाला, भगिनी निवेदिता एवं मॉडल इंस्टिट्यूट प्लस टू के बच्चे प्रमुख रहे । 2.झंडोतोलन ---साइकिल रैली की शुरूआत के साथ ही कदम से कदम मिलते हुए हिंदुस्तान स्काउट गाइड की एक टुकड़ी ने रणधीर कुमार ठाकुर एवं समन्वयक मंटू चौधरी के नेतृत्व में सभी विशिष्ट जनों को गाड आफ आनर देते हुए एस्कॉर्ट कर झंडोतोलन मंच तक लाकर अपनी भूमिका निभाई। झंडोतोलन वाइस प्रेसिडेंट के द्वारा किया गया। झंडोतोलन के साथ ही संभावना आवासीय उच्च विद्यालय के जूनियर रेड क्रॉस की छात्राओं की टीम के द्वारा रेड क्रॉस झंडा गीत प्रस्तुत किया गया जिसे बच्चों ने संगीत शिक्षा धर्मेंद्र सिंह एवं उनकी टीम के दिशा निर्देश में तैयार किया। 3.सर हेनरी डुनाट के चित्र पर माल्यार्पण --तदुपरांत रेड क्रॉस के संस्थापक सर हेनरी डुनॉट के चित्र पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि अर्पित करते हुए पीड़ित मानवता की सेवा का सभी सदस्यों के द्वारा संकल्प भी लिया गया ।4. सेंट्रल कोऑपरेटिव बैंक भोजपुर द्वाराआरो वाटर कूलर का अनुदान---इस अवसर पर रेड क्रॉस दिवस की गरिमा को बढ़ाते हुए सेंट्रल कोऑपरेटिव बैंक भोजपुर के द्वारा भीषण गर्मी के प्रकोप से राहत दिलाने के लिए जनहित में भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी भोजपुर जिला इकाई को 120 लीटर का आरो वाटर कूलर भी अनुदानित किया गया, जिसका फीता काट कर वाइस प्रेसिडेंट एवं अध्यक्ष डॉक्टर वी एन यादव ने उद्घाटन किया और पानी को भी ग्रहण किया । 5. रेड क्रॉस सेमिनार भवन का उद्घाटन--आज के इस कार्यक्रम में रेड क्रॉस भवन के ऊपरी तल पर स्थित सेमिनार हॉल जिसका पुनर्निर्माण कराया गया है उसका भी फीता काटकर उद्घाटन किया गया । इस हाल का जीर्णोद्धार एवं संसाधनों द्वारा सुसज्जित सभी कार्यकारिणी के सदस्यों के सहयोग से किया गया है जो आने वाले समय में छोटे-बड़े आयोजन में अपनी सहभागिता निभाएगा।

6. गोष्ठी का आयोजन---"डीप्रल्लॅ ल्र्र्ल्ल३८ अ'५ी"प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी विश्व रेड क्रॉस की दिवस के अवसर पर एक गोष्ठी का आयोजन भी किया गया- गोष्ठी का विषय, "कीपिंग ह्यूमैनिटी अलाइव" है ।गोष्ठी में अपने उदगार व्यक्त करते हुए श्री विक्रम विरकर वाइस प्रेसिडेंट ने सर्वप्रथम समस्त रेड क्रॉस के सदस्यों को शुभकामनाएं दी और यह बताया कि जिस प्रकार विश्व लगातार युद्ध की विभीषिका और प्राकृतिक अप्राकृतिक आपदाओं को झेल रहा है उसमें इंसानियत ही सबसे महत्वपूर्ण है जो मानवता की सेवा करने की प्रेरणा हमें देता है। हम सभी को सर हेनरी डुनॉट के जीवन चरित्र से प्रेरणा लेनी चाहिए और अपने जीवन में कुछ ना कुछ ऐसी सेवा भावना उतारनी चाहिए जो विश्व की रक्षा कर सके, देश और समाज की रक्षा कर सके ।कीपिंग ह्यूमैनिटी अलाइव अर्थात मानवता जिंदा रहे यह विषय आज के संदर्भ में बहुत ही महत्वपूर्ण हो चुका है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वाइस चेयरमैन डॉ राजेश सिंह ने सर हेनरी डुनॉट नॉट के चरित्र पर प्रकाश डाला और रेड क्रॉस की स्थापना के संदर्भ में बहुत ही महत्वपूर्ण बातें बतायी। अध्यक्ष अध्यक्ष डॉ वी एन यादव ने कहा कि जिस प्रकार विश्व में लगातार होते हुए युद्ध की विभिषिका से मानवता प्रभावित हो रही है उसकी रक्षा करना और मानव में मानव का मानव के प्रति प्रेम जगाना बहुत ही आवश्यक है।

इसरो के वैज्ञानिकों ने किया दरभंगा के तारामंडल का दौरा, सुन्दरता व शैली को सराहा

प्रात : किरण संवाददाता

पटना / दरभंगा। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के वैज्ञानिकों ने बुधवार को दरभंगा के तारामंडल का दौरा किया। मौके पर वैज्ञानिक एमके पांडे व दिलीप वर्मा ने तारामंडल की सुंदरता, उपकरणों की विशेषता और शैली को खूब सराहा । वे मानते हैं कि यह विश्व स्तरीय तारामंडल है, जो छात्रों को अंतरिक्ष विज्ञान में रुचि लेने के लिए प्रेरित करेगा। तारामंडल का यह दौरा विभिन्न पहलुओं को सामने लाने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान किया। वैज्ञानिकों ने तारों की चमक, आसमान की साफ-सफाई और तारामंडल की सामग्री के प्रयोग से उत्पन्न होने वाली मानवता की अद्भुतता की चर्चा की।

उन्होंने तारामंडल के उपकरणों की विशेषता पर भी प्रकाश डाला` इसके अलावे वैज्ञानिकों ने स्थानीय लोगों से भी इस तारामंडल की महत्ता पर ध्यान देने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि इस तरह की पहल स्थानीय बच्चों के लिए एक महत्वपूर्ण सीखने का माध्यम हो सकती है, जो अंतरिक्ष विज्ञान और उसमें होने वाली घटनाओं के बारे में अधिक जानने के लिए उत्सुक हैं।

इस प्रकार की पहल से स्थानीय समुदाय की तकनीकी और शैक्षिक उन्नति में महत्वपूर्ण योगदान होगा, जो आने वाले सालों में भारत को विकसित देशों के रूप में सामिल होने में मदद करेगा` वहीं वैज्ञानिकों ने दरभंगा इंजीनियरिंग कॉलेज का भी दौरा कर विश्व स्तरीय भाषा प्रयोगशाला, सेमिनार हॉल, सम्मेलन कक्ष, कंप्यूटर केंद्र, ऑडिटोरियम की खूबसूरती देखा । वहीं इस दौरे को लेकर डीसीई दरभंगा के प्राचार्य डॉ संदीप तिवारी ने कहा कि इस यात्रा के माध्यम से, वैज्ञानिकों ने डीसीई दरभंगा के छात्रों को अंतरिक्ष विज्ञान और तकनीकी शिक्षा के महत्व को साझा करने का मौका दिया। उन्होंने कहा कि इसरो वैज्ञानिकों का दरभंगा के तारामंडल का दौरा एक महत्वपूर्ण कदम है जो अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में जागरूकता और उत्साह को बढ़ावा देगा।

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के जिलाध्यक्ष की अध्यक्षता में किया गया बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के जिलाध्यक्ष निर्मल सिंह शक्रवार की अध्यक्षता में बैंक कॉलोनी अहीरपूरवा में बैठक आयोजित की गई जिसमें गुरु परंपरा के वर्तमान गुरु डॉ शशि बाबा के 25वें दांपत्य जीवन पर पूजन, परिचर्चा एवं भजन- संध्या , रामेश्वरपीठ ,मोहनपुर करजा, बड़हरा में आयोजित करने का निर्णय लिया गया। श्री शक्रवार की अध्यक्षता में आयोजन समिति द्वारा कार्यक्रम मनाने की सभी आवश्यक तैयारियों का जायजा लिया गया ।इसमें श्री शक्रवार ने बताया कि सर्वप्रथम कार्यक्रम की शुरूआत वैदिक रीति से शंखनाद के बीच मंगलाचरण एवं स्वस्तिवाचन एवं वर-कन्या पूजन पंडित रवि शास्त्री के आचार्यत्व में होगा उसके बाद, "विवाह बंधन है या अवसर"विषय पर परिचर्चा का आयोजन होगा जिसकी अध्यक्षता प्रोफेसर गांधी जी राय करेंगे तथा मुख्यवक्ता डॉ आचार्य भारत भूषण पांडे होंगे जबकि विषय प्रवर्तन एवं स्वागत भाषण डॉ शशि बाबा स्वयं करेंगे। इसके साथ ही विशिष्ट अतिथि के रूप में वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय के सीनेटर एवं विश्व हिंदी सम्मेलन के जिला अध्यक्ष प्रोफेसर बलराज ठाकुर, भोजपुरी के विभागध्यक्ष प्रोफेसर दिवाकर पांडे,वरिष्ठ अधिवक्ता लक्ष्मी नारायण राय, साहित्यकार डॉ जनार्दन मिश्रा, पूर्व मेयर रूबी कुमारी ,डा ममता मिश्रा, डॉ किरण,डॉ रेणु, डॉ मधु, डॉ मृत्युंजय, इत्यादि होंगे। अंत में भंडारा का आयोजन किया जाएगा। अंत में बैठक की अध्यक्षता करते हुए श्री शक्रवार ने कहा डॉ शशि बाबा गृहस्थ का सबसे बड़ा धर्म गृहस्थी मानते हैं। अपने परिवार को ठीक से चलाना और सही समाज का निर्माण करना यही गृहस्थ धर्म का सार है। डॉ शशि बाबा शिष्यों को बताते हैं कि गुरु के कमजोर होने से समाज कमजोर होता है। वे बताते हैं, राज्य को राजा चलाते हैं और राजा को गुरु। इतिहास साक्षी है राजा चंद्रगुप्त को चाणक्य ने बनाया और शिवाजी को समर्थ रामदास ने। आज देश को चरित्रवान गुरु की आवश्यकता है, तभी भारत विश्व गुरु बन सकता है। इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा सतत प्रयासशील है। शास्त्रीय संगीत भी होगा, जिसमें बीएचयू से दीपक कुमार, तबला पर जगदंबा सिंह शास्त्रीय संगीत के लिए पंडित राकेश, अमरेंद्र ओझा, शिवम सिंह इत्यादि भाग लेंगे।

गायत्री महायज्ञ के तीसरे दिन कड़ी धूप के बाद भी भारी भीड़

औरंगाबाद। सदर प्रखंड स्थित ग्राम जम्होर के दुर्गा मैदान के प्रांगण में पांच दिवसीय गायत्री महायज्ञ के तीसरे दिन विभिन्न संस्कारों की चर्चा की गई। नौ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में पधारे शांतिकुंज हरिद्वार के योग्य आचार्यो के सान्निध्य में प्रातः देव पूजन जप एवं हवन का कार्यक्रम चलाया गया। नवधा भक्ति की चर्चा करते हुए भक्तमाल के कथा के निमित महान भक्त नरसी मेहता की कथा को कहते हुए प्रवाचिका संगिता मिश्रा ने कहा कि कलियुग में भगवान श्री कृष्ण ने भक्त नरसी मेहता को साक्षात दर्शन दिए। नरसी मेहता का सारा जीवन भजन,कीर्तन एवं भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति में बीता।श्री कृष्ण के भक्ति में अपने जीवन की सारी कमाई को जरूरतमंदों में दान कर दिया था। सुबह सवेरे से ही यज्ञ में फेरी देने वाले श्रद्धालुओं की तांता लगी रही।

राजा परीक्षित ने कलयुग को आने से रोका : राधा मोहन महाराज

भागवत कथा में श्रद्धांलूओं ने लगाई डुबकी

प्रात : किरण संवाददाता

तरारी प्रखंड के जेठवार भट्ट में माँ बरेजी मंदिर के भूमि पूजन के अवसर पर माँ बरेजी ट्रस्ट द्वारा आयोजित भागवत कथा ज्ञान यज्ञ में श्रीमद जगदगुरू निम्बकाचार्य पीठाधिश्वर स्वयंभू श्री राधा मोहन शरण देवचार्य जी महाराज ने आज की कथा का प्रारम्भ योग शब्दों से किया. परम पूज्य श्री महारज ने कहा कि जब कलयुग प्रवेश कर रहा था तब राजा परीक्षित ने कलयुग को आने से रोका. फिर भी कलयुग ने कुछ जगह मांगी. उन जगहों की व्याख्या करते हुए परम पूज्य गुरुदेव ने उन कथाओं की विस्तार पूर्बक व्याख्या की. उन्होंने बताया कि किस प्रकार से परीक्षित का कुछ श्राप लगा।

देवचार्य जी महाराज ने 18 पुराणों के श्लोकों के बारे में बताया. इसके साथ ही सुखदेव चरित्र भीष्म चरित्र आदि का श्रवण कराया. सुबह से दोपहर तक यज्ञ कुंड की परिक्रमा के लिए श्रद्धांलूओ की लाइन लगी रही. माँ बरेजी मंदिर ट्रस्ट द्वारा आयोजिए इस भागवत कथा ज्ञान यज्ञ में आज मथुरा वृन्दावन से आये रासलीला मण्डली ने श्रद्धांलूओ का मन मोह लिया. ट्रस्ट के उपाध्यक्ष पुरोषोत्तम भट्ट ने बताया की वैदिक मन्त्रोंचरण, भागवत कथा, रासलीला आदि अध्यात्म से प्राकृतिक और आत्मिक शुद्धि होती हैं. जेठवार भट्ट पंचायत के मुखिया एवं आयोजन समिति के वरीय सदस्य युवा नेता श्री मुन्ना कुमार ने कहा कि यज्ञ स्थान पर किसी श्रद्धांलू को कोई परेशानी न हो इस बात के लिए पंचायत परिवार व यज्ञ समिति पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं. इस अवसर पर राहुल राय ,संतोष राय, वेद प्रकाश राय, जितेंद्र राय, सत्येन्द्र राय,राकेश राय, अमन राय,पिंटू राय,बोलबम राय, बोलबम राय, संतोष राय, मुकेश यादव, मुन्ना यादव, सुधीर यादव, कमलेश यादव आदि युवा स्वयमसेवी श्रद्धांलूओं की सेवा में तत्पर दिखे।

दहेज हत्या के मामले में जेल में बंद पति दोषमुक्त

प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद। व्यवहार न्यायालय औरंगाबाद में एडिजे दस रत्नेश्वर कुमार सिंह ने कासमा थाना कांड संख्या -09/23 में निर्णय पर सुनवाई करते हुए साक्ष्य के अभाव में मृतका सिम्पी देवी के सास- कलावती देवी, देवर -सदानंद कुमार और काराधीन पति- दयानंद कुमार पडरिया कासमा को भादंवि धारा 304 (बी)34 में दोषमुक्त कर रिहा कर दिया है। अधिवक्ता सतीश कुमार स्नेही ने बताया कि प्राथमिकी सूचक विंदेश्वर यादव पौथू ने 10 जनवरी 2023 को प्राथमिकी में कहा था कि शादी के कुछ माह बाद पचास हजार रुपए लड़की के ससुराल वालों ने मांग की जिसे सूचक ने दे दिया तो पुनः एक लाख की मांग हुई जिसे देने में सूचक ने असमर्थता जताई। 10 जनवरी 2023 को खबर आई कि लड़की आग से जल गई है। रफीगंज अस्पताल गया तो मालुम हुआ कि बेहतर इलाज हेतु मगध मेडिकल कॉलेज गया रेफर कर दिया गया है। मगध मेडिकल कॉलेज में लड़की की मृत्यु हो गई थी, घटना के बाद से पुरे परिवार घर छोड़ कर भाग गया था। न्यायालय से गैर-जमानती वारंट जारी होने पर परिवारवालों ने 15 जुलाई 2023 को न्यायालय में आत्मसमर्पण किया था। जेल में बंद पति मैकेनिकल इंजीनियर था। उपरोक्त अभियुक्तों पर संज्ञान 17 अगस्त 2023 को लिया गया था और आरोप गठन 03 अक्टूबर 2023 को हुई थीं। मात्र 17 माह में मामले का निष्पादन किया गया है।

सर्वाधिक 39 बार रक्तदान करने वाले रक्तवीर सल्लू खान को किया गया सम्मानित

प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद। विश्व रेडक्रॉस दिवस पर शहर के रेडक्रॉस भवन के सभागार में एक कार्यक्रम आयोजित कर स्वैच्छिक रक्तदान शिविर एवं रक्तवीर सम्मान कार्यक्रम आयोजित किया गया। सम्मान कार्यक्रम में सर्वाधिक 39 बार रक्तदान करने वाले रक्तवीर एवं पैगाम ए इंसानियत मुस्लिम समुदाय के जिलाध्यक्ष शाहनवाज खान उर्फ सल्लू खान को सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें रेडक्रॉस के चेयरमैन सतीश कुमार सिंह के द्वारा दिया गया। गौरतलब है कि सल्लू खान जिले के ऐसे सामाजिक कार्यकर्ता है जो जाड़ा गर्मी या बरसात हर मौसम में सामाजिक कार्यों के प्रति समर्पित रहते है। रात्रि के दो बजे भी अगर किसी को इनकी जरूरत पड़े और इन्हें याद करे तो मदद के लिए हाजिर रहते है। सल्लू खान को उनके समाजसेवा को लेकर कई बार जिला प्रशासन से सम्मान भी प्राप्त हो चुका है। रक्तदान से संबंधित सम्मानित होने पर समाजसेवी समाजसेवी सल्लू खान को सदर अस्पताल के उपाधीक्षक डॉक्टर आशुतोष कुमार सिंह मजबूत आलम उर्फ मुन्नू वार्ड परिषद सिकंदर हयात डॉक्टर रवि रंजन डॉक्टर शोभा रानी नगर परिषद के मुख परिषद औरंगाबाद के अध्यक्ष उदय गुप्ता कोऑपरेटिव बैंक के अध्यक्ष संतोष कुमार सिंह नगर परिषद के उपाध्यक्ष मोहम्मद अहसान आदि लोगों ने बधाई देते हुए कहा कि सल्लू खान एक सामाजिक कार्यकर्ता और वह समाजसेवी के लिए जाने जाते हैं वहीं सल्लू खान ने भी सम्मानित होने पर कहा कि मुझे आज का दिन गर्भ महसूस हो रहा है कि मैं इसी तरीके से अपना सेवा लोगों की बीच करता रहूं ताकि सेवा से ही लोगों का करने पर इंसानियत का मिसाइल टाइम करना हमारा मकसद है।

डॉ मनीष ने नगर निगम द्वारा टैक्स बढ़ोतरी पर पुनः विचार करने की मांग की

गया। नगर निगम गया के द्वारा होल्डिंग टैक्स बढ़ोतरी की अधिसूचना जारी होने पर भाजपा गया के द्वारा सरकार से पुनः विचार करने के लिए किसान मोर्चा के सह जिला प्रभारी डॉ मनीष पंकज मिश्रा के कार्यालय में बैठक आहूत की गई बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि नगर निगम गया के द्वारा होल्डिंग टैक्स बढ़ोतरी पर चर्चा करते हुए डॉक्टर मनीष ने कहा कि जो टैक्स का श्रेणी रखा गया हैं वह पुनर्विचार करने की जरूरत हैं कुछ सड़के जो तीसरे श्रेणी में रहना चाहिए था जो सर्वे करने वाले अधिकारी कर्मचारी वर्गीकरण नहीं किया गया जो त्रुटिपूर्ण हैं इस टैक्स बढ़ोतरी एक सुनियोजित साज़िश रच कर टैक्स बढ़ाया गया हैं जो गया जी जनता के साथ अन्याय किया गया हैं।

एस. बी. कॉलेज आरा के भूगोल विभाग में एकदिवसीय सेमिनार का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद। वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय आरा के अंगीभूत इकाई एसङ्क बीङ्क कॉलेज मे भूगोल विभाग तथा कद.अ.उ के संयुक्त प्रयास से एकदिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार का विषय है- रिमोट सेंसिंग(सुदूर संवेदन) विकास एवं प्रक्रिया।

कार्यक्रम का उद्घाटन कॉलेज की प्राचार्य डॉक्टर पूनम कुमारी, मुख्य वक्ता डॉ सदफ, पीङ्क जीङ्क भूगोल विभाग, संयोजीका सह विभागाअध्यक्ष डॉ मनीषा कुमारी तथा सहसंयोजक डॉ सद्दाम हुसैन के द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। मुख्य वक्ता डॉक्टर सदफ, सहायक प्राध्यापिका स्नातकोत्तर भूगोल विभाग आरा ने सुदूर संवेदन के विकास एवं प्रक्रिया पर बेहतरीन वक्तव्य दिया। इससे छात्र एवं छात्राएं बहुत लाभान्वित हुए। संयोजीका डॉ मनीषा कुमारी ने सुदूर संवेदन के विभिन्न आयामों को रेखांकित किया। सह संयोजक डॉ सद्दाम हुसैन ने सुदूर संवेदन के वर्तमान महत्व तथा रिसर्च में इसकी उपयोगिता पर प्रकाश डालें। कार्यक्रम में संचालन आलोक दुबे ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ सद्दाम हुसैन ने किया। इस कार्यक्रम में भूगोल विभाग के शिक्षक डॉ मुन्ना कुमार ज्योति, डॉ महताब इमाम, के अलावा डॉ चुनन कुमारी, डॉ मिराज दानापुरी, डॉ रामनारायण मिश्र, डॉ कुमार शिव शंकर, डॉ आशा रानी, डॉ श्वेता सिंह,डॉ सिमरन, डॉ पूजा कुमारी, डॉ एसङ्क डीङ्क सिंह, डॉ अशोक तिवारी, डॉ राकेश रंजन, डॉ वेंकटेश चौधरी, डॉ राकेश चौधरी शोधार्थी रमजान, रामदास पासवान उपस्थित थे भरत सिंह, सलोनी, राणा, जन्नत आफरीन आदि छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

भारत निर्वाचन आयोग के नियुक्त प्रेक्षक ने निर्वाचन संबंधी तैयारियों को लेकर की बैठक

मोतिहारी ।लोकसभा आम निर्वाचन 24 को स्वतंत्र, निष्पक्ष, सहभागिता पूर्ण एवं भयमुक्त संपन्न कराने को लेकर भारत निर्वाचन आयोग के द्वारा नियुक्त 03-पूर्वी चंपारण लोकसभा क्षेत्र के सामान्य प्रेक्षक के हर्षवर्धन, 04-शिवहर लोकसभा क्षेत्र के सामान्य प्रेक्षक डॉ कैलाश बाबूराव शिंदे, 03-पूर्वी चंपारण एवं 04-शिवहर लोकसभा क्षेत्र के पुलिस प्रेक्षक एल एम हाओकिप तथा 04- शिवहर लोकसभा क्षेत्र के व्यय प्रेक्षक राकेश सी सज्जन के द्वारा जिलाधिकारी पूर्वी चंपारण सौरव जोरवाल एवं पुलिस अधीक्षक पूर्वी चंपारण कांतेश कुमार मिश्रा की उपस्थिति में जिला के सभी 12 विधान सभाओं के सहायक निवार्ची पदाधिकारी तथा जिला स्तर पर गठित किए गए सभी को कोषांगों के नोडल पदाधिकारी के साथ समाहरणालय मोतिहारी स्थित डॉ राजेंद्र प्रसाद सभा भवन में लोकसभा निर्वाचन की तैयारी की जानकारी प्राप्त की गई। इस अवसर पर विकास आयुक्त समीर सौरभ एवं नगर आयुक्त सौरभ सुमन यादव भी उपस्थित थे ।बैठक में सर्वप्रथम जिलाधिकारी पूर्वी चंपारण के द्वारा सभी प्रेक्षकगण का स्वागत किया गया। इसके पश्चात उप विकास आयुक्त के द्वारा जिला प्रशासन पूर्वी चंपारण के द्वारा जिला प्रशासन के द्वारा की गई तैयारी एवं जिला प्रोफाइल को पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से विस्तृत रूप से प्रेक्षक गण को जानकारी दी गई। उप विकास आयुक्त ने बताया कि जिले की आबादी लगभग 60 लाख है जिसमें 36 लाख मतदाता हैं। इस जिला में कुल 12 विधानसभा क्षेत्र हैं जिसमें छः- हरसिद्धि, गोविंदगंज, केसरिया,कल्याणपुर, पिपरा एवं मोतिहारी विधानसभा क्षेत्र पूर्वी चंपारण लोकसभा क्षेत्र में,तीन- मधुबन, चिरैया एवं ढाका विधानसभा क्षेत्र शिवहर लोकसभा क्षेत्र में तथा तीन- रक्सौल,सुगौली एवं नरकटिया विधानसभा क्षेत्र पश्चिम चंपारण लोकसभा क्षेत्र में आते हैं। पूर्वी चंपारण एवं शिवहर लोकसभा की मतगणना मोतिहारी स्थित एमएस कॉलेज में कराई जाएगी। जबकि रक्सौल, सुगौली तथा नरकटिया विधानसभा के पोल्ड ईवीएम बेतिया जाएंगे ।जहां उसकी मतगणना होगी ।उप विकास आयुक्त ने बताया कि जिला में 35 हजार मतदान कर्मियों को प्रथम प्रशिक्षण दे दिया गया है। मतदान कर्मियों का विधानसभा वार रेंडमाइजेशन कर दिया गया है, अब उनको द्वितीय पत्र निर्गत किया जाएगा। जिसके आधार पर उनका द्वितीय प्रशिक्षण 14 मई से 18 मई तक कराया जाएगा। उप विकास आयुक्त ने बताया कि राजनीतिक दलों के जिला अध्यक्षों की उपस्थिति में ईवीएम का रेंडमाइजेशन भी कर दिया गया है। अब ईवीएम को डिस्पैच सेंटर पर भेजा जाएगा जहां उसकी कमिशिनिंग कराई जाएगी। इस दौरान ईवीएम प्रोटोकॉल का पूर्ण अनुपालन सुनिश्चित कराई जाएगी ।उन्होंने कहा कि सभी 12 विधानसभाओं के लिए अलग-अलग 12 डिस्पैच सेंटर बनाए गए हैं जो 07 लोकेशन (जगह) पर स्थित हैं ।उन्होंने बताया कि जिला में मतदान की तिथि 25 मई को निर्धारित है और मतगणना 4 जून को होनी है। स्वच्छ एवं प्रलोभनमुक्त चुनाव कराने के लिए जिला में 39 एफएसटी, 39एसएसटी,भीएसटी वीवीटी की टीम बनाई गई है।

सामान्य प्रेक्षक द्वारा की गई समीक्षा

प्रात : किरण संवाददाता

बेतिया(घनश्याम).बुधवार को समाहरणालय सभागार में लोकसभा आम निर्वाचन 2024 छठे चरण मतदान हेतु नियुक्त पश्चिम चम्पारण एवं वाल्मीकिनगर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र के सामान्य प्रेक्षक महोदय द्वारा सभी कोषांगों के वरीय पदाधिकारियों एवं सभी नोडल पदाधिकारियों सहित सभी ए0आर0ओ0 के साथ समीक्षात्मक बैठक की गई। इस बैठक में दोनों लोकसभा क्षेत्रों से संबंधित सभी कोषांगों एवं सभी ए0आर0ओ0 द्वारा अबतक की गयी निर्वाचन संबंधी तैयारी की विस्तृत जानकारी ली गयी। 1-वाल्मीकिनगर लोकसभा के लिए भारत निर्वाचन आयोग नई दिल्ली द्वारा नियुक्त सामान्य प्रेक्षक जे0 इनोसेन्ट दिव्या एवं एस0 कृष्णा चैतन्य सामान्य प्रेक्षक 2-पश्चिम चम्पारण लोकसभा क्षेत्र द्वारा सर्वप्रथम सभागार में उपस्थित सभी कोषांगों के वरीय पदाधिकारी, नोडल पदाधिकारी एवं सभी ए0आर0ओ0 से परिचय प्राप्त करते हुए अपना भी परिचय दिया गया। इस बैठक का संबोधन दोनों रिटर्निंग पदाधिकारी द्वारा किया गया।

समीक्षा के क्रम में सभी संबंधित पदाधिकारियों से अबतक की गई तैयारियों की गहन समीक्षा की गयी एवं आवश्यक दिशा-निर्देश भी दी गयी। सामान्य प्रेक्षक एवं उपस्थित व्यय प्रेक्षक के द्वारा कहा गया कि हम प्रेक्षक सिर्फ अवलोकन करेंगे परन्तु सफलतापूर्वक निर्वाचन सम्पन्न कराने की जिम्मेवारी आप सभी उपस्थित पदाधिकारियों के कंधों पर है। उन्होंने कहा कि आप सभी पदाधिकारी यदि आवश्यक हुआ तो हम सभी प्रेक्षकों से किसी भी समय मिलकर आ रहे अपने-अपने व्यवधानों के समाधान हेतु सम्पर्क कर सकते हैं। सामान्य प्रेक्षकों द्वारा अपने संबोधन में कहा गया कि अब मात्र लगभग कुछ दिन शेष रह गये हैं।

इसमें सभी निर्वाचन संबंधी शेष कार्य पूरा करना है। सभी पदाधिकारी अपने दायित्वों का निवर्हन पुरी मेहनत के साथ करने में रूचि लें ताकि शांतिपूर्ण, निष्पक्ष, भयमुक्त सौहार्दपूर्ण वातावरण में मतदान एवं मतगणना आदि सभी कार्य सम्पन्न हो जाय। ज्ञात हो कि समाचार पत्रों में सभी प्रेक्षकों के सम्पर्क संख्या, आवासन स्थान आदि के बारे में आम सूचना प्रकाशित भी की गयी है। इस बैठक में जिला निर्वाचन पदाधिकारी, श्री दिनेश कुमार राय, पश्चिम चम्पारण लोकसभा क्षेत्र के रिटर्निंग अधिकारी एवं वाल्मीकिनगर लोकसभा क्षेत्र के रिटर्निंग अधिकारी, श्री राजीव कुमार सिंह सहित उप विकास आयुक्त महोदया सहित पूर्वी चम्पारण जिला के पश्चिम चम्पारण लोकसभा क्षेत्र में पड़ने वाले ए0आर0ओ0 भी उपस्थित थे। इस सभा का समापन जिला निर्वाचन पदाधिकारी द्वारा किया गया। जिला निर्वाचन पदाधिकारी ने आशा व्यक्त की कि उपस्थित सभी पदाधिकारी अपने-अपने निर्वाचन संबंधी दायित्वों का निवर्हन ससमय बखूबी करेंगे एवं लोकसभा आम निर्वाचन 2024 के छठे चरण अंतर्गत पश्चिम चम्पारण एवं वाल्मीकिनगर लोकसभा आम निर्वाचन को सफल बनाने में अपना योगदान सुनिश्चित करेंगे।

मथुराधाम घाट के सौंदर्यीकरण के लिए हुई बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

पानापुर(सारण)गंडक नदी के किनारे कोंध गांव स्थित पर्यटन स्थल के रूप में विख्यात मथुराधाम घाट के सौंदर्यीकरण के लिए बुधवार को श्री मोती बाबा की अध्यक्षता में बुद्धिजीवियों एवं गणमान्य लोगों की बैठक हुई ।इस बैठक में निमार्णाधीन सूर्यमंदिर के सुस्त पड़े कार्य को गति देने ,तालाब के सौंदर्यीकरण के लिए साफ सफाई, तालाब के किनारे स्थित छठ घाट पर बने सुरसोते एवं चबूतरे को समन्वय स्थापित कर पूर्वी छोर पर स्थानांतरित करने एवं पवित्र मथुराधाम घाट की चहारदीवारी निर्माण करने पर विस्तृत चर्चा की गयी ।बैठक में घाट के सौंदर्यीकरण कार्य के लिए एक कमिटी का गठन करने एवं जनसहयोग से इस कार्य को मूर्तरूप देने का निर्णय लिया गया ।बैठक में अवकाशप्राप्त बीइओ शुभनारायन सिंह ,पूर्व जिलापार्षद प्रतिनिधि रणविजय सिंह ,बीडीसी प्रतिनिधि रूपेश साह हलवाई ,पारसनाथ सिंह ,बलिराम तिवारी ,हंसनाथ भगत, वेदप्रकाश तिवारी , सुरेश सिंह ,कमला सिंह ,संजय सिंह ,संतोष सिंह ,विजय सिंह ,गौरीशंकर सिंह ,रामप्रकाश सिंह सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे।

कानूनी मुसीबत में घिरी जॉली एलएलबी 3 फिल्म के खिलाफ दर्ज कराई गई शिकायत?

अभिनेता अक्षय कुमार और अरशद वारसी फिल्म जॉली एलएलबी 3 को लेकर चर्चा में हैं। इस फिल्म की शूटिंग शुरू हो चुकी है, जिसकी जानकारी बीते दिनों खुद अक्षय कुमार ने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए साझा की। अब मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक फिल्म कानूनी पचड़े में फंस गई है। फिल्म के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई गई है। शिकायत में आरोप लगाए गए हैं कि इस फिल्म में वकीलों और जजों का मजाक उड़ाने की कोशिश की जा रही है।

निर्माता-निर्देशकों पर लगाए आरोप

फिल्म जॉली एलएलबी 3 के खिलाफ दर्ज कराई गई शिकायत में दावा किया गया है कि इस फिल्म में न्यायतंत्र का अपमान करने की कोशिश की गई है। यह शिकायत जिला बार एसोसिएशन अध्यक्ष चंद्रभान की ओर से दायर कराई गई है। इस पर मंगलवार को कोर्ट में सुनवाई होगी। अजमेर जिला बार एसोसिएशन ने सिविल न्यायाधीश अजमेर उत्तर की अदालत में जॉली एलएलबी 3 की शूटिंग रोकने की अर्जी लगाई है।

शूटिंग पर रोक लगाने की मांग?

बार एसोसिएशन अध्यक्ष ने फिल्म के निर्माता-निर्देशक और कलाकारों पर वकीलों और जजों का मजाक उड़ाने के लिए शिकायत दर्ज कराई है। शिकायतकर्ता ने कोर्ट से नोटिस जारी करने का अनुरोध भी किया है। साथ ही फिल्म की शूटिंग पर रोक लगाने की मांग भी की है। बता दें कि फिल्म का पहले शेड्यूल अजमेर में शूट हो रहा है। इसलिए लिया शिकायत का फैसला! रिपोर्ट्स के मुताबिक फिल्म के खिलाफ शिकायत का फैसला 'जॉली एलएलबी' के पहले और दूसरे भाग को ध्यान में रखकर लिया गया है। शिकायत में कहा गया है कि ऐसा लगता है कि फिल्म निर्माता, निर्देशक और अभिनेता देश के संविधान की न्यायपालिका की गरिमा और प्रतिष्ठा का बिल्कुल भी सम्मान नहीं करते हैं। 'जॉली एलएलबी 3' की शूटिंग अजमेर के डीआरएम ऑफिस सहित आसपास के क्षेत्रों और ग्रामीण इलाकों में चल रही है।

मनोज बाजपेयी ने द फैमिली मैन सीजन 3 की शूटिंग की शुरू

एक्टर मनोज बाजपेयी ने राज और डीके की जोड़ी के निर्देशन में द फैमिली मैन के तीसरे सीजन की शूटिंग शुरू कर दी है। स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म प्राइम वीडियो ने इंस्टाग्राम पर कलाकारों की एक तस्वीर के साथ क्लैपबोर्ड की एक पिक्चर शेयर की। साथ ही कैप्शन में लिखा, द फैमिली मैन की शूटिंग शुरू हो गई है। सीजन तीन में मनोज मध्यमवर्गीय व्यक्ति श्रीकांत तिवारी के किरदार में हैं, जो एक जासूस है। पहला सीजन, जिसका प्रीमियर 2019 में हुआ, उसमें प्रियामणि, शरद केलकर, नीरज माधव, शारिब हाशमी, दलीप ताहिल, सनी हिंदुजा और श्रेया धनवंतरी शामिल हैं। एक्ट्रेस सामंथा रुथ प्रभु दूसरे सीजन के कलाकारों में शामिल हुईं। इस सीरीज की कहानी सुमन कुमार, राज और डीके द्वारा लिखी गई है।

इस एक फिल्म ने बदल दी थी अल्लू अर्जुन की जिंदगी

साउथ के स्टाइलिश सुपरस्टार अल्लू अर्जुन की फिल्म पुष्पा 2 द रूल जल्द ही रिलीज होने वाली है। इस फिल्म को लेकर अल्लू लगातार सुर्खियों में बने हुए हैं। इस फिल्म से जुड़ी हर एक जानकारी पर दर्शकों की नजर टिकी रहती है। 2003 में फिल्म गंगोत्री से अपने करियर की शुरुआत करने वाले अभिनेता ने एक खास पोस्ट अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर साझा किया है, जिसमें उन्होंने अपने दिल की बात को खुलकर बताया है। 7 मई 2024 को अल्लू अर्जुन की रोमांटिक ड्रामा फिल्म आर्या की रिलीज के पूरे 20 साल पूरे हो गए हैं। इस फिल्म का सुकुमार ने निर्देशन किया था। इस फिल्म के निर्माण की जिम्मेदारी दिल राजू ने उठाई थी। फिल्म आर्या अल्लू के करियर की उन फिल्मों में से एक है जो अभिनेता के दिल के बेहद करीब है। इस फिल्म को लेकर अल्लू ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट साझा किया है। अल्लू ने आज सुबह अपने एक्स अकाउंट पर लिखा, आर्या के पूरे हुए 20 साल, यह सिर्फ एक फिल्म नहीं है... यह मेरी जिंदगी का वो अहम समय जिसने मेरी जिंदगी के मायने ही बदल दिए। हमेशा के लिए धन्यवाद। अल्लू के इस पोस्ट के बाद फैंस लगातार उन्हें कमेंट्स कर रहें हैं।

यंग ग्लोबल लीडर्स की लिस्ट में शामिल होने पर खुश हैं भूमि

बॉलीवुड अभिनेत्री भूमि पेडनेकर अपनी प्रोफेशनल लाइफ के अलावा अपनी निजी जिंदगी को लेकर भी खूब चर्चा में चलती रहती हैं। अभिनेत्री की पिछली फिल्म भक्षक दर्शकों को खूब पसंद आई थी। यह फिल्म फ्लॉप की कतार में अभिनेत्री के लिए संजीवनी साबित हुई थी। अब हाल ही में, भूमि पेडनेकर उन पांच भारतीयों में से बनी हैं, जिन्हें वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम ने अपने यंग ग्लोबल लीडर्स कम्युनिटी- द क्लास ऑफ 2024 का हिस्सा बनने के लिए चुना गया है। भूमि फिलहाल जिनेवा में हैं।

यंग ग्लोबल लीडर बनीं भूमि

इस महीने की शुरुआत में, विश्व आर्थिक मंच ने 40 वर्ष से कम उम्र के लगभग 90 चेंज मेकर्स की अपनी सूची जारी की, जो सार्वजनिक स्वास्थ्य, आर्थिक विकास, प्रौद्योगिकी और स्थिरता के क्षेत्रों में अपने काम से सुनहरे भविष्य के लिए अपना योगदान दे रहे हैं। विश्व आर्थिक मंच ने कहा कि 2024 की सूची राजनीति, व्यवसाय, नागरिक समाज, कला और शिक्षा जगत के उभरते सितारों के एक समूह से बनी है।

युवा वैश्विक नेता होने पर गौर्वान्वित हैं भूमि

अपनी खुशी जाहिर करते हुए भूमि ने कहा, मुझे विश्व आर्थिक मंच पर भारत से एक युवा वैश्विक नेता होने पर गर्व है। यह मुझे अपने जीवन का हर मिनट सामाजिक भलाई के लिए समर्पित करने के लिए प्रेरित करता है। यह मेरे लिए और भी खास है क्योंकि यह अगले साल सिनेमा में मेरे 10वें वर्ष के जश्न में भी शामिल होगा!

दुनिया में लाना चाहती हैं बदलाव

भूमि ने आगे कहा, मैं दुनिया के विभिन्न हिस्सों से बदलाव लाने वालों के साथ बातचीत करके लगातार प्रेरित होती हूं। यह प्रतिष्ठित मंच मुझे ऐसे प्रतिभाशाली दिमागों से जुड़ने और हमारी भावी पीढ़ियों के लिए एक बेहतर दुनिया बनाने के लिए एकजुट होने का अवसर देता है। मैं बदलाव की दिशा में काम करना चाहती हूं। मेरा फोकस स्थिरता पर जोर देना है और मैं अपने लोगों को स्वस्थ रखने के लिए अधिक से अधिक लोगों को एकजुट करना चाहती हूं। मैं सहयोग करने, विचारों का आदान-प्रदान करने और वैश्विक स्तर पर अच्छे प्रभाव डालने के अवसरों की प्रतीक्षा कर रही हूं।

अपकमिंग प्रोजेक्ट कॉल मी बे में नजर आएंगी अनन्या पांडे

बॉलीवुड एक्ट्रेस अनन्या पांडे ने अपने अगले प्रोजेक्ट कॉल मी बे की एक झलक शेयर की। उन्होंने इंस्टाग्राम स्टोरीज पर वैनिटी वैन की एक तस्वीर पोस्ट की, जिस पर बे लिखा हुआ है। एक्ट्रेस ने तस्वीर को शेयर करते हुए कैप्शन में लिखा, देखो कौन वापस आया है... आप लोगों को दिखाने के लिए इंतजार नहीं कर सकती, इसके बाद उन्होंने रेड हार्ट वाला इमोजी भी शेयर किया। सीरीज में अनन्या पांडे एक अरबपति फैशन आइकन बे का रोल अदा कर रही हैं, जिसे एक बड़े घोटाले के बाद उसके परिवार ने खुद से बहुत दूर कर दिया है। पहली बार उसे अपना बचाव करना है। इस यात्रा में, वह रूढ़ियों को, पूर्वधारणाओं को तोड़ती हैं और जानती हैं कि वह असल में कौन है। कॉल मी बे करण जौहर, अपूर्व मेहता और एक्जीक्यूटिव प्रोड्यूसर के रूप में सोमेन मिश्रा द्वारा निर्मित और कॉलिन कुन्हा द्वारा निर्देशित धर्मा एंटरटेनमेंट प्रोडक्शन की सीरीज है। यह सीरीज जल्द ही प्राइम वीडियो पर स्ट्रीम होगी। बता दें कि, अनन्या को पिछली बार अर्जुन वरैन सिंह द्वारा निर्देशित और अर्जुन, जोया अख्तर और रीमा कागती द्वारा लिखित फिल्म खो गए हम कहां में देखा गया था। फिल्म का निर्माण एक्सेल एंटरटेनमेंट और टाइगर बेबी फिल्म्स के बैनर तले रितेश सिधवानी, जोया अख्तर, रीमा कागती और फरहान अख्तर ने किया था। अनन्या के पास कंट्रोल और द अनटोल्ड स्टोरी ऑफ सी शंकरन नायर भी है। जिसमें वह काम कर रही हैं।

शिखर पहाड़िया के साथ तिरुपति में सात फेरे लेंगी जान्हवी कपूर?

जान्हवी कपूर अपनी निजी जिंदगी के बारे में अफवाहों पर ध्यान देने के मूड में नहीं हैं। भले ही शिखर पहाड़िया के साथ उनके रिश्ते ने मीडिया का ध्यान खींचा है, लेकिन अभिनेत्री इसके बारे में ज्यादा बात नहीं करती हैं। इसलिए, जब इंस्टाग्राम पर एक पैपराजी पेज ने साझा किया कि जान्हवी सोने की साड़ी में तिरूपति मंदिर में शिखर के साथ शादी करेंगी, तो अभिनेत्री ने एक छोटी लेकिन प्रफुल्लित करने वाली प्रतिक्रिया के साथ अफवाहों पर विराम लगा दिया। इंस्टाग्राम पर पैपराजी की पोस्ट पर प्रतिक्रिया देते हुए, जान्हवी ने टिप्पणी की, कुछ भी। कई प्रशंसकों ने जान्हवी की टिप्पणी के तहत हंसते हुए चेहरे के इमोटिकॉन के साथ प्रतिक्रिया व्यक्त की। जान्हवी ने अपने रिश्ते के बारे में तब खुलासा किया जब वह पिछले साल कॉफी विद करण के नवीनतम सीजन में दिखाई दीं। शिखर पहाड़िया की बात करें तो वह महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री सुशील कुमार शिंदे के पोते हैं। कथित तौर पर उन्होंने और जान्हवी ने पहले डेट किया और बाद में अज्ञात कारणों से अलग हो गए। यह जोड़ी अब एक साथ वापस आ गई है क्योंकि उन्हें कई बार एक साथ देखा गया है। जान्हवी कपूर और शिखर पहाड़िया ने इस साल की शुरुआत में जनवरी में तिरुपति मंदिर में पूजा की थी। हाल ही में जान्हवी एक कार्यक्रम का हिस्सा बनी थीं। उन्होंने गले में एक चेन भी पहनी थी जिस पर शिखू लिखा हुआ था। यह वह उपनाम है जो उन्होंने कथित बॉयफ्रेंड शिखर पहाड़िया को दिया है। काम के मोर्चे पर, जान्हवी कपूर आखिरी बार वरुण धवन के साथ फिल्म बवाल में नजर आई थीं। वह अगली बार मिस्टर एंड मिसेज माही और उलझन में नजर आएंगी।

कॉमेडी शो में मजाक उड़ाए जाने पर भड़के करण जौहर

कॉमेडियन केतन सिंह ने फिल्ममेकर करण जौहर से माफी मांग ली है। उन्होंने कहा कि उनका इरादा करण की भावनाओं को ठेस पहुंचाने का नहीं था। दरअसल, केतन ने एक नए कॉमेडी शो मेडनेस मचाएंगे के प्रोमो में करण का मजाक उड़ाया था जिसके बाद करण भड़क गए थे और उन्होंने इंस्टाग्राम पर अपना गुस्सा जाहिर किया था।

क्या कहा था करण ने?

करण ने केतन के एक मिमिक्री एक्ट को देखने के बाद सोशल मीडिया पर अपना रिएक्शन देते हुए एक लंबा चौड़ा नोट शेयर किया था। उन्होंने लिखा था, मैं मां के साथ टीवी देख रहा था। उसी दौरान मैंने एक बड़े टीवी चैनल के रियलिटी कॉमेडी शो का प्रोमो देखा। एक कॉमेडियन खराब तरीके से मुझे मिमिक कर रहा था। मैं ये ट्रोल्स से एक्स्पेक्ट करता था जो कि ऐसे लोग होते हैं जिनका न कोई नाम होता है और न ही चेहरा लेकिन जब 25 साल तक टिके रहने के बावजूद आपकी इंडस्ट्री के लोग ही आपका अपमान करें तो ये बहुत बुरी बात है। इस बात से मुझे गुस्सा नहीं आ रहा बल्कि बेहद दुख हो रहा है।

कॉमेडियन ने मांगी माफी

करण जौहर का रिएक्शन सामने आने के बाद कॉमेडियन केतन सिंह ने उनसे माफी मांग ली है। उन्होंने इंटरव्यू में कहा, मैं करण जौहर सर से माफी मांगता हूं। मैं उनके काम का कायल हूं। चाहे कॉफी विद करण हो या उनकी पिछली फिल्म रॉकी और रानी की प्रेम कहानी जो कि मैंने 5-6 बार देखी है। मुझे उनकी फिल्में और शोज बेहद पसंद हैं। अगर उन्हें मेरी किसी भी बात से दुख हुआ है तो मैं उनसे माफी मांगता हूं। मेरा मकसद उनकी भावनाओं को ठेस पहुंचाने का नहीं था। मेरा मकसद सिर्फ ऑडियंस को एंटरटेन करने का था और मैं अगर कुछ एक्स्ट्रा कर गया तो मैं उनसे सॉरी कहता हूं।

हाउसफुल 5 में नजर आएंगे अभिषेक

अभिषेक बच्चन हाउसफुल फ्रेंचाइजी की पांचवी किस्त के कलाकारों में शामिल हो गए हैं। इसमें अक्षय कुमार और रितेश देशमुख लीड रोल में हैं। अभिषेक बच्चन फिल्म के तीसरे पार्ट का हिस्सा थे। उनका कहना है कि फिल्म की फ्रेंचाइजी में वापस आना घर लौटने जैसा लगता है। अभिषेक ने कहा, हाउसफुल मेरी पसंदीदा कॉमेडी फ्रेंचाइजी में से एक है, और इसमें वापस आना घर लौटने जैसा महसूस हो रहा है। साजिद नाडियाडवाला के साथ काम करना हमेशा से खुशी की बात रही है। मैं अपने साथी कलाकारों अक्षय और रितेश के साथ सेट पर जमकर मस्ती करने के लिए तैयार हूं। उन्होंने कहा, मैं अपने प्यारे दोस्त तरुण मनसुखानी के साथ फिर से काम करने के लिए बहुत उत्साहित हूं। मैं दोस्ताना के बाद उनके साथ दोबारा काम करने वाला हूं। यह बहुत मजेदार होने वाला है। निर्माता साजिद ने अभिषेक की वापसी की घोषणा की। अगस्त 2024 से यूके में शूटिंग शुरू होने वाली है। साजिद ने कहा, मैं अभिषेक को हाउसफुल फ्रेंचाइजी में वापस लाकर रोमांचित हूं। उनका समर्पण, कॉमिक टाइमिंग और ईमानदारी ही हमारी फिल्म को ऊपर उठाएगी। हाउसफुल 5 का निर्देशन तरुण मनसुखानी ने किया है। यह फिल्म 6 जून को रिलीज होने वाली है।

करीना के साथ फिर काम नहीं करने पर इम्तियाज अली ने की बात

इम्तियाज अली इन दिनों अपनी फिल्म चमकीला की सफलता का जश्न मना रहे हैं। इम्तियाज के निर्देशन में बनी इस फिल्म में दिलजीत दोसांझ ने अमर सिंह चमकीला और परिणीति चोपड़ा ने चमकीला की पत्नी अमरजोत कौर का किरदार निभाया है। इम्तियाज जब वी मेट जैसी सुपरहिट फिल्म भी दे चुके हैं। करीना कपूर खान और शाहिद कपूर अभिनीत यह फिल्म रोमांस का प्रतीक है और आज भी दर्शकों से जुड़ी हुई है। हम प्रशंसक काफी समय से निर्देशक से सीक्वल के बारे में पूछ रहे हैं। जब वी मेट के सीक्वल के बारे में बात करते हुए इम्तियाज अली ने इसके विचार को खारिज कर दिया, लेकिन यह भी कहा कि वह करीना कपूर खान के साथ फिर से काम करना पसंद करेंगे। यह बताते हुए कि ऐसा अभी तक क्यों नहीं हो सका निर्देशक ने आगे कहा कि जब भी कोई फिल्म निर्माता किसी कलाकार के साथ काम करता है तो उस पर यह जिम्मेदारी होती है कि वह केवल उस कलाकार के के लिए ही कुछ भी न करें। विचार यह है कि पुनर्मिलन केवल तभी किया जाए, जब आपने पहले जो किया है उसकी तुलना में कोई बेहतर या पूरी तरह से अलग प्रोजेक्ट हो। इसके साथ ही उन्होंने जब वी मेट का सीक्वल बनाने को लेकर भी बात की। उन्होंने कहा कि जब वी मेट का सीक्वल क्यों बनाया जाए? यदि लोग फिल्म का आनंद लेते रहना चाहते हैं तो वे पहली फिल्म देखना जारी रख सकते हैं। जब वी मेट 2 बनाने के लिए एक कहानी और एक कारण होना चाहिए, लेकिन देखते हैं क्या ऐसा होता है।

सेंसेक्स
73466.39 पर बंद
निफ्टी
22302.50 पर बंद

सोना
72,154
चांदी
81,548

संक्षिप्त समाचार

बेलस्टार माइक्रोफाइनेंस लिमिटेड ने 1,300 करोड़ तक जुटाने के लिए सेबी के पास डीआरएचपी दाखिल किया

मुंबई , एजेंसी। बेलस्टार माइक्रोफाइनेंस लिमिटेड (कंपनी या बीएमएल) ने बाजार नियामक भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) के पास अपना ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (डीआरएचपी) दाखिल किया है। कंपनी सूक्ष्म उद्यम, लघु उद्यम, उपभोक्ता सामान, त्यौहार, शिक्षा और आपातकालीन ऋण जैसे ऋण उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करती है। कंपनी इक्विटी शेयरों (अंकित मूल्य 10 प्रत्येक) की आरंभिक सार्वजनिक पेशकश के माध्यम से कुल 13,000 मिलियन [1,300 करोड़] तक का फंड जुटाने की योजना बना रही है (टोटल ऑफर साइज़)। कुल प्रस्ताव आकार में शामिल हैं - इक्विटी शेयरों का कुल 10,000 मिलियन [1,000 करोड़] तक का नया निर्गम (नया निर्गम) और इक्विटी शेयरों की बिक्री के लिए कुल 3,000 मिलियन [300 करोड़] तक का प्रस्ताव (बिक्री के लिए प्रस्ताव)। कंपनी नए निर्गम की शुद्ध आय का उपयोग वित्त वर्ष 2025 में 7,600 मिलियन [760 करोड़] के अनुमानित आगे के उधार के लिए भविष्य की पूंजी आवश्यकताओं को पूरा करने और सामान्य कॉर्पोरेट उद्देश्यों के लिए शेष राशि का उपयोग करने का प्रस्ताव करती है (प्रस्ताव के उद्देश्य)। बिक्री के लिए प्रस्ताव में एमएजे इन्वेस्ट फाइनेंशियल इंक्लूजन फंड ढ्ढढ्ढ च/स द्वारा कुल 1,750 मिलियन [175 करोड़] तक के इक्विटी शेयर शामिल हैं; साथ ही, अरुम होल्डिंग्स लिमिटेड द्वारा 970 मिलियन [97 करोड़] तक और ऑगस्टा इन्वेस्टमेंट्स जीरो पीटीई लिमिटेड (निवेशक विक्रय शेयरधारक) द्वारा 280 मिलियन [28 करोड़] तक के इक्विटी शेयर शामिल हैं। (विक्रय शेयरधारक संयुक्त) आईसीआईसीआई सिक्योरिटीज लिमिटेड, एक्सिस कैपिटल लिमिटेड, एचडीएफसी बैंक लिमिटेड और एसबीआई कैपिटल मार्केट्स लिमिटेड आईपीओ इश्यू के बुक रनिंग लीड मैनेजर हैं।

प्रतिष्ठित ब्यूटी पेजेंट में कई क्षेत्रों के कंटेस्टेंट द्वारा नॉन डिस्क्लोजर एग्रीमेंट के उल्लंघन के बाद की गई कानूनी कार्रवाई

मुंबई , एजेंसी। प्रतिष्ठित ब्यूटी पेजेंट ने कई कंटेस्टेंट और पार्टिसिपेंट्स द्वारा नॉन डिस्क्लोजर एग्रीमेंट (एनडीए) के गंभीर उल्लंघन के बाद कानूनी कार्रवाई शुरू की है। इस उल्लंघन में संवेदनशील जानकारी का अनधिकृत खुलासा शामिल था, जो कि गोपनीय शर्तों का उल्लंघन है जिस पर सभी प्रतिभागियों ने सहमति व्यक्त की थी। ब्यूटी पेजेंट ग्लोबल लेवल पर एक जाना-माना इवेंट है, जिसमें विभिन्न क्षेत्र के कंटेस्टेंट हिस्सा लेते हैं। एनडीए का उल्लंघन करने वाले कंटेस्टेंट दिल्ली, यूएसए, छत्तीसगढ़, संयुक्त अरब अमीरात, उत्तर प्रदेश, रांची, बैंगलोर, मध्य प्रदेश, हांगकांग और तमिलनाडु से हैं। सख्त एनडीए के बावजूद, कुछ कंटेस्टेंट ने गोपनीय जानकारी लीक कर दी, जो अब इवेंट की रेप्यूटेशन और इंटीग्रेशन के लिए एक महत्वपूर्ण खतरा बन गया है।पेजेंट आयोजकों ने नियमों के उल्लंघन के जवाब में तत्काल कानूनी कार्रवाई की है, लीक के सोर्स की पहचान करने और इसमें शामिल सभी पक्षों की पहचान करने के लिए जांच शुरू की है। पेजेंट की कॉन्फिडेंशियलटी और इंटीग्रीटी को बनाए रखने के उद्देश्य से, आयोजक भविष्य अनधिकृत खुलासों को रोकने के लिए हर्जाना और निषेधाज्ञा राहत की मांग कर रहे हैं।

महंगा हुआ हेल्थ इंश्योरेंस लेना, एक साल में 25 प्रतिशत तक बढ़ा प्रीमियम

नईदिल्ली, एजेंसी। कोरोना काल के बाद से देश में स्वास्थ्य बीमा को लेकर जागरुकता बढ़ी है लेकिन पिछले एक साल में इसके प्रीमियम का बोझ भी तेजी से बढ़ा है। लोकलसर्किल्स द्वारा किए गए सर्वे में आधे से अधिक पॉलिसीधारकों ने यह माना है कि उनका इंश्योरेंस प्रीमियम पिछले एक साल में 25 फीसदी तक महंगा हुआ है। खास बात ये है कि प्रीमियम इंश्योरेंस सेक्टर के रेगुलेटर इरडा द्वारा बदले गए नियमों से पहले ही प्रीमियम महंगा हो चुका है। ऐसे में अप्रैल में किए गए नियमों में बदलाव के बाद अब ग्राहकों की जेब पर और ज्यादा असर पड़ेगा।

इरडा ने बदले हैं कई नियम

इंश्योरेंस से जुड़े कई नियमों में बदलाव करके इरडा ने नई अप्रैल में गाइडलाइन जारी की थी। इसके अनुसार अब स्वास्थ्य बीमा के वेटिंग पीरियड को अधिकतम 4 साल से कम करके 3 साल कर दिया गया है। इसके साथ ही नियमों में बदलाव करके अब सीनियर सिटीजन को भी राहत दी गई है। 65 वर्ष से अधिक के वरिष्ठ नागरिकों को हेल्थ इंश्योरेंस खरीदने में आसानी होने लगी है। इसके साथ ही नियमों के बदलाव के बाद अब गंभीर बीमारी से ग्रसित लोगों को भी हेल्थ इंश्योरेंस का लाभ मिल सकेगा। इसके साथ ही अब इरडा ने बीमा कंपनियों को ग्राहकों को इंस्टॉलमेंट का विकल्प देने का भी आदेश दिया है। इरडा द्वारा नियमों में बदलाव के बाद से ग्राहकों को बड़ी राहत मिली है लेकिन बीमा कंपनियों ने अब प्रीमियम रेट में बढ़ोतरी का फैसला किया है। एक्सपर्ट्स के मुताबिक इरडा के नियमों के बदलाव के चलते प्रीमियम में 1000 रुपए तक का इजाफा हो सकता है।

लोकलसर्किल्स ने 11,000 ग्राहकों को अपने सर्वे में शामिल किया है। रिपोर्ट के मुताबिक 52 फीसदी पॉलिसीधारकों ने यह माना है कि पिछले एक साल में उनके हेल्थ इंश्योरेंस का प्रीमियम 25 फीसदी तक महंगा हो गया है। इनमें ने 21 फीसदी ऐसे लोग हैं जिन्होंने यह माना कि पिछले एक साल में उनके प्रीमियम में 50 फीसदी से ज्यादा की बढ़ोतरी हुई है। वहीं 31 फीसदी लोगों को मानना है कि उनका प्रीमियम 25 से 50 फीसदी तक महंगा हुआ है। वहीं बचे 31 फीसदी ग्राहकों ने प्रीमियम में 10 से 25 फीसदी के बढ़ोतरी की बात मानी। वहीं 2 फीसदी लोगों का मनना है कि पिछले एक साल में उनका 0 से 10 फीसदी तक महंगा हुआ है।

बढ़ रहे प्रीमियम से ग्राहकों की बढ़ रही चिंता

इस सर्वे में पॉलिसीहोल्डर्स ने साल दर साल महंगे होते हेल्थ इंश्योरेंस प्रीमियम पर अपनी चिंता जाहिर की है। कई पॉलिसीहोल्डर्स ने माना है कि उनके हेल्थ इंश्योरेंस प्रीमियम में पिछले दो सालों में डबल डिजिट में बढ़ोतरी हुई है। इसके साथ ही ग्राहकों ने सर्वे में क्लेम के प्रोसेस में तेजी लाने की बात कही।

भारत में इस्पात मांग में तेजी जारी रहेगी, अगले कुछ वर्षों में 10 प्रतिशत की दर से होगी वृद्धिः इस्पात सचिव

नईदिल्ली, एजेंसी। इस्पात सचिव नागेन्द्र नाथ सिन्हा ने बुधवार को कहा कि सरकार के बुनियादी ढांचे पर ध्यान देने से अगले कुछ वर्षों में घरेलू इस्पात की मांग 10 प्रतिशत की दर से बढ़ने की उम्मीद है। अधिकारी ने राष्ट्रीय राजधानी में 'भविष्य के लिए तैयार तथा हरित विनिर्माण पर सीआईआई सम्मेलन को संबोधित करते हुए यह बात कही। उन्होंने कहा कि सरकार के बुनियादी ढांचे पर ध्यान देने से घरेलू इस्पात की मांग दोहरे अंक में बढ़ेगी।

सिन्हा ने कहा, ''वित्त वर्ष 2023-24 में मांग में सालाना आधार 13-14 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। भविष्य में इसमें 10 प्रतिशत की वृद्धि जारी रहेगी। आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, वित्त वर्ष 2023-24 में कच्चे इस्पात का उत्पादन करीब 14.5 करोड़ टन रहा जो वित्त वर्ष 2022-23 में 12.7 करोड़ टन था। वित्त वर्ष 2023-24 में खपत 13.6 करोड़ टन रही, जबकि 2022-23 में यह 12 करोड़ टन थी।

मिट जाएगा अनिल अंबानी की रिलायंस कैपिटल का नामोनिशान!

नईदिल्ली, एजेंसी। कर्ज में डूबे उद्योगपति अनिल अंबानी की कंपनी रिलायंस कैपिटल के लिए हिंदुजा ग्रुप की कंपनी इंडसइंड इंटरनेशनल होल्डिंग्स लिमिटेड ने सबसे बड़ी बोली लगाई थी। कंपनी के लेंडर्स ने पिछले साल जून में इस रेजॉल्यूशन प्लान को मंजूरी दी थी। फरवरी में एनसीएलटी से भी इसे हरी झंडी मिल गई। इस बीच मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक हिंदुजा ग्रुप ने रिलायंस कैपिटल और उसकी ऑपरेटिंग कंपनियों की रिब्रांडिंग शुरू कर दी है। कंपनी ने अपने 9,661 करोड़ रुपये के रेजॉल्यूशन प्लान को लागू करने के लिए कंपनियों के नामों में बदलाव का प्रस्ताव रखा है। इसके लिए आरबीआई से मंजूरी मांगी गई है। एनसीएलटी ने इस रेजॉल्यूशन प्लान को लागू करने के लिए 27 मई की डेडलाइन तय की है।

मीडिया रिपोर्ट्स में सूत्रों के हवाले से कहा गया है कि रिब्रांडिंग के तहत होल्डिंग कंपनी रिलायंस कैप का नाम इंडसइंड इंश्योरेंस होल्डिंग कंपनी होगा। हिंदुजा ग्रुप का फोकस रिलायंस कैप के इंश्योरेंस बिजनस को खरीदने पर है। रिलायंस निप्पन लाइफ इंश्योरेंस कंपनी का नाम इंडसइंड निप्पन लाइफ इंश्योरेंस कंपनी होगा। इसी तरह रिलायंस जनरल इंश्योरेंस कंपनी का नया नाम इंडसइंड जनरल इंश्योरेंस कंपनी होगा। आरएनएलआइसी एक लाइफ इंश्योरेंस वेंचर है जिसमें जापान की कंपनी निप्पन लाइफ की 49 प्रतिशत हिस्सेदारी है जबकि रिलायंस कैप के पास 51 प्रतिशत हिस्सेदारी है। रिलायंस हेल्थ इंश्योरेंस का नाम इंडसइंड हेल्थ इंश्योरेंस होगा। इस बीच मिंट की एक न्यूज के मुताबिक आईआईएचएल ने रिलायंस कैप के रेजॉल्यूशन प्लान को लागू करने के लिए कॉरपोरेट स्ट्रक्चर में बदलाव का प्रस्ताव रखा है। नई कंपनियों के नाम का प्रस्ताव आरबीआई को भेजा गया है। जानकारों का कहना है कि डील में नई कंपनियों को शामिल करने के लिए नए सिरे से रेगुलेटरी अप्रूवल की जरूरत होगी।

भारतीय परिवारों की सेविंग्स पांच साल के न्यूनतम स्तर पर, कर्ज लेकर काम चला रहे लोग

नईदिल्ली, एजेंसी। गोल्ड, रियल एस्टेट और शेयर बाजार में लोग निवेश बढ़ा रहे है, लेकिन कर्ज लेकर तमाम काम करने से उनकी वित्तीय देनदारियां भी बढ़ रही हैं। इसके चलते विशुद्ध वित्तीय बचत घट रही है। पिछले 3 वर्षों में परिवारों की वित्तीय देनदारी दोगुनी से ज्यादा हो गई। वहीं उनकी नेट फाइनैंशल सेविंग्स लगभग 40 प्रतिशत घट गई और यह 5 वर्षों के सबसे निचले स्तर पर आ गई। स्टैटिस्टिक्स एंड प्रोग्राम इंप्लिमेंटेशन मिनिस्ट्री की ओर से जारी नैशनल अकाउंट स्टैटिस्टिक्स 2024 से यह तस्वीर सामने आई है।

पिछले 3 वर्षों में लगभग डेढ़ गुना हो गया। वित्त वर्ष 2021 में 40 हजार 505 करोड़ के मुकाबले वित्त वर्ष 2023 में यह 63 हजार 397 करोड़ रुपये हो गया। शेयरों और डिबेंचरों में निवेश लगभग दोगुना होकर 2 लाख 6 हजार करोड़ रुपये रहा। वहीं म्यूचुअल फंड्स में निवेश लगभग तीन गुना हो गया। एफवाय21 में 64 हजार 84 करोड़ रुपये के मुकाबले एफवाय23 में यह 1 लाख 79 हजार करोड़ रुपये हो गया। इस दौरान स्मॉल सेविंग्स स्कीम्स घटकर 2 लाख 38 हजार करोड़ रुपये निवेश 2 लाख 48 हजार करोड़ से के करीब आ गया। वित्त वर्ष 2022 में यह 2 लाख 41 हजार करोड़ रुपये था।

2018-19 में वित्तीय देनदारी 7 लाख 71 हजार 245 करोड़ रुपये की थी। अगले वित्त वर्ष में 7 लाख 74 हजार 693 करोड़ रुपये पर पहुंचने के बाद वित्त वर्ष 2020-21 में यह 7 लाख 37 हजार 350 करोड़ रुपये पर आ गई। हालांकि एफवाय22 में यह बढ़कर 8 लाख 99 हजार 271 करोड़ रुपये हो गई। एफवाय23 में आंकड़ा 15 लाख 57 हजार 190 करोड़ रुपये हो गया और वित्तीय अधिक हो गई। एफवाय21 में परिवारों को देनदारी एफवाय21 के मुकाबले दोगुनी से बैंक लोन 6 लाख 5 हजार करोड़ रुपये से लगभग दोगुना होकर एफवाय23 में 11 लाख 88 हजार करोड़ रुपये हो गया। एफवाय22 में यह 7 लाख 69 हजार करोड़ रुपये था।

विशुद्ध बचत

ग्रॉस फाइनैंशल सेविंग्स में से वित्तीय देनदारियां घटाने पर 2022-23 में नेट हाउसहोल्ड सेविंग्स 14 लाख 16 हजार 447 करोड़ रुपये रहीं। 2018-19 के बाद यह सबसे कम है, जब आकड़ा 14 लाख 92 हजार 445 करोड़ रुपये था। एफवाय20 में 15 लाख 49 हजार 870 करोड़ रुपये के बाद 2020-21 में 23 लाख 29 हजार 671 करोड़ पर पहुंच गई। अगले साल घटकर 17 लाख 12 हजार 704 करोड़ रह गई। एफवाय23 में 14 लाख 16 हजार करोड़ पर आ गई। इस तरह 3 साल के भीतर विशुद्ध बचत 9 लाख करोड़ रुपये घट गई।

जापान ने विकास को बढ़ावा देने के लिए एसएमएफजी इंडिया क्रेडिट में किया 1,300 करोड़ का निवेश

मुंबई , एजेंसी। सुमितोमो मित्सुई फाइनेंशियल ग्रुप, इंक. (एसएमएफजी) ने राइट्स इश्यू के द्वारा एसएमएफजी इंडिया क्रेडिट कंपनी लिमिटेड (पूर्व में फुलर्टन इंडिया क्रेडिट कंपनी लिमिटेड) (एसएमआईसीसी) में 1,300 करोड़ रुपये का निवेश किया है। एसएमआईसीसी ने अपनी फुल्ली ओन्ड सब्सिडियरी एसएमएफजी इंडिया होम फाइनेंस कंपनी लिमिटेड (पूर्व में फुलर्टन इंडिया होम फाइनेंस कंपनी लिमिटेड) (एसएमएफजी गृहशक्ति) में 150 करोड़ रुपये का निवेश किया है। इस बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए, एसएमआईसीसी के चीफ फ़ाइनेंशियल ऑफिसर श्री पंकज मलिक ने कहा, हमारा मानना है कि एसएमएफजी द्वारा 1,300 करोड़ रुपये के फंड का निवेश एसएमआईसीसी के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यह रणनीतिक कदम हमारे विस्तार प्रयासों को मजबूत करने की हमारी प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है।

रैडबस ने लोक सभा चुनावों के बीच मई के दौरान एमपी में बुकिंग्स में 35 फीसदी से अधिक की बढ़ोतरी दर्ज की

इंदौर एजेंसी। दुनिया के सबसे बड़े ऑनलाईन बस टिकट बुकिंग प्लेटफॉर्म रैडबस ने अप्रैल और मई के दौरान मध्य प्रदेश में टिकट बुकिंग में दो अंकों की बढ़ोतरी दर्ज की है। मध्य प्रदेश चुनावी पर्व के लिए तैयार है, इस बीच रैडबस ने मई में होने वाले चुनावों के लिए पिछले साल की तुलना में अपने प्लेटफॉर्म पर 35 फीसदी बढ़ोतरी का अनुमान लगाया है। पिछले साल अप्रैल की तुलना में अप्रैल 2024 में इंटरसिटी यात्रा के लिए बस बुकिंग में 37 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। ये आंकड़े रैडबस प्लेटफॉर्म पर हुई बुकिंग्स पर आधारित हैं। मांग में यह बढ़ोतरी इस बात का संकेत है कि बस यात्रा नागरिकों को अपने मतदान के बुनियादी अधिकार के लिए उनके घर तक पहुंचाने और मतदान स्टेशनों को सुलभ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। रैडबस के आंकडों के मुताबिक टॉप रूट्स नीचे दिए गए हैं जिन पर अप्रैल में हुए पहले और दूसरे चरण के मतदान के दौरान मांग सबसे अधिक रही।

संस्थानों का नेतृत्व करें अधिक से अधिक महिलाएं: जगदीप धनखड

बिरला इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट टेक्नोलॉजी (बिमटेक) के 36वें दीक्षांत समारोह का गरिमापूर्ण आयोजन

नई दिल्ली , एजेंसी। भारत के एक प्रमुख बी-स्कूल, बिरला इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट टेक्नोलॉजी (बिमटेक) ने ग्रेटर नोएडा के जेपी ग्रीन्स स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में अपना 36वां वार्षिक दीक्षांत समारोह आयोजित किया। भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ की उपस्थिति से यह ऐतिहासिक समारोह गरिमापूर्ण रहा। उत्साह और उमंग से भरे छात्रों ने पूरी तन्मयता के साथ उपराष्ट्रपति के संबोधन को सुना। इस समारोह में बोर्ड ऑफ गवर्नर्स की प्रतिष्ठित चेयरपर्सन श्रीमती जयश्री मोहता और बिमटेक की डायरेक्टर डॉ. प्रवीणा राजीव भी मौजूद थीं।

छात्रों को प्रेरित करते हुए, उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने कहा कि, बिमटेक के 36वें दीक्षांत समारोह में शामिल होना मेरे लिए बेहद खुशी की बात है। मुझे गर्व है कि हमने विमन रिजर्वेशन बिल पारित किया है, और मैं अधिक से अधिक महिलाओं को संस्थानों का नेतृत्व करते हुए देखना चाहता हूं। बिमटेक की चेयरपर्सन जयश्री मोहता, समाज को वापस लौटाने का एक सच्चा उदाहरण पेश कर रही हैं, इसलिए, मैं आपके फैकल्टी और आपके स्टूडेंटस को संसद के नए भवन में विजिट करने के लिए आमंत्रित करता हूं और हमें वहां भी चर्चा करने का अवसर मिलेगा। उपराष्ट्रपति ने स्नातकों को आगे सलाह दी, ''आप सभी स्नातक, भारत में आर्थिक राष्ट्रवाद और मूल्य संवर्धन को बढ़ावा देना याद रखें। आप सभी आर्थिक, तकनीकी और सामाजिक प्रगति को आगे बढ़ाने वाले भविष्य के लीडर हैं। परिवर्तन को अपनाएं, निरंतरता बनाये रखें और असफलता से कभी न डरें। आप सभी को बधाई एवं शुभकामनाएं।

इस उल्लासपूर्ण कार्यक्रम में 478 छात्रों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए स्नातक की उपाधि प्राप्त की। इस दौरान पीजीडीएम, पीजीडीएम-इंटरनेशनल बिजनेस (आईबी), पीजीडीएम-रिटेल मैनेजमेंट (आरएम) और पीजीडीएम-इंश्योरेंस बिजनेस मैनेजमेंट (आईबीएम) के छात्रों को डिग्री प्रदान की गई।

उद्घाटन भाषण के दौरान, श्रीमती मोहता ने कहा, ''यह दीक्षांत समारोह न केवल छात्रों के लिए, बल्कि पूरे बिमटेक समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के समान है। हमें बैच के आकार में उपलब्धियों और वृद्धि पर बेहद गर्व है। आज हम वर्षों की कड़ी मेहनत और समर्पण का जश्न मनाने के लिए यहां हैं। आज बिमटेक के स्नातक प्रोफेशनलिज्म के मैदान में आगे बढ़ने के लिए तैयार हैं, इस खास अवसर पर मैं उन्हें एक काबिल और समर्थवान लीडर और चेंजमेकर बनने की शुभकामनाएं देती हूं।''

वार्षिक प्रगति रिपोर्ट पेश करते हुए डॉ. प्रवीणा राजीव ने बिमटेक की शानदार विरासत पर प्रकाश डाला और कहा, ''बिमटेक मानकों को कायम रखते हुए हमने हमेशा प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की प्रतिभा को और आगे बढ़ाने पर निरंतर फोकस किया है। इसी सिलसिले में यह दीक्षांत समारोह अकादमिक प्रतिभा और उत्सव का प्रतीक है।''

उन्होंने छात्रों को सुझाव दिया, ''अपने पेशेवर सफर को जुनून के साथ शुरू करें और अपनी विशिष्टता को अपनाएं। मैं अपने सभी स्नातकों को उनके भविष्य के प्रयासों के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देती हूं।'' बिमटेक ने सिंगापुर मैनेजमेंट यूनिवर्सिटी (एसएमयू) के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। 'इन्क्लूविसव एंड इमर्सिव एक्सपीरियंशियल लर्निंग प्रोग्राम' के तहत किए गए इस समझौते के अंतर्गत एक्जीक्यूटिव डेवलपमेंट प्रोग्राम के लिए

एथर एनर्जी के तरुण मेहता ने कहा कि भारत में आर्थिक वृद्धि के लिए आरएंडडी निवेश को प्राथमिकता दी जानी चाहिए

मुंबई , एजेंसी। हाल ही में अपने एक ट्वीट में एथर एनर्जी के सीईओ, तरुण मेहता ने भारत में आर्थिक वृद्धि के लिए रिसर्च एवं डेवलपमेंट (आरएंडडी) में निवेश बढ़ाने की जरूरत पर बल दिया। उन्होंने कहा कि सभी महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उद्यमियों को भारत में एक मिलियन इंजीनियर्स के आरएंडडी का लक्ष्य बनाना चाहिए। साथ ही, उन्होंने चीन की इलेक्ट्रिक वाहन कंपनी, बीवायडी द्वारा आरएंडडी में किए गए बड़े निवेश और इसमें इंजीनियर्स की बढ़ती हुई टीम के बारे में भी बताया।

मेहता ने कहा कि टेक्नोलॉजिकल प्रगति में चीन की सफलता, खासकर इलेक्ट्रिक वाहन जैसे क्षेत्रों में, आरएंडडी में किए गए भारी निवेश के कारण संभव हुई है। उन्होंने बताया कि बीवायडी के पास अब चीन के बाहर संपूर्ण ऑटो उद्योग के मुकाबले ज्यादा बड़ी आरएंडडी टीम है, जिससे उद्योग में प्रतिस्पर्धात्मकता लाने के लिए आरएंडडी की महत्वपूर्ण भूमिका प्रदर्शित होती है। उन्होंने कहा, ''आरएंडडी टीम का आकार एक लाख लोगों तक पहुँच रहा है, जिनमें से 20 से 30 हजार इंजीनियरों की भर्ती पिछले साल ही की गई है! उनका लगभग 10 प्रतिशत राजस्व आरएंडडी पर खर्च किया जाता है, तब भी, जब यह वार्षिक राजस्व में 40 से 50 बिलियन अमेरिकी डॉलर के स्तर पर हो।'' एक्स पर उन्होंने लिखा, ''आज हम जिस जनसांख्यिकीय लाभ की स्थिति में हैं, उसमें तेजी से ऊपर उठने के लिए हमारी नीति को आरएंडडी पर केंद्रित किया जाना जरूरी है। याद रखें, सप्लायर्स वहीं आकर सुविधाएं स्थापित करते हैं, जहाँ ऑटो निर्माता उत्पादन करते हैं। ऑटो निर्माता वहाँ उत्पादन करते हैं, जहाँ उनके नए उत्पाद का विकास (एनपीडी) होता है। और नए उत्पाद का विकास वहाँ होता है, जहाँ पर इंजीनियर होते हैं। इसीलिए आज चीन नए उत्पाद के विकास में सबसे आगे है ताकि यह मैनुफैक्चरिंग के लाभ को बनाकर रख सके।''

उन्होंने कहा कि भारतीय कंपनियाँ आरएंडडी में केवल 3 से 4 प्रतिशत खर्च करके संतुष्ट हो जाती हैं, लेकिन हमें संख्याओं पर काफी ज्यादा ध्यान केंद्रित करने की जरूरत है, नहीं तो 10 से 100 गुना संख्या के लाभ तक कोई नहीं पहुँच सकेगा।

दिल्ली का नॉकआउट शुरू तो सीएसके-हैदराबाद की भी गारंटी नहीं...

मुंबई (एजेंसी)। आईपीएल 2024 के प्लेऑफ के लिए क्वॉलिफाइ करने की दौड़ में ऑफिशली अभी तक सभी 10 टीमें बनी हुई हैं। सबसे आखिरी नंबर पर चल रही गुजरात टाइटंस और मुंबई इंडियंस के लिए भी मौका है। आईपीएल 2024 अब धीरे-धीरे आखिरी चरण की ओर बढ़ रहा है। टीमों के अधिकतम 3-3 मैच बचे हुए हैं तो रोचक बात यह है कि अभी हर टीम के प्लेऑफ में पहुचंने की संभावना बची हुई है। यानी किसी भी एक स्पॉट की टीम ऑफिशली कन्फर्म नहीं हुई है। एक दिन पहले रोमांचक मुकाबले में दिल्ली से राजस्थान हार गई। अगर वह जीतती तो वह क्वॉलिफाइ कर लेती, लेकिन ऐसा हुआ नहीं। अब देखा जाए तो आईपीएल 2024 प्लेऑफ का गेम पूरी तरह से उल्टा-पुल्टा हो चुका है। अब कौन सी टीम कैसे टॉप-4 में पहुंच सकती है।

सभी टीमों का आईपीएल 2024 प्लेऑफ समीकरण

सभी टीमों की पॉइंट्स टेबल में स्थिति

क्रम	टीम	मैच	जीत	हार	टाइ	नेट रन रेट	पॉइंट्स	नेट रन रेट
1	केकेआर	11	8	3	0	0	16	1.453
2	आरआर	11	8	3	0	0	16	0.476
3	सीएसके	11	6	5	0	0	12	0.7
4	एसआरएच	11	6	5	0	0	12	-0.065
5	डीसी	12	6	6	0	0	12	-0.316
6	एसएसजी	11	6	5	0	0	12	-0.371
7	आरसीबी	11	4	7	0	0	8	-0.049
8	पीबीकेएस	11	4	7	0	0	8	-0.187
9	एमआई	12	4	8	0	0	8	-0.212
10	जीटी	11	4	7	0	0	8	-1.32

कोलकाता नाइटराइडर्स और राजस्थान रॉयल्स के पास टॉप पर रहने का मौका

केकेआर फिलहाल अंक तालिका में शीर्ष पर है, जबकि राजस्थान रॉयल्स उसके बराबर 16 अंक लेकर नेट रन रेट के आधार पर दूसरे नंबर पर है। अगर वे बचे हुए 3 में से एक में भी जीत दर्ज करते हैं तो प्लेऑफ में अपनी जगह पक्की कर लेंगे। यही वो दो टीम हैं, जिनके पास 18 अंक या उससे अधिक अंक लेने का मौका है। जबकि 3 अन्य टीमें अधिकतम 18 अंक तक पहुंच सकती हैं।

चेन्नई सुपर किंग्स, सनराइजर्स हैदराबाद और लखनऊ सुपरजायंट्स की एक जैसी स्थिति

चेन्नई सुपर किंग्स, सनराइजर्स हैदराबाद और लखनऊ सुपर जायंट्स टीम 11-11 मैचों में 6-6 जीत के साथ 12 अंक लेकर क्रमश- तीसरे, चौथे और छठे नंबर पर है। इन तीनों के पास बचे हुए 3 मैचों में अधिकतम 18 अंक तक पहुंचने का मौका है। हालांकि, यह देखना रोचक होगा कि प्लेऑफ से लगभग बाहर हो चुकी गुजरात टाइटंस, रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु और शानदार फॉर्म में चल रही राजस्थान रॉयल्स से चेन्नई कैसे निपटती है, जबकि हैदराबाद को लखनऊ, गुजरात और पंजाब से भिड़ना है। दूसरी ओर, लखनऊ को हैदराबाद, दिल्ली और मुंबई से भिड़ना है।

दिल्ली कैपिटल्स के लिए नॉकआउट हो चुका है शुरू

दिल्ली कैपिटल्स फिलहाल अंक तालिका में छठे स्थान पर है। यदि वे अपने शेष तीनों मैच जीत जाते हैं तो वे अधिकतम 16 अंक तक पहुंच सकते हैं। हालांकि, इससे भी उन्हें प्लेऑफ में जगह की गारंटी नहीं मिलेगी। सीएसके, एसआरएच और एलएसजी भी आसानी से 16 अंक तक पहुंचते दिख रहे हैं। ऐसे में इन टीमों के बीच नेट रन रेट का खेल होगा, उसमें जो बेहतर होगा उसी की किस्मत खुलेगी। अगर दिल्ली मैच हारता है तो उसका प्लेऑफ में पहुंचना लगभग खत्म हो जाएगा या फिर आरसीबी की तरह अन्य टीमों के संभावित परिणामों पर निर्भर रहना होगा।

रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु, पंजाब किंग्स और गुजरात टाइटंस बुरी फंसी हुई हैं

आरसीबी, पीबीकेएस और जीटी बहुत बुरी तरह से फंसी हुई हैं। शेड्यूल को देखते हुए आरसीबी और पीबीकेएस में से केवल एक टीम 14 अंक तक पहुंच सकती है, क्योंकि वे एक मैच में एक-दूसरे का सामना करेंगे। सभी तीन टीमें अपने शेष तीन मैचों में कम से कम दो जीत के साथ 12 अंक तक पहुंच सकती हैं। ऐसे में उनका खेल तो खत्म ही समझिए। हालांकि, अगर सीएसके मैच जीटी को हरा देती है तो एमआई के साथ-साथ सभी तीन टीमें बाहर हो जाएंगी, क्योंकि एसआरएच/एलएसजी और सीएसके में से कोई एक 14 अंक तक पहुंच जाएगा।

मुंबई इंडियंस के पास प्लेऑफ का मौका, लेकिन उम्मीदें असंभव

मुंबई इंडियंस फिलहाल अंक तालिका में नौवें स्थान पर है। दो मैच बचे हैं और प्लेऑफ के लिए क्वॉलिफाइ करने के लिए उन्हें बेहतर नेट रन रेट के हिसाब से दोनों मैच जीतने होंगे। हालांकि, यदि ष्ट्रस्य मैच 59 में त्वज्ञ को हरा देती है तो मुंबई बाहर हो जाएगी, क्योंकि एसआरएच/एलएसजी और सीएसके में से कोई भी 14 अंक तक पहुंच जाएगा। इसके अलावा उन्हें स्त्र्रा के कम से कम दो गेम जीतने, एलएसजी के सभी गेम हारने, डीजी से एक से अधिक गेम नहीं जीतने और पीबीकेएस, आरसीबी और त्वज्ञ से दो से अधिक मैच नहीं जीतने की अपेक्षा होगी। यह गणितीय रूप से आसान नहीं दिख सकता है, लेकिन असंभव जैसा है।

यह वो खिलाड़ी, जिन्होंने टी-20 विश्व कप 2 अलग-अलग देशों के लिए खेला

यूएस (एजेंसी)। टी-20 वर्ल्ड कप 2024 के लिए पाकिस्तान जैसी बड़ी टीमों को छोड़ दिया जाए तो लगभग हर देश ने अपने-अपने 15-15 प्लेयर्स की लिस्ट जारी कर दी है। किसी भी बदलाव के लिए आखिरी तारीख 25 कई है, जबकि जून में टूर्नामेंट होना है। एक ऐसा खिलाड़ी भी मेगा इवेंट में नई टीम के साथ दिखाई देगा, जो पहले किसी अन्य टीम से खेल चुका है।

आईसीसी मेंस टी20 विश्व कप 2024 शुरू होने में कुछ ही दिन बचे हैं। कैरिबियन और यूएसए की मेजबानी में आयोजित होने वाले इस महासंग्राम के लिए अमेरिका ने अपने प्लेयर्स की लिस्ट दे दी है। उसने एक ऐसे खिलाड़ी को टीम में शामिल किया है, जो पहले किसी और देश से विश्व कप खेल चुका है। जी हां, हम बात कर रहे हैं विस्फोटक बल्लेबाज कोरी एंडरसन की। बता दें कि इस बार टी-20 विश्व कप में ग्रुप स्टेज में 20 टीमें हिस्सा लेने वाली हैं, जो इतिहास में किसी आईसीसी टूर्नामेंट के मुख्य ड्रॉ में सबसे अधिक है। ग्रुप स्टेज के बाद 'सुपर 8' स्टेज होगा और फिर विजेता का निर्धारण करने के लिए नॉकआउट होगा। यूएस ने पहली बार आईसीसी टूर्नामेंट में भाग लेने जा रही है।

डर्क नैन्स (नीदरलैंड और ऑस्ट्रेलिया) - बाएं हाथ के इस तेज गेंदबाज को इंग्लैंड और वेल्स में 2009 के विश्व टी20 के लिए ऑस्ट्रेलिया ने नजरअंदाज कर दिया था। इसके बाद उन्हें नीदरलैंड्स ने अपनी टीम से खिलाया, जबकि 2010 में अगले संस्करण में उन्होंने ऑस्ट्रेलिया का प्रतिनिधित्व किया।

रोलोफ वैन डेर मेरवे (दक्षिण अफ्रीका और नीदरलैंड्स) - 2015 में अपनी टीम बदलने से पहले वैन डेर मेरवे ने 2009 और 2010 के विश्व टी20 टूर्नामेंट में दक्षिण अफ्रीका का प्रतिनिधित्व किया था। उसके बाद से उन्होंने 2016, 2021 और 2022 के संस्करणों में नीदरलैंड्स का प्रतिनिधित्व किया है।

डेविड विसे (दक्षिण अफ्रीका और नामीबिया) - विसे ने पहली बार 2016 में दक्षिण अफ्रीका के साथ टी20 विश्व कप में डेब्यू किया था। 38 वर्षीय इस खिलाड़ी ने 2021 में नामीबिया के लिए पदार्पण किया और 2021 और 2022 टी20 विश्व कप में देश का प्रतिनिधित्व किया।

मार्क चैपमैन (हॉन्गकॉन्ग और न्यूजीलैंड) - चैपमैन ने 2014 में हॉन्गकॉन्ग के खिलाड़ी के रूप में अपना अंतरराष्ट्रीय पदार्पण किया और इसके बाद उन्हें 2014 विश्व टी20 के लिए हॉन्गकॉन्ग की टीम में शामिल किया गया, जो किसी प्रमुख आईसीसी टूर्नामेंट में हॉन्गकॉन्ग की पहली उपस्थिति भी थी। हालांकि, 2018 से, वह ब्लैककैप्स का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, जो 2021 और 2022 संस्करणों में शामिल हैं। वह 2024 टी20 विश्व कप में भी खेलेंगे।

कोरी एंडरसन (न्यूजीलैंड और यूएसए) - इस सूची में न्यूजीलैंड का प्रतिनिधित्व करने वाले एक और खिलाड़ी एंडरसन ने 2014 और 2016 के संस्करणों में कीवी के लिए खेला। इस साल की शुरुआत में उन्होंने यूएसए क्रिकेट टीम के लिए डेब्यू किया और उन्हें उस टीम में शामिल किया गया है जो 2024 में घरेलू टी20 विश्व कप में भाग लेगी।

सैमसन पर मैच फीस का 30 प्रतिशत जुर्माना

आईपीएल की आचार संहिता का उल्लंघन किया
दिल्ली के खिलाफ अंपायर के फैसले पर जताई थी असहमति

नईदिल्ली (एजेंसी)। राजस्थान रॉयल्स के कप्तान संजू सैमसन पर मैच फीस का 30 प्रतिशत जुर्माना लगाया गया है। सैमसन पर यह फाइन मंगलवार को अरुण जेटली स्टेडियम में दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ मुकाबले में आईपीएल की आचार संहिता का उल्लंघन करने के लिए लगाया गया है। सैमसन को आचार संहिता के आर्टिकल 2.8 के तहत लेवल 1 के अपराध का दोषी पाया गया, जो अंपायर के फैसले पर असहमति दिखाने से संबंधित है। उन्होंने अपराध स्वीकार कर लिया और मैच रेफरी की सजा स्वीकार कर ली।

होप के विवादित कैच से आउट हुए सैमसन

राजस्थान के कप्तान संजू सैमसन शाई होप के बाउंड्री पर बेहतरीन कैच लेने के बाद आउट हुए। 16वें ओवर की चौथी बॉल मुकेश कुमार ने गुड लेंथ पर फेंकी, सैमसन ने लॉन्ग ऑन की दिशा में शॉट खेला। यहां होप ने कैच पकड़ा लेकिन इस दौरान पैर बाउंड्री के बेहद करीब नजर आया। थर्ड अंपायर ने रिप्ले देखा लेकिन कैच को क्लीन माना और सैमसन आउट करार दिए गए। कैच क्लीन करार दिए जाने के बाद सैमसन अंपायर से बहस करते नजर आए कि फील्डर का पैर बाउंड्री को छू रहा था। हालांकि अंपायर ने अपना फैसला कायम रखा और सैमसन को पवेलियन लौटना पड़ा। उन्होंने 46 बॉल पर 86 रन बनाए।

दिल्ली ने राजस्थान को 28 रन से हराया

दिल्ली ने होमग्राउंड पर टॉस हारकर पहले बैटिंग करते हुए 20 ओवर में 7 विकेट पर 221 रन बनाए। जवाब में राजस्थान 20 ओवर में 8 विकेट पर 201 रन ही बना सकी। खलील अहमद, मुकेश कुमार और कुलदीप यादव ने दो-दो विकेट लिए। आरआर से संजू सैमसन ने 46 बॉल पर 86 रन की पारी खेली। रियान पराग ने 27 और शिवम दुबे ने 25 रन बनाए। डीसी से ओपनर जैक फ्रेजर-मैगर्क (50 रन) और अभिषेक पोरेल (65 रन) ने अर्धशतक जमाए। ट्रिस्टन स्टब्स ने 41 रन बनाए। राजस्थान से रविचंद्रन अश्विन ने 3 विकेट चटकाए। युजवेंद्र चहल, संदीप शर्मा और ट्रेंट बोल्ट को एक-एक विकेट मिला।

पंजाबी बोलते नजर आए विराट कोहली, युवा क्रिकेटरों के साथ मजाक करते वीडियो वायरल

बेंगलूर (एजेंसी)। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के स्टार बल्लेबाज विराट कोहली दुनिया भर के युवाओं के लिए एक आदर्श रहे हैं। विभिन्न आयु समूहों में फैले वैश्विक फैन बेस के साथ कोहली को क्रिकेट जगत से प्रशंसा मिली है। इंडियन प्रीमियर लीग के मौजूदा संस्करण में कोहली सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वालों में से एक रहे हैं और वर्तमान में 11 मैचों में 542 रन के साथ सीजन में सबसे अधिक रन बनाने वाले खिलाड़ी हैं। आईपीएल 2024 में पंजाब किंग्स के खिलाफ आरसीबी के महत्वपूर्ण मुकाबले से पहले धर्मशाला में कोहली ने प्रशिक्षण सत्र के दौरान पसीना बहाया जिसके बाद साथी युवा क्रिकेटरों के साथ उनकी बातचीत का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। कोहली को युवा खिलाड़ियों के साथ अचानक सत्र में शामिल होते हुए ऑटोग्राफ देते देखा जा सकता है। कोहली इस पूरे साल रॉयल चैलेंजर्स के लिए प्रमुख खिलाड़ी रहे हैं, हालांकि टीम ने अपने अभियान की निराशाजनक शुरुआत की और आधे रास्ते तक पूरे सीजन में केवल एक जीत हासिल की। आरसीबी ने तब से मजबूत वापसी की है और वर्तमान में तीन मैचों की जीत की लय में है। टीम 11 मैचों में चार जीत के साथ आरसीबी 8 अंकों के साथ अंक तालिका में सातवें स्थान पर है।

इस वर्ष उनके शानदार प्रदर्शन के बाद कोहली को टी20 विश्व कप के लिए भारत की 15 सदस्यीय टीम में भी नामित किया गया था। हालांकि भारत की एकादश में उनकी बल्लेबाजी की स्थिति पर सस्पेंस बना हुआ है। जबकि कई लोगों का मानना ????है कि कोहली को मार्की टूर्नामेंट में रोहित शर्मा के साथ ओपनिंग करनी चाहिए। दोनों ने प्रारूप में केवल एक बार ओपनिंग की है। वहीं कुछ लोग चाहते हैं कि भारत का यह महान खिलाड़ी क्रम में अपना तीसरा स्थान बरकरार रखे। आरसीबी की प्लेऑफ की आकांक्षाओं अभी भी जीवित हैं।

टी-20 इंटरनेशनल मैच में मचा तूफान, 6 बल्लेबाज 0 पर आउट

टोक्यो (एजेंसी)। टी20 इंटरनेशनल मुकाबले में उस समय तूफान मचता नजर आया, जब एक टीम ने छक्कों और चौकों की बरसात करते हुए रनों का अंबार खड़ा कर दिया। वहीं दूसरी टीम ने ताश के पत्तों की तरह अपने विकेट गंवा दिए। टीम के 6 बल्लेबाज बिना खाते खोले ही पवेलियन लौट गए। टीम का टॉप स्कोरर बल्लेबाजों ने मात्र चार रन ही बनाए। टी20 इंटरनेशनल मैच में यह स्कोरबोर्ड देखकर आपका सिर घूम जाएगा।

205 रन से हारी मंगोलिया टीम - दरअसल, यह गजब मुकाबला मंगोलिया और जापान के बीच हुए टी20 इंटरनेशनल मैच में देखने को मिला। मैच में पहले

बल्लेबाजी करते हुए जापान की टीम ने 20 ओवर में 7 विकेट के नुकसान पर 217 रन बना दिए। टीम के टॉप रन स्कोरर ने 69 रन की पारी खेली। जवाब में मंगोलिया की पूरी टीम मात्र 12 रन ही सिमट गई। पूरी टीम के बल्लेबाज मात्र 8.2 ओवर में ही ढेर हो गए। जापान ने 68 गेंदें रहते 205 रन से यह मैच अपने नाम कर लिया। एक गेंदबाज ने इस मैच में 5 विकेट भी चटकाए।

मात्र 12 रनों पर ही सिमट गई पूरी टीम - बता दें कि मंगोलिया की टीम जापान के दौरे पर है, जहां दोनों के बीच 7 टी20 मैचों की सीरीज खेली जा रही है। दूसरे मैच में मंगोलिया टीम के छह बल्लेबाज बिना खाता खोले ही पवेलियन लौट गए। बाकी 4 बल्लेबाज- 2, 1, 4 और 2 रन बनाकर आउट हुए जबकि 11वें नंबर का बल्लेबाज बिना खाता खोले नाबाद रहा। मंगोलिया की पूरी टीम इस मैच में मात्र 12 रनों पर ही सिमट गई, जोकि अभी तक के टी20 इंटरनेशनल इतिहास में किसी भी टीम द्वारा बनाया गया दूसरा सबसे छोटा स्कोर है।

दूसरा सबसे कम टी20 स्कोर - बताते चलें कि इससे पहले साल 2023 में आइल ऑफ मैन टीम स्पेन के खिलाफ मात्र 10 रन पर ही ढेर हो गई थी। स्कोर का पीछा करते हुए स्पेन ने 2 गेंदों में यह मैच जीत लिया था। अब दूसरा सबसे छोटा टी20 इंटरनेशनल स्कोर मंगोलिया के नाम दर्ज हो गया है। वहीं, तीसरे स्थान पर टर्की की टीम है, जिसने टी20 इंटरनेशनल इतिहास का तीसरा कम स्कोर बनाया है। 2019 में यह टीम क्रेच रिपब्लिक के खिलाफ मात्र 21 रन ही बना पाई थी।

टी20 विश्व कप

पापुआ न्यू गिनी ने किया 15 सदस्यीय टीम का ऐलान, इस 36 वर्षीय को मिली कप्तानी

पापुआ न्यू गिनी (एजेंसी)। पापुआ न्यू गिनी ने टी20 विश्व कप 2024 के लिए 15 सदस्यीय

टीम की घोषणा की जिसकी कमान 36 साल के अनुभवी असद वाला को सौंपी गई है। उन्होंने 2021 टी20 विश्व कप में भी यह भूमिका निभाई थी। असद नौ अन्य खिलाड़ियों और जैक गार्डनर के साथ 2021 में ओमान और यूएई में हुए टूर्नामेंट की टीम का भी हिस्सा थे।

ऑल राउंडर सीजे अमिनी को उप कप्तान बनाया गया है जबकि 20 साल के स्पिनर जॉन केरिको टीम के सबसे युवा खिलाड़ी हैं। पापुआ न्यू गिनी ने पूर्वी एशिया-प्रशांत क्वालीफार जीतकर दूसरी बार टी20 विश्व कप में जगह बनाई है। टीम अपने अभियान की शुरुआत दो जून को गयाना में वेस्टइंडीज के खिलाफ ग्रुप सी मुकाबले के साथ करेगी।

पापुआ न्यू गिनी की टीम इस प्रकार है - असद वाला (कप्तान), सीजे अमिनी, एली नाओ, चाड सोपर, हिला वेरे, हिरी हिरी, जैक गार्डनर, जॉन कारिको, काबुआ वागी मोरिया, किपलिंग डोरिगा, लेगा सियाका, नॉर्मन वनुआ, सेमा कामिया, सेसे बाउ और टोनी उरा।

दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ हार पर बोले संगकारा

सैमसन के आउट होने के बावजूद हमें मैच जीतना चाहिए था

नई दिल्ली (एजेंसी)। राजस्थान रॉयल्स के मुख्य कोच कुमार संगकारा का कहना है कि कप्तान संजू सैमसन के आउट होने के बाद टीम मुश्किल स्थिति में थी लेकिन उसे फिर भी यहां दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ आईपीएल मैच जीतना चाहिए था। दिल्ली के 222 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए सैमसन 46 गेंद में 86 रन बनाकर पवेलियन लौटे। उनके आउट होने के बाद रॉयल्स को 27 गेंद पर 60 रन की दरकार थी लेकिन टीम मंगलवार रात 20 रन से हार गई। रॉयल्स की टीम अगर जीत दर्ज करती तो प्ले ऑफ में उसकी जगह सुनिश्चित हो जाती जबकि दिल्ली की टीम नॉकआउट की दौड़ से बाहर हो जाती।

संगकारा ने कहा, 'उसके आउट होने के बावजूद हमें शायद यह मैच जीतना चाहिए था। उन्होंने कहा, 'हार मिलती हैं। सत्र की शुरुआत में हमने शानदार प्रदर्शन किया था। हमने इस मैच में शानदार गेंदबाजी की, विशेषकर अश्विन ने, लेकिन एक बार जब आप बहुत सारी सहज गलतियां करते हैं तो यह बहुत कठिन हो जाता है। आखिर यह योजनाओं को लागू करने से जुड़ा है।

सैमसन के विवादित आउट पर बोले संगकारा - जब सैमसन आउट होकर पवेलियन लौटे वह खुश नहीं थे क्योंकि संदेह था कि शायद कैच पकड़ने वाले शाई होप का पैर सीमा रेखा से छुआ हो। निर्णय टीवी अंपायर के पास भेजा गया जिन्होंने सैमसन को आउट करार दिया लेकिन रॉयल्स के कप्तान ने वापस जाने से पहले मैदानी अंपायर से बहस करने का फैसला किया। संगकारा ने कहा कि कभी-कभी तीसरे अंपायर के लिए भी फैसला लेना मुश्किल होता है।

संगकारा ने कहा, 'यह रीप्ले और कोण पर निर्भर करता है और कभी-कभी आपको लगता है कि पैर छू गया है। लेकिन तीसरे अंपायर के लिए इस पर फैसला करना मुश्किल था।

संक्षिप्त समाचार

गर्मियों में खाएं सेहतमंद स्नैक्स और त्वचा को बनाएं स्वस्थः डॉ गीतिका मित्तल

नईदिल्ली, एजेंसी। गर्मियों का असर अक्सर त्वचा के स्वास्थ्य पर पड़ता है ऐसे में इस मौसम में त्वचा की विशेष देखभाल करना ज़रूरी है। त्वचा विशेषज्ञ होने के नाते मैं यही सलाह दूंगी कि त्वचा की बाहरी देखभाल के साथ-साथ इसका भीतर से भी ख्याल रखना चाहिए। इसके लिए संतुलित आहार का सेवन करें, अगर आप भीतर से स्वस्थ होंगे तो बाहर से भी खूबसूरत महसूस करेंगे। यहां हम ऐसे कुछ सुझाव लेकर आए हैं, जिन्हें अपनाकर आप बदलते मौसम में भी त्वचा की अच्छी देखभाल कर सकते हैं। बादाम पोषण से भरपूर मेवा है। इनमें तकरीबन 15 पोषक तत्व जैसे मैग्नीशियम, प्रोटीन, राइबोफ्लेविन, ज़िंक आदि होते हैं। बादाम में सेहतमंद वसा और विटामिन ई (एल्फा-टोकोफेरोल) होते हैं, जो एंटी-एजिंग के गुणों से भरपूर और त्वचा के स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद हैं। सबसे अच्छी बात यह है कि आप इन्हें कई तरीकों से अपने आहार में शामिल कर सकते हैं। बादाम को रोस्ट करके खाएं, अपनी स्मूदी या ओटमील में मिलाएं, सलाद के साथ खाएं और ऐसे कई ढेरों तरीकें हैं, जिनके द्वारा आप बादाम को अपने रोज़मर्रा के आहार में शामिल कर सकते हैं। स्प्राउट्स स्नैक्स का सेहतमंद विकल्प है। शाम के स्नैक्स हों या ऑफिस ब्रेक, स्पाउट्स विटामिन और मिनरल्स से भरपूर होते हैं। गूगल सर्च में भी आपको स्प्राउट्स के ढेरों विकल्प मिलेंगे। सलाद से लेकर रैप तक, आप कई तरह के आहार में स्प्राउट्स को शामिल कर सकते हैं और अपने व्यंजनों को स्वादिष्ट एवं सेहतमंद बना सकते हैं। अपने आहार में संतरा, अंगूर और स्ट्रॉबैरी शामिल करें। इन्हें और मज़ेदार बनाने के लिए बादाम से गार्निश करें। विटामिन ई और सी एक साथ मिलकर त्वचा को रसायनों एवं यूवी के कारण होने वाली जलन इत्यादि से सुरक्षित रखते हैं।

माता-पिता को उचित टीकाकरण कार्यक्रम का पालन करके अपने बच्चों की सुरक्षा करनी चाहिए

इंदौर, एजेंसी। इस बार विश्व टीकाकरण सप्ताह के साथ विश्व स्वास्थ्य संगठन के टीकाकरण पर विस्तारित कार्यक्रम की 50वीं वर्षगांठ भी मनाई गई। यह मील का पत्थर वैश्विक टीकाकरण के प्रयासों की विरासत और पिछले पांच दशक में टीकाकरण के माध्यम से बचाए गए अनगिनत जीवन और संरक्षित समुदायों की याद दिलाता है। भारत में सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम के माध्यम से 90प्रतिशत से अधिक बच्चों तक टीकाकरण का विस्तार करने में सफलता मिली है। हालांकि उम्र के पहले वर्ष में कवरेज अधिक है लेकिन पहले जन्मदिन के बाद से ड्रॉप-आउट दरें बढ़ जाती हैं। इसका नतीजा यह है कि देश में बड़ी संख्या में बच्चों का आंशिक टीकाकरण ही हो पाता है। डॉक्टर श्रीलेखा जोशीज क्लीनिक, इंदौर की कंसल्टेंट पीडियाट्रिशियन डॉ. श्रीलेखा जोशी ने कहा ज्यादातर अभिभावक टीके की सुरक्षात्मक ताकत को समझते हैं, इसलिए समय पर टीकाकरण के महत्व पर जोर देने की जरूरत है। लगातार सीख और स्वास्थ्य पेशेवरों के साथ मिलकर हम स्वस्थ भविष्य की राह बना सकते हैं। इस विश्व टीकाकरण सप्ताह के अवसर पर मैं लोगों को प्रोत्साहित करता हूं कि डॉक्टरों से विमर्श करें और सही जानकारी के साथ निर्णय लें। 1-2 वर्ष की आयु के बच्चों को कई बीमारियों से बचाने में टीकाकरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। टीकाकरण से वर्ष 2000 से 2019 के बीच निम्न एवं मध्यम आय वाले देशों में बचपन में हो जाने वाली 3.7 करोड़ असमय मौतों को रोकने में सफलता मिली। इंडियन एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक्स इस आयु वर्ग के बच्चों के लिए सात टीकाकरणों की सिफारिश करता है। इनमें वैरिसेला एवं हेपेटाइटिस ए की पहली व दूसरी खुराक, मेनिनजाइटिस एवं एमएमआर की दूसरी खुराक, पीसीवी एवं डीटीपी हिब आईपीवी की बूस्टर खुराक और फ्लू की वार्षिक खुराक शामिल हैं। बच्चे की प्रतिरक्षा प्रणाली पूरी तरह विकसित नहीं हुई होती है इसीलिए कई संक्रमणों से लड़ने में असमर्थ होती है। गंभीर संक्रमणों और उनकी जटिलताओं से बचाता है। टीकाकरण से अस्पताल में भर्ती होने का दबाव कम हो गया है। टीका लगवा चुके बच्चे समय पर अपने शारीरिक और संज्ञानात्मक लक्ष्य हासिल करने में सक्षम होते हैं टीकाकरण सामुदायिक प्रतिरक्षा विकसित करने में भी मदद करता है।

राधिका खेड़ा के भाजपा प्रवेश पर बोले भूपेश बघेल, आखिर कितने में हुई डील?

रायपुर एजेंसी। लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण के मतदान के बीच कांग्रेस पार्टी की राट्रीय प्रवक्ता राधिका खेड़ा ने आज भाजपा का दमन थाम लिया है। राधिका खेड़ा के भाजपा में जाने के बाद अब छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने जमकर निशाना साधते हुए खेड़ा से कई सवाल किया है। बघेल ने सवाल करते हुए कहा कि आखिर डील हुई है तो कितने की डील हुई है ये राधिका खेड़ा बताएं। बतादें कि छत्तीसगढ़ के पूर्व सीएम भूपेश बघेल ने आज पाटन पहुंचकर परिवार के साथ वोट डाला है।

इस बीच बघेल ने पत्रकारों से चर्चा करते हुए राधिका खेड़ा के बीजेपी जॉइन करने पर सवाल खड़ा किया है। बघेल ने कहा कि अब यह बात राधिका खेड़ा ही बता सकती है कि आखिर डील तो हुई है और कितने की डील हुई है। इसके साथ ही बघेल ने मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के कांग्रेस नेताओं को विलुप्त प्रजाति के बताने वाले बयान पर पलटवार करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री मतदाताओं को श्रद्धांजलि दे रहे हैं, लगता है कि बीजेपी के

नेताओं का मानसिक स्थिति ठीक नहीं है। बीते दिनों छत्तीसगढ़ में हुए राधिका खेड़ा के विवाद के बाद खेड़ा ने पार्टी को अपना इस्तीफा देते हुए कांग्रेस के कई दिग्गज नेताओं पर गंभीर आरोप लगाया था। राधिका खेड़ा ने प्रेस वार्ता में आरोप लगाते हुए कहा था कि आखिर प्रियंका गांधी भूपेश बघेल का इतना पक्ष क्यों लेती है। राधिका ने आरोप लगाया था कि भूपेश बघेल आखिर प्रियंका गांधी को ऐसा क्या दे रहे हैं कि वह हमेशा उनके साथ आ जाती है। राधिका खेड़ा ने सीएम पद के दौरान हुए विवाद पर बघेल का साथ देने का आरोप प्रियंका गांधी पर लगाया था। इसके साथ ही बघेल और सचिन पायलट पर सुशील आनंद शुक्ला का समर्थन करने की बात भी कही थी। कांग्रेस पार्टी की राष्ट्रीय प्रवक्ता राधिका खेड़ा को छत्तीसगढ़ के मीडिया विभाग की जिम्मेदारी देकर भेजा गया था। बीते दिनों प्रदेश कार्यालय राजीव भवन में कांग्रेस नेत्री राधिका खेड़ा और संचार विभाग के प्रदेश अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला के साथ विवाद हुआ था। जिसे लेकर एक वीडियो भी सोशल मीडिया में वायरल हो रहा था। जिसमें राधिका रोते हुए फोन पर अपने साथ हुए दुर्व्यहार के बारे में बोलती नजर आ रही थी। वहीं इस मामले में राधिका ने सोशल मीडिया एक्स पर पोस्ट करते हुए भी बहुत सी बाते लिखी थी। जिसमें राधिका ने लड़की हूं लड़ रही हूं जैसी बात करते हुए। पूर्व सीएम और संचार विभाग के अध्यक्ष पर सीधा हमला बोला था। वहीं इस मामलें में प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष दीपक बैज को जांच कर रिपोर्ट दिल्ली भेजने की बात कही गई थी। जिसके बाद बीते शनिवार को कांग्रेस भवन में दोनों पक्षो को बुलाकर सभी का बयान लिया गया और रिपोर्ट हाईकमान को भेज दी गई थी। इस पूरे विवाद के बाद कांग्रेस हाईकमान के फैसले का इंतजार ही हो रहा था कि राधिका खेड़ा ने इस बीच रविवार को इस्तीफा कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे को भेज दिया। राधिका खेड़ा ने इस्तीफा भेजते हुए छत्तीसगढ़ की घटना के साथ-साथ कांग्रेस पार्टी पर कई आरोप भी लगाए।

राधिका ने लिखा कि जब से मैं राम मंदिर रामलला के दर्शन करके लौट कर आई हूं मेरे सांथ पार्टी के द्वारा गलत व्यवहार किया जा रहा है। राधिका ने कहा कि मैं एक लड़की हूं कांग्रस पार्टी महिला के साथ हुए दुर्व्यहार पर चुप्पी बनाई हुई है। इसके बाद बीते सोमवार को राधिका खेड़ा ने प्रेस वार्ता कर कांग्रेस पार्टी के नेता प्रियंका गांधी, सचिन पायलेट, छत्तीसगढ़ के पूर्व सीएम बघेल समेत महिला कांग्रेस की राष्ट्रीय अध्यक्ष पर कई गंभीर आरोप लगाए हैं। राधिका खेड़ा ने इस बीच छत्तीसगढ़ के प्रदेश अध्यक्ष दीपक बैज पर शराब ऑफर करने की बात भी कही है। राधिका ने कहा कि मैं लड़की हूं और अपने न्याय के लिए लड़ती रहूंगी।

16 गांवों के 8700 किसानों को अगले महीने मिलेगी गुडन्यूज, यीडा की सूची तैयार; बड़ी मांग होगी पूरी

नई दिल्ली, एजेंसी। यमुना विकास प्राधिकरण (यीडा) में परियोजनाओं को गति देने की तैयारी पूरी हो गई है। जमीन अधिग्रहण से प्रभावित किसानों को सात प्रतिशत आबादी के भूखंड के आवंटन को लेकर सूची तैयार कर ली गई है। 30 जून तक सभी 16 गांवों के करीब आठ हजार 700 किसानों को भूखंडों का आवंटन कर दिया जाएगा। यमुना सिटी में किसानों के विरोध के चलते अटकी परियोजनाओं को गति मिलेगी। यमुना प्राधिकरण के अधिकारी ने बताया कि पूर्व में हुए प्रकाशन में आईं आपत्तियों का निस्तारण कर पात्र किसानों की अंतिम सूची का प्रकाशन किया जा चुका है। नियोजन और परियोजना विभाग को ले-आउट के अनुसार विकास कार्य कराने के निर्देश दिए गए हैं। दरअसल, जमीन अधिग्रहण से प्रभावित किसानों को यमुना प्राधिकरण में सात फीसदी विकसित भूखंड देने का प्रावधान है। जमीन अधिग्रहण के कई साल बाद भी इसका लाभ पाने से वंचित रह गए किसान पिछले काफी समय से आबादी भूखंड दिए जाने की मांग कर रहे हैं।

राजस्थान पुलिस अफसरों को रात गुजारने के लिए चाहिए लड़की, ऑडियो हुआ वायरल

जयपुर, एजेंसी। राजस्थान के धौलपुर जिले में हैरान कर देने वाला मामला सामने आया है। यहां एक कांस्टेबल ने ग्रामीण से ऐसी डिमांड कर दी जिसे सुनकर हर कोई हैरान है। राजस्थान पुलिस के कांस्टेबल ने गांव के एक युवक से अपने अफसरों की मसाज और रात गुजारने के लिए लड़की की डिमांड की। कांस्टेबल की इस डिमांड से ग्रामीणों में रोष व्याप्त है। कांस्टेबल का ऑडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने और ग्रामीणों की शिकायत के बाद एसपी ने आरोपी कांस्टेबल को सस्पेंड कर दिया है। दरअसल, धौलपुर पुलिस लाइन में तैनात कॉन्स्टेबल रामनरेश जाटव ने अपने ही गांव के एक युवक से मसाज के लिए लड़की की डिमांड की। आरोप है कि इसके लिए उसने ग्रामीण को एक हजार रुपए भी देने का लालच दिया। बताया जा रहा है कि उसने यहां तक कहा कि अधिकारियों को लड़की सप्लाई करनी है। इस घटना से गुस्साए ग्रामीणों ने पंचायत बुलाई।

लंदन से भऊ गैंग ने दिल्ली के तिलक नगर में कराई ताबड़तोड़ फायरिंग? तिहाड़ जेल से कनेक्शन

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली के तिलक नगर स्थित कार शोरूम पर सोमवार रात को हुई ताबड़तोड़ फायरिंग मामले में कई चौंकाने वाले तथ्य सामने आए हैं। प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि आरोपियों को वारदात के लिए लंदन से भऊ गैंग के निर्देश मिले थे और तिहाड़ में बंद नवीन बाली गिरोह ने इन्हें हथियार मुहैया कराए थे। इसके बाद घटना को अंजाम दिया गया।

घटना इतनी भयावह थी कि फायरिंग के दौरान शीशा टूटने से सात लोग जख्मी हो गए थे। इसमें घायल विकास त्यागी का इलाज अभी भी चल रहा है। बाकी छह को प्राथमिक उपचार के बाद घर भेज दिया गया। आरोपियों को पकड़ने के लिए स्थानीय थाना पुलिस के अलावा जिला पुलिस की ऑपरेशन सेल, स्पेशल स्टाफ के साथ ही अपराध शाखा व स्पेशल सेल की टीम कोशिश कर रही है। सीसीटीवी में कैद इस घटना में दो आरोपी गोली चलाते हुए दिखाई दे रहे हैं। पुलिस जांच

में सामने आया है कि आरोपियों ने शोरूम के नजदीक अपनी बाइक खड़ी कर दी थी। इसके बाद वे बात करते हुए शोरूम के अंदर गए और चंद सेकेंड बाद ही दोनों ने फायरिंग शुरू कर दी। इससे पहले कि लोग कुछ समझ पाते आरोपी फायरिंग करते हुए शोरूम से बाहर की और दौड़ने लगे। इस दौरान आरोपियों ने करीब 20 राउंड फायरिंग की। इससे शोरूम और उसके पास स्थित बैंक के शीशे टूट कर फैल गए।

घायल विकास त्यागी ने बताया कि उनके चेहरे पर गंभीर चोटे आई हैं। वह बेटे के लिए गाड़ी देखने शो रूम में पहुंचे थे। घटना के समय उनके साथ पत्नी व बेटा भी था। एक मिनट 11 सेकेंड की फुटेज में दिखाई दे रहा है कि दोनों आरोपी पहले शोरूम के बाहर खड़े एक गार्ड से कुछ पूछते हैं। इसके बाद दोनों शोरूम के अंदर चले जाते हैं। कुछ ही सेकेंड में दोनों गोली चलाते हुए बाहर निकलते दिखाई दे रहे हैं। पुलिस जांच में सामने आया है कि दोनों शूटर भाऊ गैंग के हैं। इस गैंग का सरगना लंदन से ही गिरोह चला रहा है और भारत में उसे तिहाड़ में बंद नीरज बाली के गिरोह का समर्थन है। ऐसे में अब जांच तिहाड़ जेल तक पहुंच गई है। सूत्रों ने बताया कि पुलिस इस मामले में बाली से पूछताछ कर सकती है।

पूर्व पति को गुडबाय कहा, फिर 3 साल के बेटे के सिर पर मार दी गोली

टेक्सास एजेंसी। अमेरिका के टेक्सास में महिला और उसके तीन साल के बेटे की मौत की घटना का खुलासा हुआ है। पुलिस अधिकारियों ने खुलासा किया कि 32 साल की महिला ने पहले अपने तीन साल के बेटे को गोली मारी फिर आत्महत्या कर दी। महिला और उसके बेटे की मौत की गुत्थी उसी के 21 सेकंड के वीडियो ने खोला। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि महिला कुछ दिनों से मानसिक तनाव से गुजर रही थी और अपने पूर्व पति से उसका मन-मुटाव चल रहा था। मरने से पहले उसने अपने बेटे से उसके पिता को अलविदा कहलवाया। फिर मैसेज भेजते हुए कहा कि अपने बेटे को अलविदा कहो। द न्यूयॉर्क पोस्ट में छपि खबर के मुताबिक, महिला का नाम सवाना क्रिगर था। उसने पहले अपने तीन साल के बेटे की गोली मारकर हत्या की फिर पिस्टल से अपनी कनपटी उड़ा दी। यह दुखद घटना 19 मार्च को सैन एंटोनियो के एक पार्क में घटी थी। क्रिगर और उनके बेटे कैडेन को सिर पर गोली लगने के घाव के साथ मृत पाया गया था। पुलिस अधिकारी कई हफ्तों से हत्या-आत्महत्या से जुड़े परिस्थितियों की जांच कर रहे थे। हालांकि महिला के अपने पूर्व पति को भेजे गए आखिरी संदेश ने इसका खुलासा कर दिया है। पुलिस की बताई कहानी के अनुसार, अपनी मौत से पहले क्रिगर परेशान करने वाले व्यवहार कर रही थी। उसने अपने पूर्व पति को धमकी भरे वीडियो और टेक्स्ट भेजे।

रिपोर्ट के अनुसार, क्रिगर ने 18 मार्च की दोपहर नौकरी से इस्तीफा दिया और सीधे अपने पूर्व पति के घर चली गई। हालांकि इस दौरान वह अपने काम पर गया था। अपने पूर्व पति के आवास पर तोड़फोड़ करने के बाद क्रिगर अपने घर लौट आई। जांचकर्ताओं को घर की तलाशी के दौरान क्रिगर की शादी की पोशाक और बिस्तर पर रखी तस्वीरें मिलीं। क्रिगर ने मरने से पहले कहा, अब मेरे पास घर में रहने के लिए कुछ नहीं है।

प्रेमिका से सीक्रेट मुलाकात करने रूस पहुंचा शादीशुदा अमेरिकी सैनिक, चोरी के इल्जाम में गिरफ्तार

मास्को एजेंसी। यूक्रेन में जब से रूसी सेना ने हमला किया है, तब से अमेरिका समेत कई पश्चिमी देशों की व्लादिमीर पुतिन से शत्रुता बढ़ गई है। अमेरिका ने रूस पर कई प्रतिबंध लगाए हैं। अमेरिका और रूस के बीच लगातार बढ़ रही तल्खी के बीच एक अमेरिकी सैनिक रूस में गिरफ्तार हुआ है। अमेरिकी अधिकारियों का कहना है कि वह अपनी प्रेमिका से मिलने गुपचुप रूस पहुंचा था और पकड़ा गया। उस पर चोरी का इल्जाम लगा है। वह पहले से शादीशुदा बताया जा रहा है।

अमेरिकी अधिकारियों के अनुसार, रूस के बंदरगाह शहर व्लादिवोस्तोक में अपनी प्रेमिका से मिलने गए अमेरिकी सैनिक गॉर्डन ब्लैक को चोरी करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया और वह अभी भी रूसी सेना के हिरासत में है। अमेरिकी अधिकारियों आगे बताया कि 34 वर्षीय ब्लैक दक्षिण कोरिया में तैनात थे और टेक्सास के फोर्ट कैवाज़ोस में अपने घर लौटने वाले थे। इसके बजाय, ब्लैक अपनी प्रेमिका से मिलने के लिए रूस चले गए। ब्लैक की गिरफ़्तारी ने रूस के साथ अमेरिकी संबंधों के बीच तनाव बढ़ा दिया है।

सेना की प्रवक्ता सिंथिया स्मिथ ने पुष्टि की कि रूस में पकड़े गए सैनिक पर न सिर्फ चोरी, प्रेमिका से दुर्व्यवहार के भी आरोप लगे हैं। उन्होंने कहा कि रूस ने अमेरिका को सैनिक की गिरफ्तारी जानकारी दे दी है और यह बात उसके परिवारवालों को भी बता दी गई है। बताया जा रहा है कि सैनिक पहले से शादीशुदा है।

स्मिथ ने कहा, अमेरिकी विदेश विभाग रूस में सैनिक से लगातार संपर्क में है और उसकी हर संभव मदद कर रहा है।

अधिकारियों के अनुसार, ब्लैक जिस रूसी महिला से

मिलने पहुंचा था, वह दक्षिण कोरिया में रहती थी और पिछली बार वह और ब्लैक किसी प्रकार के घरेलू विवाद में पड़ गए थे। इसके बाद उन्होंने दक्षिण कोरिया छोड़ दिया। यह स्पष्ट नहीं है कि क्या महिला को दक्षिण कोरिया छोड़ने के लिए मजबूर किया गया था या इस मामले में कोरियाई अधिकारियों की क्या भूमिका थी? हम इस मामले में जांच कर रहे हैं।

चीन ने राष्ट्रपति पद के उद्घाटन से पहले ताइवान के खिलाफ प्रभाव अभियान किया शुरू

बीजिंग एजेंसी।
चीन ने 20 मई को द्वीप पर नवनिर्वाचित राष्ट्रपति लाई चिंग-ते के उद्घाटन से पहले ताइवान के खिलाफ प्रभाव अभियानों की एक श्रृंखला शुरू की है। वॉयस ऑफ अमेरिका (वीओए) की रिपोर्ट के अनुसार, बीजिंग ने यात्रा और आयात प्रतिबंधों में आंशिक रूप से ढील देते हुए पूरे ताइवान में सैन्य गतिविधियों के पैमाने और आवृत्ति को बढ़ा दिया है। विश्लेषकों के अनुसार, बीजिंग यह परीक्षण करने की कोशिश कर रहा है कि आने वाली ताइवानी सरकार बीजिंग के बढ़ते दबाव का जवाब कैसे देगी । ताइवान में सूचो विश्वविद्यालय के एक राजनीतिक वैज्ञानिक चेन फैंग-यू ने कहा, अल्पावधि में, बीजिंग यह देखने की कोशिश कर रहा है कि लाई के तहत नई ताइवानी सरकार उसके दबाव अभियान का जवाब कैसे दे सकती है।

उन्होंने कहा, उसी समय, चीनी सरकार ताइवान जलडमरूमध्य में यथास्थिति को बदलने का प्रयास कर रही है, जब ताइपे उद्घाटन पर ध्यान केंद्रित कर

रहा है। ताइवान के रक्षा मंत्रालय ने 2 मई से 3 मई के बीच द्वीप के पास 26 चीनी सैन्य विमानों और पांच चीनी नौसैनिक जहाजों का पता लगाया, जिनमें 17 चीनी सैन्य विमान ताइवान जलडमरूमध्य की मध्य रेखा को पार कर रहे थे। रिपोर्ट के अनुसार इसके अलावा, कुछ चीनी विमान ताइवान के उत्तरी बंदरगाह शहर कीलुंग से लगभग 76 किलोमीटर की दूरी पर पहुंच गए, जहां एक महत्वपूर्ण नौसैनिक अड्डा स्थित है । इस बीच, ताइवान के राष्ट्रीय सुरक्षा ब्यूरो के महानिदेशक, त्साई मिंग-येन ने 1 मई को ताइवानी सांसदों को बताया कि चीनी सेना ने द्वीप के पास अपनी संयुक्त युद्ध तत्परता गश्ती में नई रणनीति को शामिल किया है, जिसमें अभ्यासों के दौरान जहाज़ और बारूदी सुरंग हटाने वाले जहाज़ व रात के समय लड़ाकू गश्त करना और लैंडिंग का उपयोग करना शामिल है। इसके अतिरिक्त, उन्होंने कहा कि ताइवान के अधिकारी ताइवान के बाहरी द्वीप किनमेन के पास चीनी तट रक्षक द्वारा की गई बढ़ी हुई गश्त पर नज़र रख रहे हैं। इससे पहले 29 अप्रैल को, बीजिंग ने कहा था कि फुज़ियान तट रक्षक ने अप्रैल से किनमेन के पास पानी में गश्त की आवृत्ति बढ़ाने के लिए जहाजों के एक बेड़े का आयोजन किया था। वीओए के अनुसार, बीजिंग ने पिछले महीने के अंत में ताइवानी पोमेलो और दो प्रकार के समुद्री भोजन पर आयात प्रतिबंध हटाते हुए अपने दक्षिणी प्रांत फुज़ियान के निवासियों को ताइवान के दूरस्थ द्वीप मात्सु की यात्रा करने की अनुमति देने की योजना की भी घोषणा की। यह बात ताइवान की मुख्य विपक्षी पार्टी, कुओमितांग, जो ताइपे और बीजिंग के बीच घनिष्ठ संबंधों की वकालत करती है, के सांसदों के एक समूह के चीन दौरे के बाद आई है।इस बीच, कुछ विशेषज्ञों के अनुसार, बीजिंग द्वारा हाल के हफ्तों में उठाए गए सभी उपाय ताइपे के खिलाफ उसके प्रभाव अभियान का हिस्सा हैं, जिसमें ताइवान पर दबाव डालने के लिए दुष्प्रचार अभियान, आर्थिक जबरदस्ती और ग्रे जोन ऑपरेशन का उपयोग करना शामिल है। चीन के समग्र प्रभाव अभियान के हिस्से के रूप में देखा जाना चाहिए। सु ने कहा कि बीजिंग के दीर्घकालिक लक्ष्य का हिस्सा ताइवान जलडमरूमध्य पर अपना नियंत्रण बढ़ाना है। उन्होंने कहा, किनमेन के पास प्रतिबंधित जल क्षेत्र में चीनी तट रक्षक जहाजों को तैनात करने की आवृत्ति बढ़ाकर और चीनी सैन्य विमानों को ताइवान के मुख्य द्वीप के करीब उड़ाकर, बीजिंग अंततः ताइवान जलडमरूमध्य को अपने क्षेत्रीय जल में बदलने की उम्मीद कर रहा है। वीओए की रिपोर्ट। चूंकि चीनी सेना आमतौर पर जून और नवंबर के बीच सैन्य अभ्यास पर ध्यान केंद्रित करती है।

दक्षिण चीन सागर में तैनाती के लिए भारतीय नौसेना के तीन पोत पहुंचे सिंगापुर

सिंगापुर एजेंसी। दक्षिण चीन सागर में भारतीय नौसेना के पूर्वी बेड़े की परिचालन संबंधी तैनाती के तौर पर तीन भारतीय पोत सिंगापुर पहुंच गए हैं जो दोनों नौसेनाओं के बीच मजबूत रिश्तों को रेखांकित करता है। भारतीय नौसेना के एक प्रवक्ता ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स पर कहा कि रियर एडमिरल राजेश धनखड़ के नेतृत्व में भारतीय नौसेना के जहाज दिल्ली, शक्ति और किल्टन सोमवार को सिंगापुर पहुंचे । दक्षिण चीन सागर में चीन द्वारा अपनी सैन्य आक्रामकता दिखाने के बीच भारतीय नौसेना ने कहा कि इन तीनों पोतों का सिंगापुर पहुंचना दक्षिण चीन सागर में भारतीय नौसेना के पूर्वी बेड़े की परिचालन संबंधी तैनाती का हिस्सा है। फिलहाल, दक्षिण चीन सागर में चीन की नौसेना का अमेरिका समर्थित फिलीपिन की नौसेना के साथ गतिरोध चल रहा है। फिलीपिन ने दक्षिण चीन सागर में 'सकेंड थोमस शोअल पर दावा किया है जिसका चीन ने कड़ा विरोध किया है। चीन दक्षिण चीन सागर के अधिकतर हिस्से पर दावा करता है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक देवन प्रसाद द्वारा आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-24, सेक्टर-8, नोएडा, उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं - बी-126, मायापुरी इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित। सह संपादकः रंजीत राय फोन नं-011-45795464 (नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा दिल्ली उच्च न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. DELHIN/2010/32488, Email: news@pratahkiran.com, मो. 9212228045, 8130691216, 9971557129